By Dr. K.B. Pandey

व्याकरण बोध

संज्ञा (Noun)

परिभाषा : संज्ञा को 'नाम' भी कहा जाता है। किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का 'नाम' ही उसकी संज्ञा कही जाती है। दूसरे शब्दों में किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से ही उसे पहचाना जाता हैं संज्ञा न हो तो पहचान अधूरी है और भाषा का प्रयोग भी बिना संज्ञा के सम्भव नहीं है।

- **संज्ञा के प्रकार :** संज्ञा तीन प्रकार की होती है–
  (1) व्यक्तिवाचक संज्ञा, (2) जातिवाचक संज्ञा
  (3) भाववाचक संज्ञा
- **(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा** (Proper Noun) : जो किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है। जैसे– राम, गंगा, पटना आदि।
- **(2) जातिवाचक संज्ञा** (Common Noun) : जो संज्ञा किसी जाति (समूह) का बोध कराती है, वे जातिवाचक संज्ञा कही जाती है। जैसे– नदी, पर्वत, लड़की आदि।

'नदी' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी नदियों का बोध कराती है किन्तु गंगा एक विशेष नदी का नाम है इसलिए गंगा व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे– सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, ऊन आदि।

(ii) समूहवाचक संज्ञा : जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति का वाचक न होकर समूह/समुदाय के वाचक है। जैसे– वर्ग, टीम, सभा, समिति, आयोग, परिवार, पुलिस, सेना आदि।

- **(3) भाववाचक संज्ञा** (Abstract Noun) : किसी भाव, गुण, दशा आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। जैसे– क्रोध, मिठास, यौवन, कालिमा आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा शब्दों से, सर्वनाम से, विशेषण से तथा अव्यय से किया जा सकता है। जैसे–

जातिवाचक संज्ञा	से	भाववाचक संज्ञा
पुरुष		पुरुषत्व
नारी		नारीत्व
गुरु		गुरुत्व
सर्वनाम	**से**	**भाववाचक संज्ञा**
अपना		अपनत्व
मम		ममत्व
निज		निजत्व
विशेषण	**से**	**भाववाचक संज्ञा**
सुन्दर		सुन्दरता, सौन्दर्य
वीर		वीरता, वीरत्व
धीर		धीरता, धैर्य
ललित		लालित्य
अव्यय	**से**	**भाववाचक संज्ञा**
दूर		दूरी
निकट		निकटता
नीचे		नीचाई
रुकना		रुकावट
थकान		थकावट

- **संज्ञा का पद–परिचय** (Parsing of Noun) : वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पद परिचय देते समय संज्ञा, उसका भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका संबंध बताना चाहिए। जैसे– राम ने रावण को वाण से मारा।

1. राम– संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'मारा' क्रिया का कर्ता।
2. रावण– संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।
3. वाण– संज्ञा, जातिवाचक, पुलिंग, एकवचन, करण कारक 'मारा' क्रिया का साधन।

पद परिचय में वाक्य के प्रत्येक पद को अलग–अलग करके उसका व्याकरणिक स्वरूप बताते हुए अन्य पदों से उसका संबंध बताना पड़ता है। इसे **अन्वय** भी कहते हैं।

- संज्ञा का रूप परिवर्तन लिंग, वचन, कारक के अनुरूप होता है, अतः इन पर भी विचार करना आवश्यक है।

I. लिंग (Gender)

- 'लिंग' का शाब्दिक अर्थ है– चिह्न। शब्द के जिस रूप से यह जाना जाय कि वर्णित वस्तु या व्यक्ति पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे **लिंग** कहते हैं। लिंग के द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की जाति का बोध होता है।
- हिन्दी में दो लिंग हैं– स्त्रीलिंग और पुलिंग।
- **हिन्दी में लिग निर्धारण :** इसके लिए निम्न आधार ग्रहण किए जाते हैं– (1) रूप के आधार पर (2) प्रयोग के आधार पर (3) अर्थ के आधार पर
- **(1) रूप के आधार पर :** रूप के आधार पर लिंग निर्णय का तात्पर्य है– शब्द की व्याकरणिक बनावट। शब्द की रचना में किन प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा शब्दान्त में कौन–सा स्वर है– इसे आधार बनाकर शब्द के लिंग का निर्धारण किया जाता है। जैसे–

(i) पुलिंग शब्द :

1. अकारान्त, आकारान्त शब्द प्रायः पुलिंग होते हैं। जैसे– राम, सूर्य, क्रोध, समुद्र, चीता, घोड़ा, कपड़ा, घड़ा, गधा आदि।
2. वे भाववाचक संज्ञाएं जिनके अन्त में त्व, व, य होता है, वे प्रायः पुलिंग होती हैं। जैसे– गुरुत्व, गौरव, शौर्य आदि।
3. जिन शब्दों के अन्त में पा, पन, आव, आवा, खाना जुड़े होते हैं, वे भी प्रायः पुलिंग होते हैं। जैसे– बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, घुमाव, भुलावा, पागलखाना।

(ii) स्त्रीलिंग शब्द :

1. आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे– लता, रमा, ममता।
2. इकारानत शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं– रीति, तिथि, हानि (किन्तु इसके अपवाद भी हैं– कवि, कपि, रवि पुलिंग हैं)
3. ईकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे– नदी, रोटी, टोपी, (किन्तु अपवाद भी हैं। जैसे– हाथी, दही, पानी पुलिंग हैं)
4. आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा प्रत्यय वाले शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे– लिखाई, डिबिया, मिलावट, घबराहट, सुन्दरता, महिमा।

स्त्रीलिंग प्रत्यय : पुलिंग शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों को शब्द में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

1. ई – बड़ा–बड़ी, छोटा–छोटी, भला–भली
2. इनी – योगी–योगिनी, कमल–कमलिनी
3. इन – धोबी–धोबिन, तेली–तेलिन
4. नी – मोर–मोरनी, चोर–चोरनी
5. आनी – जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी
6. आइन – ठाकुर–ठकुराइन, पंडित–पंडिताइन
7. इया – बेटा–बिटिया, लोटा–लुटिया

- **(2) प्रयोग के आधार पर :** प्रयोग के आधार पर लिंग निर्णय के लिए संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त विशेषण, कारक चिह्न एवं क्रिया को आधार बनाया जा सकता है। जैसे–
  1. अच्छा लड़का, अच्छी लड़की। लड़का पुलिंग, लड़की स्त्रीलिंग
  2. राम की पुस्तक, राम का चाकू।
     पुस्तक स्त्रीलिंग है, चाकू पुलिंग है।
  3. राम ने रोटी खाई। रोटी स्त्रीलिंग, क्रिया स्त्रीलिंग।
     राम ने आम खाया। आम पुलिंग, क्रिया पुलिंग।
- **(3) अर्थ के आधार पर :** कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हुए भी लिंग की दृष्टि से भिन्न होते हैं। उनका उचित एवं सम्यक प्रयोग करना चाहिए। जैसे–

पुलिंग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री
विद्वान	विदुषी
नेता	नेत्री
महान	महती
साधु	साध्वी
लेखक	लेखिका

उपर्युक्त शब्दों का सही प्रयोग करने पर ही शुद्ध वाक्य बनता है। जैसे–

1. आपकी **महान** कृपा होगी–अशुद्ध वाक्य
   आपकी **महती** कृपा होगी–शुद्ध वाक्य
2. वह एक **विद्वान** लेखिका है–अशुद्ध वाक्य
   वह एक **विदुषी** लेखिका है–शुद्ध वाक्य

वाक्य रचना में लिंग संबंधी अनेक अशुद्धियाँ होती हैं। सजग एवं सचेत रहकर ही इन अशुद्धियों का निराकरण हो सकता है।

II. वचन (Number)

- **परिभाषा :** वचन का अभिप्राय संख्या से है। विकारी शब्दों के जिस रूप से उनकी संख्या (एक या अनेक) का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
- हिन्दी में केवल दो वचन हैं– एकवचन, बहुवचन।
- 1. **एकवचन :** शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक पदार्थ का ज्ञान होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे– बालक, घोड़ा, किताब, मेज आदि।
- 2. **बहुवचन :** शब्द के जिस रूप से अधिक वसतुओं या पदार्थों का ज्ञान होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– बालकों, घोड़ों, किताबों, मेजों आदि।

बहुवचन बनाने में प्रयुक्त प्रत्यय–

- 1. **ए :** आकारान्त पुलिंग, तद्भव संज्ञाओं में अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बहुवचन हो जाता है। जैसे–
  घोड़ा – घोड़े लड़का – लड़के गधा – गधे
- 2. **एं :** अकारान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में एं जोड़ने पर वे बहुवचन बन जाते हैं। जैसे–

पुस्तक	–	पुस्तकें	बात	–	बातें
सड़क	–	सड़कें	गाय	–	गायें
लेखिका	–	लेखिकाएं	माता	–	माताएं

- 3. **यां :** यां इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जुड़कर उसे बहुवचन बना देता है। जैसे–

जाति	–	जातियां	रीति	–	रीतियां
नदी	–	नदियां	लड़की	–	लड़कियां

- 4. **ओं :** ओं का प्रयोग करके भी बहुवचन बनते हैं। जैसे–

कथा	–	कथाओं	साधु	–	साधुओं
माता	–	माताओं	बहन	–	बहनों

- 5. कभी–कभी कुछ शब्द भी बहुवचन बनाने के लिए जोड़े जाते हैं। जैसे– वृन्द (मुनिवृन्द), जन (युवजन), गण (कृषकगण), वर्ग (छात्रवर्ग), लोग (नेता लोग) आदि।
- वाक्य में वचन संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं जिनका निराकरण करना आवश्यक है, जैसे–

(i) कुछ शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे–
1. प्राण– मेरे **प्राण** छटपटाने लगे।
2. दर्शन– मैंने आपके **दर्शन** कर लिए।
3. आंसू– आँखों से **आँसू** निकल पड़े।
4. होश– शेर को देखते ही मेरे **होश** उड़ गए।
5. बाल– मैंने **बाल** कटा दिए।
6. हस्ताक्षर– मैंने कागज पर **हस्ताक्षर** कर दिए।

(ii) कुछ शब्द नित्य एकवचन होते हैं। जैसे–
1. माल– **माल** लूट गया।
2. जनता– **जनता** भूल गई।
3. सामान– **सामान** खो गया।
4. सामग्री– हवन **सामग्री** जल गई।
5. सोना– **सोना** का भाव कम हो गया।

(iii) आदरणीय व्यक्ति के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।
1. **पिताजी** आ रहे हैं।
2. **तुलसी** श्रेष्ठ कवि थे।
3. **आप** क्या चाहते हैं ?

(iv) 'अनेकों' शब्द का प्रयोग गलत है। एक का बहुवचन अनेक है, अतः अनेकों का प्रयोग अशुद्ध माना जाता है। जैसे–
1. वहाँ **अनेकों** लोग थे। (अशुद्ध)
   वहाँ **अनेक** लोग थे। (शुद्ध)
2. बाग में **अनेकों** वृक्ष थे। (अशुद्ध)
   बाग में **अनेक** वृक्ष थे। (शुद्ध)

The Institute एक मिशन

III. कारक (Case)

- **परिभाषा** : संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य पदों (विशेषतः क्रिया) से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे– राम ने रावण को बाण से मारा।

  इस वाक्य में राम क्रिया (मारा) का **कर्ता** है, रावणइस मारण क्रिया का **कर्म** है; बाण से यह क्रिया सम्पन्न की गई है, अतः बाण क्रिया का साधन होने से **करण** है।

- **कारक एवं कारक चिह्न** : हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गई हैं इन कारकों के नाम एवं उनके कारक चिह्नों का विवरण इस प्रकार है–

कारक	कारक चिह्न	कारक	कारक चिह्न
1. कर्ता	0, ने	2. कर्म	0, को
3. करण	से, के द्वारा	4. सम्प्रदान	को, के लिए
5. अपादान	से	6. संबंध	का, की, के
7. अधिकरण	में, पर	8. सम्बोधन	हे! अरे!

- **करण और अपादान में अन्तर** : करण और अपादान दोनों कारकों में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है किन्तु इन दोनों में मूलभूत अंतर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है। कर्ता कार्य सम्पन्न करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कहते हैं। जैसे– मैं **कलम** से लिखता हूँ।

  यहाँ कलम लिखने का उपकरण है अतः **कलम** शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ है।

  अपादान कारक पेड़ में है, पत्ते में नहीं। जो अलग हुआ है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता अपितु जहाँ से अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक होता है। पेड़ तो अपनी जगह स्थिर है, पत्ता अलग हो गया अतः ध्रुव (स्थिर) वसतु मेंअपादान होगा। एक अन्य उदाहरण– वह **गाँव** से चला आया। यहाँ गाँव में अपादान कारक है।

- **कारकों की पहचान** : कारकों की पहचान कारक चिह्नों से की जाती है। कोई शब्द किस कारक में प्रयुक्त है, यह वाक्य के अर्थ पर भी निर्भर है। सामान्यतः कारक निम्न प्रकार पहचाने जाते हैं–

  1. **कर्ता**– क्रिया को सम्पन्न करने वाला
  2. **कर्म**– क्रिया से प्रभावित होने वाला
  3. **करण**– क्रिया का साधन या उपकरण
  4. **सम्प्रदान**– जिसके लिए कोई क्रिया सम्पन्न की जाय।
  5. **अपादान**– जहाँ अलगाव हो वहाँ ध्रुव या सिरि में अपादान होता है।
  6. **संबंध**– जहाँ अलगाव हो वहाँ ध्रुव या स्थिर में अपादान होता है।
  7. **अधिकरण**– जो क्रिया के आधार (स्थान, समय, अवसर) आदि का बोध कराये।
  8. **सम्बोधन**– किसी को पुकार कर सम्बोधित किया जाय।

- वाक्य में कारक संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। इनका निराकरण करके वाक्य को शुद्ध बनाया जाता है। जैसे–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. तेरे **को** कहां जाना है?	**तुझे** कहाँ जाना है ?
2. वह **घोड़े** के ऊपर बैठा है।	वह घोड़े **पर** बैठा है।
3. रोगी **से** दाल खाई गई।	रोगी **के द्वारा** दाल खाई गई।
4. मैं कलम **के साथ** लिखता हूं।	मैं कलम **से** लिखता हूं।
5. **मुझे** कहा गया था।	**मुझसे** कहा गया था।
6. लड़का मिठाई **को** रोता है।	लड़का मिठाई **के लिए** रोता है।
7. इस किताब **के अन्दर** बहुत कुछ है।	इस किताब **में** कुछ है।
8. **मैंने** आज पटना जाना है।	**मुझे** आज पटना जाना है।
9. तेरे को मेरे से क्या लेना–देना?	**तुझे मुझसे** क्या लेना–देना?
10. **उसे** कह दो कि भाग जाय।	**उससे** कह दो कि भाग जाय।
11. सीता से **जाकर** के कह देना।	सीता से **जाकर** कह देना।
12. **तुम्हारे से** कोई काम नहीं हो सकता।	**तुमसे** कोई काम नहीं हो सकता।
13. मैं पत्र लिखने को बैठा	मैं पत्र लिखने **के लिए** बैठा।
14. मैंने राम **को** यह बात कह दी थी।	मैंने राम **से** यह बात कह दी थी।
15. इन दोनों घरों **में** एक दीवार है।	इन दोनों घरों **के बीच** एक दीवार है।

सर्वनाम (Pronoun)

- **परिभाषा** : संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे– मैं, तुम, हम, वे, आप आदि शब्द सर्वनाम हैं।
- 'सर्वनाम' का शाब्दिक अर्थ है– सबका नाम। ये शब्द किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रयुक्त न होकर सबसे द्वारा प्रयुक्त होते हैं तथा किसी एक का नाम न होकर सबका नाम होते हैं। 'मैं' का प्रयोग सभी व्यक्ति अपने लिए करते हैं, अतः 'मैं' किसी एक का नाम न होकर सबका नाम अर्थात् सर्वनाम है।
- **सर्वनाम के भेद** : सर्वनाम के छः भेद बताए गए हैं–

  1. पुरुषवाचक सर्वनाम
  2. निश्चयवाचक सर्वनाम
  3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
  4. संबंधवाचक सर्वनाम
  5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
  6. निजवाचक सर्वनाम

- **(1) पुरुषवाचक सर्वनाम** (Personal Pronoun) : पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं। उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष।

  उत्तम पुरुष– मैं, हम, मैंने, हमने, मेरा, हमारा, मुझे, मुझको।

  मध्यम पुरुष– तू, तुम, तुमने, तुझे, तूने, तुम्हें, तुमको, तुमसे, आपने, आपको।

  अन्य पुरुष– वह, यह, वे, ये, इन, उन, उनको, उनसे, इन्हें, उन्हें, इससे, उसको।

- **(2) निश्चयवाचक सर्वनाम** (Demonstrative Pronoun) : निकट या दूर के व्यक्तियों या वस्तुओं का निश्चयात्मक संकेत जिन शब्दों से व्यक्त होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– यह, वह, ये, वे।

  1. **यह** मेरी पुस्तक है।
  2. **वह** उनकी मेज है।
  3. **ये** मेरे हथियार हैं।
  4. **वे** तुम्हारे आदमी हैं।

- **(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम** (Indefinite Pronoun) : जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वसतु का बोध नहीं होता उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– कोई, कुछ।

  1. **कोई** आ गया तो क्या करोगे ?
  2. उसने **कुछ** नहीं लिया।

- **(4) संबंधवाचक सर्वनाम** (Relative Pronoun) : जिस सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाय, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– जो, सो।

  जो आया है **सो** जायेगा यह ध्रुव सत्य है।

- **(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम** (Interrogative Pronoun) : प्रश्न करने के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे– कौन, क्या।

  1. **कौन** आया था ?
  2. वह **क्या** कह रहा था ?
  3. दूध में **क्या** गिर पड़ा ?

- **(6) निजवाचक सर्वनाम** (Reflexive Pronoun) : निजवाचक सर्वनाम है– आप। यह 'अपने आप' या 'स्वयं' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम है। जैसे– यह कार्य मैं 'आप' ही कर लूंगा।

  ध्यान रहे कि यहाँ प्रयुक्त 'आप' स्वयं के लिए प्रयुक्त है जो कि पुरुषवाचक मध्यम पुरुष आदरणीय सर्वनाम 'आप' से अलग है।

- कभी–कभी कुछ 'शब्द–समूह' भी सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे– 1. कुछ न कुछ, 2. कोई न कोई, 3. सब कुछ, 4. हर कोई, 5. कुछ भी, 6. कुछ–कुछ आदि।

सर्वनाम : एक नजर में

1. पुरुषवाचक	– (i) उत्तम पुरुष– मैं, हम	
	(ii) मध्यम पुरुष– तू, तुम, आप	
	(iii) अन्य पुरुष– वह, वे, यह, ये	
2. निश्चयवाचक	– (i) निकटवर्ती– यह, ये	
	(ii) दूरवर्ती– वह, वे	
3. अनिश्चयवाचक	– (i) प्राणि बोधक– कोई	
	(ii) वस्तु बोधक– कुछ	
4. सम्बन्धवाचक	– जो, सो	
5. प्रश्नवाचक	– (i) प्राणि बोधक– कौन	
	(ii) वस्तु बोधक– क्या	
6. निजवाचक	– आप	

- **सर्वनाम के विकारी रूप** : विभिन्न कारकों में प्रयुक्त होने पर सर्वनाम शब्दों के रूप परिवर्तित हो जाते हैं। सर्वनाम का प्रयोग सम्बोधन में नहीं होता। इसके विकारी रूप हैं। मैंनें, मुझको, मुझसे, हमने, हमको, हमसे, मेरा, हमारा, उसने, उसको, तुमने, तुमको, आपने, आपको, तुझे, तुम्हारा, तुमसे, इसने, इसको, किसको आदि।

- **सर्वनाम का पद परिचय** (Parsing of Pronoun) : किसी वाक्य में प्रयुक्त सर्वनाम का पद परिचय देने के लिए पहले सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका सम्बन्ध बताना पड़ता है। जैसे–

  1. **मैं** पुस्तक पढ़ता हूं।

     मैं– सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, पढ़ना क्रिया का कर्ता।

  2. चाय में **कुछ** पड़ा है।

     कुछ– सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पड़ा क्रिया का कर्म।

विशेषण (Adjective)

- **परिभाषा** : संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।

- जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें **विशेषण** कहा जाता है ओर जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहा जाता है। जैसे– मोटा लड़का हँस पड़ा। यहाँ 'मोटा' विशेषण है तथा 'लड़का' विशेष्य (संज्ञा) है।

- **विशेषण के भेद** : विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं–

  1. सार्वनामिक विशेषण
  2. गुणवाचक विशेषण
  3. संख्यावाचक विशेषण
  4. परिमाणबोधक विशेषण

- **(1) सार्वनामिक विशेषण** (Demostrative Adjective) : विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को **सार्वनामिक विशेषण** कहा जाता है। इनके दो उपभेद हैं–

  (i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण– जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के मौलिक रूप में संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बतलाने हैं उन्हें इस वर्ग में रखा जाता है। जैसे–

  1. **यह** घर मेरा है।
  2. **वह** किताब फटी है।
  3. **कोई** आदमी रो रहा है।

  (ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण– जो सर्वनाम रूपान्तरित होकर संज्ञा शब्दों की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें **यौगिक सार्वनामिक विशेषण** कहा जाता है। जैसे–

  1. **ऐसा** आदमी नहीं देखा।
  2. **कैसा** घर चाहिए ?
  3. **जैसा** देश वैसा भेष।

* (2) **गुणवाचक विशेषण** (Adjective of Quality) : जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण–धर्म, स्वभाव काबोध कराते हैं, उन्हें **गुणवाचक सर्वनाम** कहते हैं। गुणवाचक विशेषण अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जैसे–

   (i) **कालबोधक**– नया, पुराना, ताजा, मौसमी, प्राचीन।

   (ii) **रंगबोधक**– लाल, पीला, काला, नीला, बैंगनी, हरा।

   (iii) **दशाबोधक**– मोटा, पतला, युवा, वृद्ध, गीला, सूखा।

   (iv) **गुणबोधक**– अच्छा, भला, बुरा, कपटी, झूठा, सच्चा, पापी, न्यायी, सीधा, सरल।

   (v) **आकारबोधक**– गोल, चौकोर, तिकोना, लम्बा, चौड़ा, नुकीला, सुडौल, पतला, मोटा।

* (3) **संख्यावाचक विशेषण** (Adjective of Number) : जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें **संख्यावाचक विशेषण** कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं।

   (i) **निश्चित संख्यावाचक**– इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे– **दस** लड़के, **बीस** आदमी, **पचास** रुपये।

   निश्चित संख्यावाचक विशेषणों को प्रयोग के अनुसार निम्न भेदों में विभक्त किया जा सकता है–

   (i) गणनावाचक– एक, दो, चार, आठ, बारह।

   (ii) क्रमवाचक– पहला, दसवां, सौवां, चौथा।

   (iii) आवृत्तिवाचक– तिगुना, चौगुना, सौगुना।

   (iv) समुदायवाचक– चारों, आठों, तीनों।

   (ii) **अनिश्चित संख्यावाचक**– इनसे अनिश्चित संख्या को बोध होता है। जैसे–

   1. **कुछ** आदमी चले गए।
   2. **कई** लोग आए थे।
   3. **सब कुछ** समाप्त हो गया।

* (4) **परिमाणबोधक विशेषण** (Adjective of Quantity) : जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण का बोध होता है, उन्हें **परिमाणबोधक विशेषण** कहते हैं। इनके भी दो भेद हैं–

   (i) **निश्चित परिमाणबोधक**– **दस किलो** घी, **पांच क्विंटल** गेहूं।

   (ii) **अनिश्चित परिमाणबोधक**– **बहुत** घी, **थोड़ा** दूध।

* **प्रविशेषण** : वे शब्द जो विशेषणों की विशेषता बतलाते हैं, **प्रविशेषण** कहे जाते हैं। जैसे–

   1. वह **बहुत** तेज दौड़ता है।

      यहाँ 'तेज' विशेषण है और 'बहुत' प्रविशेषण है क्योंकि यह तेज की विशेषता बतला रहा है।

   2. सीता **अत्यन्त** सुन्दर है।

      यहाँ 'सुन्दर' विशेषण है तथा 'अत्यन्त' प्रविशेषण है।

* **विशेषार्थक प्रत्यय** : संज्ञा शब्दों को विशेषण बनाने के लिए उनमें जिन प्रत्ययों को जोड़ा जाता है, उन्हें **विशेषणार्थक प्रत्यय** कहते हैं। जैसे–

प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण
1. ईला	चमक	चमकीला
2. इक	अर्थ	आर्थिक
3. मान	बुद्धि	बुद्धिमान
4. ई	धन	धनी
5. वान	दया	दयावान
6. ईय	भारत	भारतीय

* **विशेषण की तुलनावस्था** : इन्हें तुलनात्मक विशेषण भी कहा जाता है। विशेषण की तीन अवस्थाएं तुलनात्मक रूप में हो सकती हैं– मूलावस्था, उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था।

   जैसे– लघु, लघुतर, लघुतम।
   कोमल, कोमलतर, कोमलतम।
   उच्च, उच्चतर, उच्चतम।
   सुन्दर, सुन्दरतर, सुन्दरतम।

* **विशेषण का पद परिचय** (Parsing of Adjective) : वाक्य में विशेषण पदों का अन्वय (पद परिचय) करते समय उसका स्वरूप– भेद, लिंग, वचन, कारक और विशेष्य बताया जाता है। जैसे–

   काला कुत्ता मर गया।

   काला– विशेषण, गुणवाचक, रंगबोधक, पुलिंग, एकवचन

   विशेष्य– कुत्ता

   मुझे थोड़ी बहुत जानकारी है।

   थोड़ी बहुत– विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, कर्मवाचक, विशेष्य– जानकारी।

क्रिया (Verb)

* **परिभाषा** : जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय, उसे **क्रिया** कहते हैं। जैसे– खाना, पीना, पढ़ना, सोना, रहना, जाना आदि।

* **धातु** : क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 'धातु' से ही क्रिया पद का निर्माण होता है इसीलिए क्रिया के सभी रूपों में 'धातु' उपस्थित रहती है। जैसे–

   चलना क्रिया में 'चल' धातु है।

   पढ़ना क्रिया में 'पढ़' धातु है।

प्रायः धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़कर 'क्रिया का निर्माण होता है।

धातु के दो भेद हैं– मूल धातु, यौगिक धातु।

The Institute
जहाँ सेलेक्शन तक जिम्मेदारी

(I) **मूल धातु** : यह स्वतन्त्र होती है तथा किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती, जैसे– जा, खा, पी, रह आदि।

(II) **यौगिक धातु** : यौगिक धातु मूल धातु में प्रत्यय लगाकर, कई धातुओं को संयुक्त करके अथवा संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। यह तीन प्रकार की होती है–

(1) **प्रेरणार्थक क्रिया (धातु)** : प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक एवं सकर्मक दोनों क्रियाओं से बनती हैं। जैसे–

मूल धातु – प्रेरणार्थक धातु	मूल धातु – प्रेरणार्थक धातु
उठना – उठाना, उठवाना	सोना – सुलाना, सुलवाना
करना – कराना, करवाना	पीना – पिलाना, पिलवाना
देना – दिलाना, दिलवाना	

(2) **यौगिक क्रिया (धातु)** : दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है। जैसे– रोना–धोना, उठना–बैठना, चलना–फिरना, खा लेना, उठ बैठना, उठ जाना।

(3) **नाम धातु** : संज्ञा या विशेषण से बनने वाली धातु को नाम धातु कहते हैं। जैसे– गाली से **गरियाना**, लात से **लतियाना**, बात से **बतियाना**।

- **क्रिया के भेद** : रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं–
  1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया

(1) **सकर्मक क्रिया** (Transitive Verb) : जो क्रिया कर्म के साथ आती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–

1. राम फल **खाता** है। (खाना क्रिया के साथ कर्म फल है)
2. सीता गीत **गाती** है। (गाना क्रिया के साथ गीत कर्म है)

(2) **अकर्मक क्रिया** (Intransitive Verb) : अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है। जैसे–

1. राधा **रोती** है। (कर्म का अभाव है तथा रोती है क्रिया का फल राधा पर पड़ता है)
2. मोहन **हँसता** है। (कर्म का अभाव है तथा हँसता है क्रिया का फल मोहन पर पड़ता है।)

- **क्रिया के कुछ अन्य भेद निम्नवत् हैं–**

(1) **सहायक क्रिया** (Helping Verb) : सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायता करती है। जैसे–

1. मैं घर जाता हूँ। (यहाँ 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है)
2. वे हँस रहे थे। (यहाँ 'हँसना' मुख्य क्रिया है और 'रहे थे' सहायक क्रिया है)

(2) **पूर्वकालिक क्रिया** (Absolutive Verb) : जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है तब पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है। जैसे– राम भोजन करके सो गया।

यहाँ **भोजन करके** पूर्वकालिक क्रिया है, जिसे करने के बाद उसने दूसरी क्रिया (सो जाना) सम्पन्न की है।

(3) **नामबोधक क्रिया** (Nominal Verb) : संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जुड़ने से नामबोधक क्रिया बनती है। जैसे–

संज्ञा	+	क्रिया	=	नामबोधन क्रिया
1. लाठी	+	मारना	=	लाठी मारना
2. रक्त	+	खौलना	=	रक्त खौलना

विशेषण	+	क्रिया	=	नामबोधन क्रिया
1. दुःखी	+	होना	=	दुःखी होना
2. पीला	+	पड़ना	=	पीला पड़ना

(4) **द्विकर्मक क्रिया** (Double Transitive Verb) : जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। जैसे–

1. अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी **पढ़ाई**।
   (दो कर्म – छात्रों, हिन्दी)
2. श्याम ने राम को थप्पड़ **मार दिया**।
   (दो कर्म – राम, थप्पड़)

(5) **संयुक्त क्रिया** (Compound Verb) : जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है, तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे–

1. वह **खाने** लगा।
2. मुझे **पढ़ने** दो।
3. वह पेड़ से **कूद पड़ा**।
4. मैंने किताब **पढ़ ली**।
5. वह **खेलती–कूदती** रहती है।
6. आप **आते–जाते** रहिए।
7. चिड़ियां **उड़ा करती** हैं।
8. अब त्यागपत्र दे **ही डालो**।

(6) **क्रियार्थक संज्ञा** (Verbal Noun) : जब कोई क्रिया संज्ञा की भाँति व्यवहार में आती है तब उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

1. **टहलना** स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
2. देश के लिए **मारना** कीर्तिदायक है।

- **क्रिया के सम्बन्ध में निम्न तथ्य भी विचारणीय हैं :**

(1) **वाच्य** (Voice) : वाच्य क्रिया का रूपान्तरण है जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है। वाच्य के तीन भेद हैं–

(i) **कर्तृवाच्य** : क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है।

1. **राम** ने दूध पिया।
2. **सीता** गाती है।
3. **मैं** स्कूल गया।

(ii) **कर्मवाच्य** : क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे–

1. **लेख** लिखा गया।
2. **गीत** गाया गया।
3. **पुस्तक** पढ़ी गई।

(iii) **भाववाच्य** : क्रिया का वह रूपान्तर भाववाच्य कहलाता है,जिससे वाक्य में 'भाव' (या क्रिया) की प्रधानता का बोध होता है। जैसे–

1. **मुझसे** चला नहीं जाता।
2. उससे चुप नहीं रहा जाता।
3. सीता से दूध नहीं पिया जाता।

- (2) **प्रयोग** : वाक्य में क्रिया किसका अनुसरण कर रही है– कर्ता, कर्म, या भाव का– इस आधार पर तीन प्रकार के 'प्रयोग' माने गए हैं–

(i) **कर्तरि प्रयोग** : इन वाक्यों में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं। जैसे–

1. **राम** पुस्तक पढ़ता है। (क्रिया कर्तानुसारी है)
2. **सीता** आम खाती है। (क्रिया कर्तानुसारी है)

(ii) **कर्मणि प्रयोग** : जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म का अनुसरण करते हैं, तब कर्मणि प्रयोग होता है। जैसे–

1. राधा ने **गीत गाया।**
   (क्रिया कर्म के अनुसार पुलिंग है)
2. मोहन ने **किताब पढ़ी।**
   (क्रिया कर्म के अनुसार स्त्रीलिंग है)

(iii) **भावे प्रयोग** : जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता का अनुसरण न कर सदैव एकवचन, पुलिंग एवं अन्य पुरुष में हो तब भावे प्रयोग होता है। जैसे–

1. राम से गाया नहीं जाता।
2. सीता से गाया नहीं जाता।
3. लड़कों से गाया नहीं जाता

इन तीनों वाक्यों में कर्ता के बदलने पर भी क्रिया अपरिवर्तित है तथा वह एकवचन, पुलिंग, अन्य पुरुष में है अतः ये भावे प्रयोग हैं।

- (3) **काल** (Tense) : क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार के समय तथा उसकी पूर्णता अथवा अपूर्णता का बोध होता है, उसे **काल** कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं–

(i) वर्तमान काल
(ii) भूतकाल
(iii) भविष्यत् काल

(i) वर्तमान काल : वर्तमान काल में क्रिया व्यापार की निरन्तरता रहती है। इसके पांच भेद हैं :

1. **सामान्य वर्तमान**– यह पढ़ता है।
2. **तात्कालिक वर्तमान**– यह पढ़ रहा है।
3. **पूर्ण वर्तमान**– वह पढ़ चुका है।
4. **संदग्धि वर्तमान**– वह पढ़ता होगा।
5. **संभाव्य वर्तमान**– वह पढ़ता हो।

(ii) भूतकाल : भूतकाल में क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है। इसके छः भेद हैं :

1. **सामान्य भूत**– सीता गयी।
2. **आसन्न भूत**– सीता गयी है।
3. **पूर्ण भूत**– सीता गयी थी।
4. **अपूर्ण भूत**– सीता जा रही थी।
5. **संदिग्ध भूत**– सीता गयी होगी।
6. **हेतुहेतुमद्भूत**– सीता जाती। (क्रिया होने वाली थी, पर हुई नहीं)

(iii) भविष्यत् काल : भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध भविष्यत् काल से होता है। इसके तीन भेद हैं–

1. **सामान्य भविष्य**– राम पढ़ेगा।
2. **संभाव्य भविष्य**– सम्भव है राम पढ़े।
3. **हेतुहेतुमद्भविष्य**– छात्रवृत्ति मिले, तो राम पढ़े। (इसमें क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर है)

- **क्रिया का पद परिचय** (Parsing of Verb) : क्रिया के पद परिचय में क्रिया, क्रिया का भेद, वाच्य, लिंग, पुरुष, वचन, काल और वह शब्द जिससे क्रिया का संबंध है, बतानी चाहिए। जैसे–

1. राम ने पुस्तक पढ़ी।
   पढ़ी– क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, सामान्य भूत, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म पुस्तक से सम्बन्धित।
2. मोहन कल जायेगा।
   जायेगा– क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्य भविष्यत्, पुलिंग, एकवचन, कर्ता मोहन से सम्बन्धित।

क्रियाविशेषण

1. क्रियाविशेषण वह अव्यय शब्द है जो क्रिया की किसी विशेषता को बताता है। जैसे– मानसी धीरे–धीरे चल रही है।
2. **क्रियाविशेषण के भेद :**

I. रीतिवाचक क्रियाविशेषण : जो क्रिया की रीति या विधि से संबद्ध विशेषता का बोध कराता है। जैसे– चोर को पकड़ने के लिए दीपक तेजी से दौड़ा–

II. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण : जो क्रिया के परिमाण या मात्रा से संबद्ध विशेषता का बोध कराता है। जैसे– **मैं बहुत थक गया हूँ।**
मैं थोड़ा चला ही था कि रिक्शा आ गया।
वह उतना ही खाता है, जितना कि डॉक्टर ने बताया था।

III. कालवाचक क्रियाविशेषण : जो क्रिया के काल से संबद्ध विशेषता का बोध कराता है।

(i) **कालबिंदुवाचक** : आज, कल, अब, जब, अभी, कभी, प्रातः, सायं
(ii) **अवधिवाचक** : आजकल, सदैव, नित्य, दिनभर, लगातार
(iii) **बारंबारतावाचक** : रोज, बहुधा, प्रतिदिन, हर बार

IV. स्थानवाचक क्रियाविशेषण : जो क्रिया के स्थान से संबद्ध विशेषता का बोध कराता है।

(i) **स्थितिवाचक** : भीतर, बाहर, आगे, पीछे, यहाँ, वहाँ, सर्वत्र, ऊपर, नीचे, पास, दूर, आर पार
(ii) **दिशावाचक** : बाएँ, दाहिने, इधर–उधर, की ओर

अव्यय (Indeclinables)

- **परिभाषा** : ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, **अव्यय** कहलाते हैं।

  ये शब्द सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, कभी बदलता नहीं। जैसे– आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, तब और अतः, इसलिए आदि।

- **अव्यय के भेद** : अव्यय के चार भेद बताए गए हैं :

  1. क्रिया विशेषण, 2. सम्बन्धबोधक,
  3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक।

- (1) **क्रिया विशेषण** : जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

  अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं :

  1. **स्थानवाचक** :
     (i) **स्थितिवाचक**– यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
     (ii) **दिशावाचक**– इधर, उधर, दाएं, बाएं।
  2. **कालवाचक** :
     (i) **समयवाचक**– आज, कल, अभी, तुरन्त।
     (ii) **अवधिवाचक**– रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य
     (iii) **बारंबारतावाचक**– हर बार, कई बार, प्रतिदिन
  3. **परिमाणवाचक** :
     (i) **अधिकताबोधक**– बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
     (ii) **न्यूनताबोधक**– जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ।
     (iii) **पर्याप्तिबोधक**– बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
     (iv) **तुलनाबोधक**– कम, अधिक, इतना, उतना।
     (v) **श्रेणीबोधक**– बारी–बारी, तिल–तिल, थोड़ा–थोड़ा
  4. **रीतिवाचक** : ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो, हाँ, जी, यथासम्भव।

- (2) **सम्बन्धबोधक** : जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं उन्हें संबंध बोधक कहते हैं। जैसे–

  1. वह दिन **भर** काम करता रहा।
  2. मैं विद्यालय **तक** गया था।
  3. मनुष्य पानी के **बिना** जीवित नहीं रह सकता।

  सम्बन्धबोधक अव्ययों के कुछ और उदाहरण निम्नवत् हैं–

  अपेक्षा, समान, बाहर, भीतर, पूर्व, पहले, आगे, पीछे, संग, सहित, बदले, सहारे, आसपास, भरोसे, मात्र, पर्यन्त, भर, तक, सामने।

- (3) **समुच्चयबोधक** : दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे–

  सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।
  यहाँ 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

  समुच्चयबोधक अव्यय मूलतः दो प्रकार के होते हैं–
  (i) समानाधिकरण (ii) व्यधिकरण

  पुनः समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद है–

  1. **संयोजक**– और, एवं, तथा।
  2. **विभाजक**– या, अथवा, किंवा, नहीं तो।
  3. **विरोध–दर्शक**– पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, मगर, वरन्।
  4. **परिणाम–दर्शक**– इसलिए, अतः, अतएव।

  व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार उपभेद हैं :

  1. **कारणवाचक**– क्योंकि, जोकि, इसलिए कि।
  2. **उद्देश्यवाचक**– कि, जो, ताकि।
  3. **संकेतवाचक**– जो.........तो, यदि.......तो, यद्यपि... तथापि।
  4. **स्वरूपवाचक**– कि, जो, अर्थात्, यानी।

- (4) **विस्मयादि बोधक** : जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, घृणा, आदि भाव व्यंजित होते हैं तथा जिनका संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे– हाय ! वह चल बसा!

  इस अव्यय के निम्न उपभेद हैं :

  1. **हर्षबोधक**– वाह, आह, धन्य, शाबाश।
  2. **शोकबोधक**– हाय, आह, त्राहि–त्राहि।
  3. **आश्चर्यबोधक**– ऐं, क्या, ओहो, हैं।
  4. **स्वीकारबोधक**– हाँ, जी हाँ, अच्छा, जी, ठीक।
  5. **अनुमोदनबोधक**– ठीक, अच्छा, हाँ–हाँ।
  6. **तिरस्कारबोधक**– छिः, हट, धिक, दूर।
  7. **सम्बोधनबोधक**– अरे, रे, जी, हे, अहो।

- **निपात** : मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता हैं इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द या पूरे वाक्य को श्रव्य भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। निपात का कार्य शब्द समूह को बल प्रदान करना भी है। निपात कई प्रकार के होते हैं। जैसे–

  (i) **स्वीकृतिबोधक**– हाँ, जी, जी हाँ।
  (ii) **नकारबोधक**– जी नहीं, नहीं।
  (iii) **निषेधात्मक**– मत
  (iv) **प्रश्नबोधक**– क्या
  (v) **विस्मयबोधक**– काश
  (vi) **तुलनाबोधक**– सा
  (vii) **अवधारणाबोधक**– ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन
  (viii) **आदरबोधक**– जी

- **अव्यय का पद परिचय** (Parsing of Indeclinables) : वाक्य में अव्यय का पद परिचय देने के लिए अव्यय, उसका भेद, उससे संबंध रखने वाला पद– इतनी बातों का उल्लेख करना चाहिए। जैसे–

  वह **धीरे–धीरे** चलता है।

  धीरी–धीरे– अव्यय, क्रिया, विशेषण, रीतिवाचक, क्रिया चलता की विशेषता बताने वाला।

The Institute जहाँ सफलता एक जिद है

अलंकार

शब्द और अर्थ द्वारा वाक्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद– अलंकारों के दो भेद किए गए हैं :

1. शब्दालंकार :

जब केवल शब्दों में चमत्कार पाया जाता है जब शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार प्रमुखतः तीन होते हैं– अनुप्रास, यमक और श्लेष।

1. **अनुप्रास**– जहां व्यंजनों की आवृत्ति होती है वहां अनुप्रास अलंकार होता है।
   यथा :
   'रघुपति राघव राजा राम।'
   यहां 'र' व्यंजन की आवृत्ति है।
2. **यमक अलंकार**– जहां एक ही शब्द अनेक बार भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है वहां यमक अलंकार होता है।
   यथा :
   कनक–कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
   वा खाये बौरात जग, या पाए बौराय।।
   इस उदाहरण में 'कनक' शब्द दो बार भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।
3. **श्लेष अलंकार**– श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों के कथन को 'श्लेष' कहते हैं। इसमें दो बातें आवश्यक हैं– (क) एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, (ख) से एक अधिक अर्थ प्रकरण में अपेक्षित हों।
   उदाहरणार्थ–
   माया महाठगिनि हम जानी।
   तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।
   यहाँ 'तिरगुन' शब्द में शब्दश्लेष की योजना हुई है। इसके दो अर्थ हैं– तीन गुण– सत्त्व, रजस्, तमस्। दूसरा अर्थ है– तीन धगोंवाली रस्सी। ये दोनों अर्थ प्रकरण के अनुसार ठीक बैठते हैं, क्योंकि इनकी अर्थसंगति 'महाठगिनि माया' से बैठायी गयी है।

2. अर्थालंकार :

अर्थ को चमत्कृत या अलंकृत करने वाले अलकार अर्थालंकार हैं। जिस शब्द से जो अर्थालंकार सधता है, उस शब्द के स्थान पर दूसरा पर्याय रख देने पर भी वही अलंकार सधेगा, उस शब्द के स्थान पर दूसरा पर्याय रख देने पर भी वही अलंकार सधेगा क्योंकि इस जाति के अलंकारों का सम्बन्ध शब्द से न होकर अर्थ से होता है।

1. **उपमा** : दो वस्तुओं में समानधर्म के प्रतिपादन को 'उपमा' कहते हैं। उपमा का अर्थ है– समता, तुलना या बराबरी। उपमा के लिए चार बातें आवश्यक हैं– (क) उपमेय– जिसकी उपमा दी जाय, अर्थात् जिसका वर्णन हो रहा हो, (ख) उपमान– जिससे उपमा दी जाय, (ग) समानतावाचक पद– जैसे– ज्यों, सम, सा, सी, तुल्य, नाई इत्यादि, (घ) समानधर्म– उपमेय और उपमान के समानधर्म को व्यक्त करनेवाला शब्द। उदहारणार्थ–
   नवल सुन्दर श्याम–शरीर की,
   सजल नीरद–सी कल कान्ति थी।
   इस उदाहरण का विश्लेषण इस प्रकार होगा–
   कान्ति– उपमेय, नीरद– उपमान,
   सी– समानतावाचक पद, कल– समान धर्म।
2. **रूपक**– उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमान और उपमेय का अभेद ही 'रूपक' है। इसके लिए तीन बातें का होना आवश्यक है– (क) उपमेय को उपमान का रूप देना, (ख) वाचक पद का लोप, (ग) उपमेय का भी साथ–साथ वर्णन। उदाहरणार्थ–
   बीती विभावरी जाग री !
   अम्बर–पनघट में डुबो रही तारा–घट ऊषा–नागरी।
   –प्रसाद
   यहाँ अम्बर, तारा और ऊषा (जो उपमेय हैं) पर क्रमशः पनघट, घट और नागरी (जो उपमान है) का अरोप हुआ है। वाचक पद नहीं आये हैं और उपमेय (प्रस्तुत) तथा उपमान (अप्रस्तुत) दोनों का साथ–साथ वर्णन हुआ है।
3. **उत्प्रेक्षा**– उपमेय (प्रस्तुत) में कल्पित उपमान (अप्रस्तुत) की सम्भावना को 'उत्प्रेक्षा' कहते हैं। उत्प्रेक्षा का अर्थ है, किसी वसतु को सम्भावित रूप में देखना। सम्भावना सन्देह से कुछ ऊपर और निश्चय से कुछ नीचे होती है। इसमें न तो पूरा सन्देह होता है और न पूरा निश्चय। तात्पर्य यह कि उपमेय में उपमान को प्रबल रूप में कल्पना की आँखों से देखने की प्रक्रिया को उत्प्रेक्षा कहते हैं। उसमें कवि की कल्पना साधारण कोटि की न होकर विलक्षण होती हैं अर्थ में चमत्कार लाने के लिए ऐसा किया जाता है। इसमें वाचक पदों का प्रयोग होता हैं उदाहरणार्थ–
   फूले कास सकल महि छाई।
   जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।।
4. **अतिशयोक्ति** : जहां 'उपमेय' को छिपाकर केवल 'उपमान' द्वारा उसे कहा जाय अथवा किसी बात को बहुत बढ़ा–चढ़ाकर कहा जाय, वहां 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है। जैसे–
   बाँधा था विधु को किसने
   इन काली जंजीरों से।
5. **भ्रान्तिमान** : जहां – अत्यंत समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का ज्ञान कर लिया जाय, वहां भ्रान्तिमान, अलंकार होता है।.जैसे–
   नाम का मोती अधर की कान्ति से
   बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से
   देखकर सहसा हुआ शुक मौन है
   सोचता है, अन्य शुक यह कौन है ?
6. **विभावना** : जहां 'कारण' क न रहने पर भी उसके फलस्वरूप होने वाले 'कार्य' का वर्णन किया जाय, वहां 'विभावना' अलंकार होता है। जैसे–
   राजभवन को छोड़ कृष्ण थे चले गये
   तेज चमकता था उनका फिर भी भास्वर !
7. **विरोधाभास** : जहां दो वस्तुओं में मूलतः तात्विक विरोध न रहने पर भी उनका इस प्रकार प्रतिपादन किया जाय कि उनके बीच किसी 'विरोध' का 'आभास' मिलने लगे, वहां 'विरोधाभास' अलंकार होता है। जैसे–
   या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
   ज्यों ज्यों बूड़ै स्याम रंग त्यों त्यों उज्ज्वल होय।।
8. **संदेह** : जहां प्रस्तुत (उपमेय) और अप्रस्तुत (उपमान) के बीच संशयास्पद ज्ञान (कि यह है कि वह) का चित्रण किया जाय, वहाँ 'संदेह' अलंकार होता है। जैसे–
   है उदित पूर्णेन्दु वह अथवा किसी
   कामिनी के बदन की छिटकी छटा।

पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

शब्द		पर्यायवाची
अग्नि	:	आग, वह्नि, पावक, अनल, वायुसखा, दहन, धूमकेतु, कृशानु।
असुर	:	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, यातुधान, निशिचर, निशाचर, रजनीचर।
अनुपम	:	अपूर्व, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, अद्वितीय, अतुल।
अमृत	:	पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक।
अश्व	:	वाजि, हय, घोटक, घोड़ा, सैन्धव, तुरग, तुरंग।
आँख	:	नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि, अम्बक, दृष्टि, विलोचन।
आकाश	:	द्यौ, व्योम, गगन, अभ्र, अम्बर, नभ, अन्तरिक्ष, आसमान, अनन्त।
आम	:	आम्र, चूत, रसाल, अमृतफल, सहकार, अतिसौरभ, च्युत (आम का पेड़)।
आनन्द	:	मोद, प्रमोद, हर्ष, आमोद, सुख, प्रसन्नता, आह्लाद, उल्लास।
आश्रम	:	मठ, विहार, कुटी, स्तर, अखाड़ा, संघ।
इच्छा	:	आकांक्षा, ईप्सा, अभिलाषा, चाह, कामना, मनोरथ, स्पृहा, ईहा, वांछा।
इन्द्र	:	सुरपति, मघवा, पुरन्दर, वासव, महेन्द्र, देवराज।
कपड़ा	:	वस्त्र, पट, वसन, अम्बर, चीर।
कमल	:	सरोज, जलज, अब्ज, पंकज, अरविन्द, पद्म, कंज, शतदल, अम्बुज, सरसिज, नलिन, तामरस।
किरण	:	मरीचि, मयूख, अंशु, कर, रश्मि, प्रभा, अर्चि, गो।
कुबेर	:	किन्नरेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज।
गणेश	:	लम्बोदर, एकदन्त, मूषकवाहन, गजवदन, गजानन, विनायक, गणपति, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन, महाकाय, विघ्नराज, मोदकप्रिय, मोददाता।
गंगा	:	जाह्नवी, देवनदी, सुरसरिता, भागीरथी, मन्दाकिनी, देवपगा, ध्रुवनन्दा।
गेह	:	घर, निकेतन, भवन, सदन, आगार, आयतन, आवास, निलय, धाम, गृह।
गदहा	:	खर, गर्दभ, धूसर, रासभ, बेशर, चक्रीवान्, वैशाखनन्दन।
चन्द्र	:	चाँद, चन्द्रमा, हिमांशु, सुधांशु, सुधाकर, सुधाधर, राकेश, शशि, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक, कलानिधि।
चोर	:	तसकर, दस्यु, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।
जल	:	नीर, सलिल, उदक, पानी, अम्बु, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प।
यमुना	:	सूर्यसुता, सूर्यतनया, कालिन्दी, अर्कजा, कृष्णा।
तालाब	:	सर, सरोवर, तड़ाग, ह्रद, पुष्कर, जलाशय, पद्माकर।
दास	:	अनुचर, चाकर, सेवक, नौकर, भृत्य, किंकर, परिचारक।
दुःख	:	पीड़ा, व्यथा, कष्ट, संकट, शोक, क्लेश, वेदना, यातना, यन्त्रणा, खेद।
देवता	:	सुर, अमर, देव, निर्जर, विबुध, त्रिदश, आदित्य, गीर्वाण।
द्रव्य	:	धन, वित्त, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।
नदी	:	सरिता, तटिनी, अपगा, निम्नगा, निर्झरिणी, कूलंकषा, तरंगिणी।
नौका	:	नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डांगी, पतंग।
पत्नी	:	भार्या, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, प्राणप्रिय, अर्धांगिनी।
पति	:	भर्ता, वल्लभ, स्वामी, आर्यपुत्र।
हवा	:	वायु, समीर, मरुत्, वात, बयार, प्रकम्पन, समीरण, पवन।
पक्षी	:	विहंग, विहग, खग, पखेरू, परिन्दा, चिड़िया, शकुन्त, अण्डज, पतंग, द्विज।
पर्वत	:	भूधर, शैल, अचल, महीधर, गिरि, नग, भूमिधर, तुंग, अद्रि, पहाड़।
पण्डित	:	सुधी, विद्वान्, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ, विचक्षण।
पुत्र	:	तनय, सुत, बेटा, लड़का, आत्मज, तनुज।
पुत्री	:	तनया, सुता, बेटी, आत्मजा, दुहिता, नन्दिनी, तनुजा।
पृथ्वी	:	भू, इला, भूमि, धरा, उर्वी, धरती, धरित्री, धरणी, वसुधा, वसुन्धरा।
पुष्प	:	फूल, सुमन, कुसुम, प्रसून।
बाण	:	तीर, शर, विशिख, आशुग, शिलीमुख, इषु, नाराच।
बिजली	:	चंचला, चपला, विद्युत्, सौदामनी, दामिनी, तड़ित्, बीजुरी, क्षणप्रभा।
ब्रह्मा	:	आत्मभू, स्वयम्भू, चतुरानन, पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, विधि, विधाता।
वृक्ष	:	तरु, द्रुम, पादप, विटप, अगम, पेड़, गाछ।
मछली	:	मत्स्य, झख, मीन, जलजीवन, सफरी (शफरी), झष (झख)।
महादेव	:	शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश, गिरीश, हर, त्रिलोचन।

मेघ : घन, जलघर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

मुनि : यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

रात्रि : शर्वरी, निशा, रात, रैन, रजनी, यामिनी, त्रियामा, विभावरी, क्षणदा।

राजा : नृप, भूप, महीप, महीपति, परपति, नरेश, भूपति, राव, सम्राट्।

विष्णु : गुरुड़ध्वज, अच्युत, जनार्दन, चक्रपाणि, विश्वम्भर, मुकुन्द, नारायण, हृषीकेष, दामोदर, केशव, माधव, गोविन्द, लक्ष्मीपति, विभु, विश्वरूप।

समुद्र : सागर, जलधि, पारावार, सिन्धु, नीरनिधि, नदीश, पयोधि, अर्णव, पयोनिधि, रत्नाकर, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि।

समूह : समुदाय, वृन्द, गण, संघ, पुंज, दल, झुण्ड, मण्डली, टोली, जत्था।

सरस्वती : ब्राह्मी, भारती, भाषा, वाक्, गिरा, शारदा, वीणापाणि, वागीशा।

सर्प : अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणी, उरग, पन्नग, नाग, साँप।

सोना : सुवर्ण, स्वर्ण, कंचन, हाटक, कनक, हिरण्य, हेम, जातरूप।

सूर्य : मार्तण्ड, दिनकर, रवि, भास्कर, मरीची, प्रभाकर, सविता, पतंग, दिवाकर, हंस, आदित्य, भानु, अंशुमाली।

सिंह : शर्दूल, व्याघ्र, पंचमुख, मृगराज, मृगेन्द्र, केशरी, केहरी, केशी, महावीर।

सुन्दर : रुचिर, चारु, रम्य, सुहावना, मनोहर, रमणीक, चित्ताकर्षक, ललित।

स्त्री : नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी।

अचल : पर्वत, भूधर, महीधर, नग, अद्रि

अभिजात : कुलीन, श्रेष्ठ, आर्य

अभिप्राय : अर्थ, तात्पर्य, आशय, मतलब, मायने

अंधकार : तम, तिमिर, अंधेरा, अंधियारा, तमिस्र

कामदेव : अनंग, मन्मथ, काम, पंचशर

किरण : प्रभा, अर्चि, गो, कर, मयूख, अंशु, रश्मि

कृष्ण : मुकुन्द, ब्रजवल्लभ, हृषीकेश, बनमाली, क्षीरसायी, गोपीनाथ, बनवारी, नंदनंदन, मुरलीधर, गिरिधर, दामोदर

किसान : कृषक, हलधर

कारागार : बन्दीगृह, कारावास, कैदखाना, जेल

किनारा : पुलिन, छोर, सिरा, तीर, तट, पर्यंत, बेलातट

जीव : प्राणी, प्राण, चैतन्य, जान, जीवन

तलवार : चंद्रहास, कृपाण, खड्ग, करवाल, असि

तरुणी : यौवनवती, मनोज्ञा, रमणी, सुन्दरी, प्रमदा

दिनांक : तारीख, तिथि, मिति

दूध : क्षीर, दुग्ध, अमृत, पयस्तन्य, पीयूष

दिन : दिवस, वासर, वार, अहन

दामिनी : पति प्रभा, चपला, चंचला, प्रभा

निशा : रात, रात्रि, रजनी, निशि, विभावरी, क्षपा

नरक : यमपुर, यमलोक, दुर्गति, जहन्नुम, यमालय, दोजख

पथ : राह, मग, रास्ता, मार्ग, पंथ

पण्डित : सुधी, विद्वान, कोविद्, बुध, धीर, मनीषी

परिवर्तन : फेर–बदल, तबदीली, हेर–फेर, अदल–बदल

पवन : अनिल, वायु, वात, मारुत, समीर, समीरण, बयार

बिजली : चंचला, चपला, विद्युत, सौदामनी, दामिनी, तड़ित, बीजुरी, क्षणप्रभा

बसन्त : कुसुमार, माधव, मधुमास, ऋतुराज

बन्दर : मर्कट, हरि, शाखामृग, कपि, वानर, कीश, कपीश

मछली : मत्स्य, झख, मीन, जलजीवन, सफरी

मोर : ध्वजी, कलापी, मयूर, सिखी, नीलकण्ठ, शिखण्डी, सारंग

मित्र : सहचर, सखी, साथी, दोस्त, मीत, सपक्ष

रात्रि : शर्वरी, निशा, रात, रैन, रजनी, यामिनी, त्रियामा, विभावरी, क्षणदा

विष्णु : गरुड़ध्वज, अच्युत, जनार्दन, चक्रपाणि, मुकुन्द, नारायण, दामोदर, केशव, माधव, गोविन्द, लक्ष्मीपति, विश्वम्भर

समुद्र : सागर, जलधि, पारावार, सिन्धु, नीरनिधि, नदीश, पयोधि, रत्नाकर, वारीश, जलधाम, नीरधि

सरस्वती : ब्राह्मी, भारती, भाषा, वाक्, गिरा, शारदा, वीणापाणि, वागीश, वागेश्वरी, महाश्वेता, श्री

सर्प : अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणी, उरग, नागपन्नत्र

सोना : सुवर्ण, स्वर्ण, कंचन, हाटक, कनक, हिरण्य, हेम, जातरूप

सूर्य : मार्तण्ड, दिनकर, रवि, भास्कर, मरींची, प्रभाकर, सविता, पतंग, दिवाकर, हंस, आदित्य, भानु, अंशुमाली

सिंह : शार्दूल, व्याघ्र, पंचमुख, मृगराज, मृगेन्द्र, केशरी, केहरी, केशी, महावीर, पुण्डरीक, वनराज, शेर

स्त्री : नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी, प्रिया, अबला, भार्या

सुन्दर : रुचिर, चारु, रम्य, सुहावना, मनोहर, रमणीक, चित्ताकर्षक, ललित, मनोज, मनभावन

हाथी : गयंद, कुंभी, सिंधुर, कटी, मतंग, गज, कुंजर, गजेन्द्र

The Institute
यहाँ सेलेक्शन एक जिद है।

समानार्थक शब्द

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जो मोटे रूप में समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं; किन्तु उनमें अर्थ की इतनी सूक्ष्म भिन्नता होती है कि वे अलग–अलग सन्दर्भों में ही प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों को ***अपूर्ण पर्याय*** *भी कहते हैं। भाषा के सुधी अध्येता के लिए यह आवश्यक है कि वह शब्दों को उनके उपर्युक्त अर्थ के साथ समझे और उनका सही प्रयोग करें। यहाँ हिन्दी के कुछ समानार्थ शब्द कतपय प्रयोग सहित दिये जा रहे हैं–*

अज्ञ, अज्ञानी : जिसको ज्ञान न हो। **अज्ञानी** का तो छोटा–मोटा अपराध भी क्षम्य है।

अनभिज्ञ : जिसको अनुभव न हो। मैं कार के इंजिन के बारे में **अनभिा** हूँ।

मूर्ख : जिसको ज्ञान देने पर भी ज्ञान प्राप्त न हो। वह **मूर्ख** है, कार चलाना कभी नहीं सीख सकता।

अज्ञात : जिसका ज्ञान न हो किन्तु जिसे जाना जा सकता हो।

अज्ञेय : जिसे जाना ही न जा सके, जैसे–ब्रह्म।

अनुभव : कर्मेन्द्रियों द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान। नरेश को समुद्र की लहरों में तैरने का भी **अनुभव** है।

अध्ययन : किसी अन्य के ज्ञान को प्राप्त करना।

अणु : परमाणुओं के विशिष्ट योग से बनने वाला पदार्थ का अंश।

परमाणु : किसी तत्व के अणु का एक कण, लघुत्तम अविभाज्य भाग।

असार : जिसमें न तो कभी सार था औन न अब है।

निसार : जिसमें पहले कभी सार था और अभी नहीं है।

अधर्म : धर्म के विरुद्ध कार्य। दूसरों को दुःख देना अधर्म है।

अन्याय : न्याय के विरुद्ध कार्य, अत्याचार। किसी की मजदूरी न देना अन्याय है।

अपराध : सामाजिक, राजकीय नियमों का उल्लंघन।

पाप : नैतिकता का उल्लंघन।

अभियान : अपने–आपकी प्रतिष्ठा अधिक व दूसरों की प्रतिष्ठा कम समझना। नौकरी मिलने के बाद उसे अपने पद का **अभिमान** हो गया है।

अहंकार : अपने आप को झूठे ही बहुत अधिक समझना। **अहंकार** मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है।

गौरव : अपने उचित कार्य या गुण पर समुचित श्रेष्ठता का भाव। अयोध्या के नागरिक अपने राजा राम से गौरवान्वित थे।

गर्व : रूप, यौवन, धन, विद्या आदि के कारण अपने को दूसरों से बढ़कर समझने का भाव।

अनुमोदन : किसी कार्यवाही या कथन पर सहमति। अध्यक्ष के गलत निर्णयों का समिति के सदस्यों ने **अनुमोदन** नहीं किया और वे निर्णय बदलने पड़े।

समर्थन : किसी के प्रस्ताव, विचार पर सहमति देना। बैठक में अनिल के प्रस्ताव को सभी ने **समर्थन** दिया।

स्वीकृति : किसी प्रस्ताव, प्रार्थना को उच्च अधिकारी द्वारा मंजूर किया जाना। बैंक मैनेजर ने लिपिक की छुट्टी **स्वीकृत** कर दी।

संस्तुति : किसी के आवेदन, प्रार्थना को प्रदान की जाने वाली सहमति। डॉक्टर ने मरीज की छुट्टी के आवेदन–पत्र पर अपनी **संस्तुति** दी है।

अग्रेषण : किसी के आवेदन, प्रार्थना को उच्च अधिकारियों के पास चिरार्थ भेज देना। छात्र के परीक्षा–केन्द्र के परिवर्तन के प्रार्थना–पत्र को प्राचार्य ने विश्वविद्यालय को **अग्रेषित** कर दिया।

पुष्टि : पूर्व में दिए गए मौखि आदेश को बाद में लिखित रूप में प्रमाणित करना। सचिव ने सहायक सचिव को टेलिफोन पर जो आदेश दिए थे, सहायक सचिव ने पत्रावली पर सचिव से उसकी **पुष्टि** कराई।

अधिवेशन : किसी संस्था का बड़ा सम्मेलन।

बैठक : किसी संस्था या किसी समिति की थोड़े समय के लिए सभा। आर्य समाज के चल रहे वार्षिक **अधिवेशन** की आज दूसरी **बैठक** बड़ी महत्वपूर्ण रही।

आपत्ति : अचानक आया संकट, जिसके निवारण का प्रयत्न किया जा सकता है।

विपत्ति : भारी आपत्ति, प्राकृतिक आपदा, जिससे बचने का सहज उपाय न हो।

आधि : मस्तिष्क सम्बन्धी बीकारी, बेचैनी।

व्याधि : शारीरिक बीमारी।

अनिवार्य : जिसका निवारण न किया जा सके, जिसके होने की बाध्यता हो। कॉलेज मेंप्रवेश लेने के लिए 50% अंक अनिवार्य है।

आवश्यक : जरूरी। यदि बेरोजगारी दूर करनी है तो कम पूंजी के उद्योगों को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

अनुरोध : किसी कार्य को करने का प्रार्थनायुक्त आग्रह।

प्रार्थना : अपने से बड़ों को किसी कार्य को करने का निवेदन। कार्य करवाने के लिए अधिकार भाव से, थोड़ी जिद्द के साथ निवेदन करना।

अस्त्र : फेंककर चलाए जाने वाले हथियार ; जैसे– तीर, बर्छी, गोला।

शस्त्र : हाथ में रखकर चलाए जाने वाले हथियार ; जैसे– तलवार

अवस्था : जीवन, शरीर अथवा पदार्थ की कोई स्थिति। बीमार की **अवस्था** कैसी हैं

आयु : जीवन की पूरी अवधि। आपकी **आयु** क्या है?

अनुराग : वस्तुओं के प्रति लगाव। उसका अपने घर की चीजों पर बहुत **अनुराग** है।

स्नेह : बड़ों का छोटों के प्रति प्रेम।

आसक्ति : किसी के प्रति विशेष मोह। उसकी रुपए में बहुत **आसक्ति** है।

प्रणय : स्त्री और पुरुष के बीच का प्रेम।

प्रेम : छोटे–बड़े सबके प्रति लगाव।

वात्सल्य : बड़ों का, विशेष रूप से माता–पिता का छोटे बच्चे के प्रति प्रेम।

अद्वितीय : जिसके समान कोई दूसरा न हो।

अनुपम : जिसकी किसी अन्य से तुलना न की जा सके।

बर्चना : फूल, दीप आदि से देवता की पूजा।

आराधना	:	मनोकांक्षा की पूर्ति हेतु अपने आराध्य की पूजा।
पूजा	:	वस्तुओं के अतिरिक्त भाव के साथ ईश्वर की प्रार्थना।
अभिनन्दन	:	एक समारोह में किसी का औपचारिक रूप से सम्मान।
स्वागत	:	किसी आए हुए व्यक्त का सम्मान।
अधिक	:	आवश्यक से ज्यादा। सब्जी में नमक **अधिक** हो गया।
काफी, पर्याप्त	:	सब्जी में नमक कम है क्या ? नहीं, **काफी है** (पर्याप्त) है।
अमूल्य	:	जिसका कोई मूल्य न आंका जा सके, किसी भी मूल्य पर प्राप्त न किया जा सके।
बहुमूल्य	:	जिसका बहुत मूल्य हो और वह मूल्य चुका कर प्राप्त की जा सकती हो।
अभिलाषा	:	किसी को प्राप्त करने की हार्दिक इच्छा।
इच्छा	:	किसी वस्तु को प्राप्त करने की साधारण चाह।
आवश्यकता	:	पूरी हो सकने योग्य इच्छा। उसे इतना वेतन मिलता है कि वह अपने परिवार की **आवश्यकताएं** पूरी कर सकता है।
कामना	:	अच्छे भाव की इच्छा। किसी विषय की प्राप्ति की इच्छा। मैं **कामना** करता हूँ कि आप प्रतियोगिता में विजयी रहें।
संकल्प	:	किसी कार्य को करने का दृढ़ निश्चय।
अपमान	:	किसी की प्रतिष्ठा को सायास ठेस पहुंचाना। छात्र ने अभद्र शब्द बोलकर एक दुकानदार का **अपमान** किया।
अवमानना	:	अनायास किसी की प्रतिष्ठा की हानि। बरात में हड़बड़ी में अतुल को टीका करना भूल गए, अतुल को बड़ी **अवमानना** महसूस हुई।
तिरस्कार	:	किसी वस्तु या व्यक्ति के सम्मान की उपेक्षा करना। छात्र ने अध्यापक से नमस्कार न कर उनका **तिरस्कार** किया।
अड़चन	:	अचानक आई बाधा।
अवरोध	:	जानबूझ कर खड़ी की गई बाधा।
आचार	:	व्यक्ति के चरित्र एवं चाल–चलन सम्बन्धी आचरण। उनके व्यवहार से ही पता लगता है कि उसके **आचार** और विचार दोनों ही ठीक हैं।
व्यवहार	:	दूसरों के साथ किया जाने वाला आचरण।
अनुमान	:	बौद्धिक तर्क द्वारा लिया गया निर्णय।
प्राक्कलन	:	भविष्य में होने वाले व्यय के बारे में गणनाक` सहारे किया गया अनुमान।
अपयश	:	यश के बाद होने वाली बुराई।
कलंक	:	समाज–विरोधी आचरण करने पर लांछन।
निन्दा	:	किसी के कार्यों की बुराई करना।

अनेकार्थक शब्द

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके एकाधिक अर्थ होते हैं तथा उनके भिन्न–भिन्न प्रयोगों से भिन्न–भिन्न अर्थ प्राप्त किए जाते हैं। हिन्दी के प्रमुख अनेकार्थक शब्द इस प्रकार हैं–

अंक	:	गिनती के अंक, अध्याय, भाग्य, चिह्न, देह, गोद, स्थान।
अक्ष	:	आंख, सूर्य, सर्प, चौसर के पासे, पहिया, आत्मा।
अक्षर	:	ब्रह्म, वर्ण, गगन, धर्म, सत्य, अविनाशी।
अज	:	ब्रह्मा, बकरा, दशरथ के पिता का नाम, जीव।
अनन्त	:	आकाश, शेषनाग, विष्णु।
अपेक्षा	:	इच्छा, आवश्यकता, आशा, बनिस्बत।
अधर	:	होंठ, शून्य, नीचा, मध्य।
अंबर	:	आकाश, वस्त्र।
अमृत	:	जल, पारा, दूध, स्वर्ण, घृत।
अर्थ	:	धन, प्रयोजन, कारण, लिए।
अपवाद	:	नियम के विरुद्ध, कलंक।
अरुण	:	लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी।
आपत्ति	:	विपत्ति, ऐतराज।
आम	:	आम का फल, सर्वसाधारण, मामूली।
आत्मा	:	बुद्धि, जीवात्मा, ब्रह्मा, देह, पुत्र, वायु।
इन्दु	:	चन्द्रमा, कपूर।
ईश्वर	:	प्रभु, समर्थ, स्वामी, धनिक।
उत्तर	:	जवाब, बदला, उत्तर दिशा।
कनक	:	सोना, धतूरा, गेहूं, पलाश, वृक्ष।
कर	:	हाथ, किरण, सूंड़, टैक्स।
कोट	:	पहनने का वस्त्र, गढ़, परकोटा, रंग चढ़ाने की प्रक्रिया।
कर्ण	:	कुंती–पुत्र, कान, पतवार, समकोण, त्रिभुज में सबसे बड़ी भुजा।
कल	:	बीता हुआ दिन, सुन्दर, चैन या शान्ति, पुर्जा, मधुर ध्वनि।
कला	:	अंश, गुण, चन्द्रमा का सोलहवां भाग।
काल	:	समय, मुहूर्त, अवसर, शिव, युग।
कुंभ	:	घड़ा, हाथी का मस्तक।
कूट	:	शिखर, छल–कपट, कागज़, पर्वत।
कोटि	:	करोड़, श्रेणी, धनुष का सिरा।
कृष्ण	:	वासुदेव–पुत्र, काला, कौआ, अंधकार।
केतु	:	ज्ञान, निशान, ध्वजा, एक ग्रह, चमक।
केश	:	बाल, विष्णु, विश्व, किरण।
क्रिया	:	कार्य, व्यापार, उपाय, व्यवहार, श्राद्ध।
क्षमा	:	पृथ्वी, सहिष्णुता, दया, रात्रि, दुर्गा।
क्षेत्र	:	खेत, शरीर, स्त्री, गृह, नगर।
खग	:	पक्षी, वायु, बाण, ग्रह, बादल, देवता, सूर्य, चन्द्रमा।
खर	:	दुष्ट, गधा, एक राक्षस, तीक्ष्ण, तृण, कौआ, बगुला।
खल	:	दुष्ट, धतूरा, दवा कूटने की खरल।
गण	:	समूह, रुद्र के अनुचर, सेना, छन्दशास्त्र के आठ गण।
गति	:	चाल, मोक्ष, स्थिति।
गुण	:	रस्सी, कौशल, स्वभाव, प्रत्यंचा, विशेषता।
गुरु	:	शिक्षक, बड़ा, श्रेष्ठ, भारी, दो मात्रा वाला स्वर, बृहस्पति।
गो	:	गाय, आँख, इन्द्रिय, बाण, बाल, स्वर्ग, भूमि, सूर्य, माता, बैल, सरस्वती।
घना	:	दाना, बादल, मोटा, हथौड़ा, कपूर, समान लम्बाई–चौड़ाई–मोटाई वाला आकार।
चश्मा	:	ऐनक, झरना।
छन्द	:	वेद, जल, रंग, अभिप्राय, एकांत, पदादि।
जगत्	:	संसार, पनघट, वायु, शंकर, टेक।
जलज	:	कमल, मोती, मछली, चन्द्रमा, सेवार, शंख।

The Institute जहाँ सेलेक्शन एक आदत है

पानी : जल, चमक, इज्जत।
पिण्ड : शरीर, पितरों के लिए देय, गोल, जीविका।
पुष्कर : कमल, पुष्कर नाम का एक तीर्थ, तालाब, हाथी के सुंड के आगे का भाग, आकाश, बाण।
पृष्ठ : पीठ, पन्ना, पीछे का भाग।
प्रकृति : स्वभाव, धर्म, माया, खजाना, राज्य, जन्म, स्वामी, मित्र।
प्रत्यय : विश्वास, ज्ञान, शब्द के बाद में जुड़ने वाला शब्दांश, निश्चय, कारण।
प्रभाव : असर, महिमा, सामर्थ्य, दबाव।
प्राण : प्राण वायु, जीव, ईश्वर, ब्रह्मा।
फल : परिणाम, वृक्ष से प्राप्त होने वाला खाद्य, चर्म, ढाल, सन्तान, मेवा।
बंसी : बांसुरी, मछली फंसाने का कांटा, विष्णु, कृष्णादि के चरण–चिह्न।
रस : आनन्द, प्रेम, स्वाद, अर्क, तत्व, भोजन के छह रस, काव्य के नौ रस, पारा, मेल।
महावीर : हनुमार, शक्तिशाली, जैन तीर्थंकर।
मधु : शहद, शराब, पराग, बसन्त, ऋतु।
मान : अभिमान, इज्जत, नाम–तौल।
मित्र : दोस्त, सूर्य, प्रिय, सहयोगी।
लगन : जौ, मुहूर्त, प्रेम, धुन।
लक्ष्य : निशाना, उद्देश्य।
वर : दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ, आशीर्वाद।
वर्ग : जाति, गणित की एक क्रिया, समूह।
वर्ण : रंग, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, अक्षर।
वर्तमान : विद्यमान, समय, प्रचलित।
वर्ष : साल, संवत्, दृष्टि, पृथ्वी का एक खण्ड।
विग्रह : देवता की मूर्ति, शरीर, लड़ाई
ब्याज : सूद, बहाना, छल।
शकल : आकृति, भाग, चिह्न, छिलका।
शिव : शंकर, मंगल, शुभ।
शेष : बचा हुआ, अन्त, सर्प, सीमा।
श्री : शोभा, लक्ष्मी, सम्पदा, कुंकुम, वाणी।
श्रुति : वेद, सुनना, वाद, कान।
सर : तालाब, सिर, पराजित।
सारंग : एक राग, मोर, सर्प, बादल, हरिण, पानी, चातक, सिंह, कामदेव, भौंरा, कमल, स्त्री, हंस, सुन्दर, कोयल, कपूर आदि।
सैंधव : घोड़ा, एक प्रकार के नमक का प्रकार।
हंस : मराल, सूर्य, जीवात्मा, घोड़ा, योगी, सफेद।
हरकत : चेष्टा, नटखटपन, गति।
हरि : विष्णु, बन्दर, सिंह, सूर्य यमराज, किरण, पर्वत, वायु, कोयला, सर्प, मेंढक, घोड़ा, चन्द्रमा।
हलधर : बलराम, किसान, बैल।
हीन : दीन, निकृष्ट, रहित।

The Institute

विलोम शब्द

'अ'

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अकाल	सुकाल	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अगम	सुगम	अर्पण	ग्रहण
अग्र	पश्च	अरुचि	सुरुचि
अग्रज	अनुज	अल्पायु	दीर्घायु
अघ	अनघ	अमृत	विष
अघोष	सघोष	अमर	मर्त्य
अतिथि	आतिथेय	अल्प	प्रचुर
अतल	वितल	अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक
अथ	इति	अलभ्य	प्राप्य, लभ्य
अर्थ	अनर्थ	अवर	प्रवर
अनन्त	अन्त	अवनति	उन्नति
अनुग्रह	दण्ड, कोप	अर्वाचीन	प्राचीन
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व	अवशेष	निःशेष
अनिवार्य	ऐच्छिक	अवनि	अंबर
अन्तरंग	बहिरंग	अवतल	उत्तल
अनुकूल	प्रतिकूल	अस्त	उदय
अनुराग	विराग	अक्षम	सक्षम
अनुरूप	प्रतिरूप	अज्ञ	विज्ञ
अनुलोम	प्रतिलोम	अपेक्षित	अनपेक्षित
अधम	उत्तम	अपेक्षा	उपेक्षा
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	अपयश	सुयश
अनुरक्त	विरक्त	अपमान	सम्मान
अल्पप्राण	महाप्राण	अपकार	उपकार
असीम	ससीम	अनाहूत	आहूत
अन्धकार	प्रकाश	अनुयायी	विरोधी
अनुक्रिया	प्रतिक्रिया		

'आ'

आग्रह	दुराग्रह	आगामी	विगत
आडम्बर	सादगी	आजादी	गुलामी
आच्छादित	अनाच्छादित	आदर	निरादर, अनादर
आचार	अनाचार	आदान	प्रदान
आलोक	अन्धकार	आकीर्ण	विकीर्ण
आक्रमण	प्रतिरक्षा	आकर्षण	विकर्षण, अनाकर्षण
आकाश	पाताल	आर्द्र	शुष्क
आगमन	प्रस्थान, निर्गमन	आदि	अन्त
आधार	निराधार	आतुर	निरातुर
आस्तिक	नास्तिक	आरम्भ	समापन
आवास	प्रवास	आवृत	अनावृत
आविर्भाव	तिरोभाव	आरूढ़	अनारूढ़
आहत	तिरस्कृत, निरादृत	आमिष	निरामिष
आहूत	अनाहूत	आशीर्वाद	अभिशाप
आरोह	अवरोह	आयात	निर्यात
आर्य	अनार्य	आभ्यन्तर	बाह्य
आनन्द	विषाद	आवर्तक	अनावर्तक
आश्रित	निराश्रित		

'इ'

इच्छा	अनिच्छा	इति (समाप्ति)	अथ (प्रारम्भ)
इहलोक	परलोक	इष्ट	अनिष्ट

'ई'

ईमानदार	बेईमान	ईश्वर	अनीश्वर

'उ'

उग्र	सौम्य	उदात्त	अनुदात्त
उत्तम	अधम	उचित	अनुचित
उदार	अनुदार	उत्कृष्ट	निकृष्ट
उपजाऊ	अनुपजाऊ	उपचय	अपचय
उपचार	अपचार	उपसर्ग	परसर्ग
उपयुक्त	अनुपयुक्त	उपकार	अपकार
उत्थान	पतन	उत्कर्ष	अपकर्ष
उन्मीलन	निमीलन	उन्नति	अवनति
उन्नत	अवनत	उन्मूलन	स्थापन, रोपण
उन्मुख	विमुख	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उत्तरायण	दक्षिणायण	उपत्यका	अधित्यका
उपचय	अपचय	उन्मुख	विमुख
उपस्थित	अनुपस्थित	उच्च	निम्न
उर्वरा	ऊसर	उत्साह	निरुत्साह
उत्पत्ति	विनाश	उद्धत	विनीत
उपमान	उपमेय	उदयाचल	अस्ताचल
उष्ण	शीतल	उर्ध्व	अध, अधर
ऊर्ध्वगामी	अधोगामी		

'ए'

एकता	अनेकता	एकत्र	विकीर्ण
एकतन्त्र	बहुतन्त्र	एकाधिकार	सर्वाधिकार
एकाकी	समग्र	एकाग्र	चंचल
एकल	सकल		

'ऐ'

ऐक्य	अनैक्य	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य, दारिद्रय	ऐहिक	पारलौकिक
ऐच्छिक	अनिवार्य		

'ओ, औ'

ओजस्वी	निस्तेज	औचित्य	अनौचित्य
औपचारिक	अनौपचारिक	औदार्य	अनौदार्य

'ऋ'

ऋजु	वक्र	ऋत	अनृत
ऋषि	संसारी		

'क'

कटु	मधुर	कठिन	सरल
कड़ा	नर्म, मुलायम	कड़वा	मीठा
कपटी	निष्कपट	कर्ता	अकर्ता
कदाचार	सदाचार	कलंकित	निष्कलंक
कपूत	सपूत	कल्याण	अकल्याण
कर्मण्य	अकर्मण्य	कनिष्ठ	वरिष्ठ, ज्येष्ठ
कल्पना	यथार्थ	कर्कश	कोमल
करुण	निष्ठुर	कच्चा	पक्का
कमी	बाहुल्य	कलुषित	निष्कलुष
कार्य	अकार्य	काला	गोरा, सफेद
कापुरुष	पुरुषार्थी	कारण	अकारण
कायर	शूरवीर	कानूनी	गैर–कानूनी
क्रिया	प्रतिक्रिया	कीर्ति	अपकीर्ति
कुरूप	सुन्दर	कुलीन	अकुलीन
कुपथ	सुपथ	कुबुद्धि	सुबुद्धि
कुलटा	पतिव्रता	कुकृति	सुकृति
कुख्यात	विख्यात	कुपथ	सुपथ
कुमार्ग	सुमार्ग	कुटिल	सरल
कुप्रबन्ध	सुप्रबन्ध	कोप	कृपा, अनुग्रह
कोमल	कठोर	क्रय	विक्रय
क्रम	व्यतिक्रम	क्रिया	प्रतिक्रिया
कृतज्ञ	कृतघ्न	कृष्ण	श्वेत
कृश	स्थूल	कृत्रिम	प्रकृत, आकृत्रिम
कृपा	कोप	क्रोध	क्षमा

'ख'

खरा	खोटा	खर्च	आमदनी
खरीद	बिक्री	खण्डन	मण्डन
खल	सज्जन, साधु	खगोल	भूगोल
खास	आम	ख्यात	कुख्यात
खाद्य	अखाद्य	खिलना	मुरझाना
खीजना	रीझना	खेद	प्रसन्न

'ग'

गगन	धरती	गत	आगत
गमन	आगमन	गर्मी	सर्दी
गरल	सुधा, अमृत	गरिमा	लघिमा
गम्य	अगम्य	गहरा	उथला
गहन	पुलिन	गम्भीर	वाचाल
गाढ़ा	पतला	गुण	अवगुण
गुप्त	प्रकट	गुरु	लघु
गुण	अवगुण, दोष	गेय	अगेय
गोचर	अगोचर	गौण	प्रधान, मुख्य
गौरव	लाघव	गौरक्षक	गौभक्षक
ग्रस्त	युक्त	ग्रहण	त्याग
ग्राह्य	त्याज्य	ग्राम	नगर
ग्रहीत	अगृहीत	गृहस्थ	संयासी
ग्रीष्म	शीत		

'घ'

घर	बाहर	घना	छितरा, बिखरा
घटाना	जोड़ना	घन	ठोस, तरल
घटित	अघटित	घाटा	मुनाफा
घात	प्रतिघात	घोष	अघोष
घृणा	प्रेम		

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।

'च'

चर	अचर	चल	अचल
चढ़ाई	उतराई	चतुर	मूढ़
चपल	गम्भीर	चाह	अचाह
चिकना	खुरदरा	चिर	अचिर
चिरंतन	नश्वर, नाशवान	चिरायु	अल्पायु
चिन्तित	निश्चिन्त	चेतन	अचेतन, जड़
चेतना	मूर्च्छा	चोर	साहूकार
चंचल	स्थिर		

'छ'

छद्म	व्यक्त	छली	निश्छल
छात्र	शिक्षक	छाया	धूप
छूत	अछूत	छोटा	बड़ा

'ज'

जड़	चेतन	जय	पराजय
जल	थल	जन्म	मृत्यु
ज्वार	भाटा	ज्योति	तम
जटिल	सरल	जाति	कुजाति
जागरण	निद्रा	जाग्रत	सुप्त
जाड़ा	गर्मी	जेय	अजेय
ज्येष्ठ	कनिष्ठ	जीवन	मृत्यु / मरण
जीत	हार	जंगम	स्थावर
जंगली	पालतू, घरेलू		

'झ'

झगड़ालू	शान्त	झीना	गाढ़ा
झूठ	सच	झोपड़ी	महल

'ट'

टूटना	जुड़ना	टोटा	नफा, फायदा

'ठ'

ठिगना	लम्बा	ठोस	तरल

'ड'

डरपोक	निडर		

'त'

तम	ज्योति	तरल	ठोस
तरुण	वृद्ध	व्यक्त	गृहीत / अव्यक्त
त्याग	ग्रहण	ताप	शीत
ताजा	बासी	तामासिक	सात्विक
तिमिर	प्रकाश	तीक्ष्ण	कुंठित
तीव्र	मन्द	तुकान्त	अतुकान्त
तुलनीय	अतुलनीय	तुच्छ	महान
तृप्त	अतृप्त	तृष्णा	वितृष्णा
तृषा	तृप्ति		

'थ'

थल	जल	थोक	खुदरा, फुटकर
थोड़ा	बहुत		

'द'

दण्ड	पुरस्कार	दरिद्र	सम्पन्न
दयालु	क्रूर, निर्दय	दया	क्रूरता, निर्ममता
दाखिल	खारिज	दास	स्वामी
दानव	देव	दाता	सूम
दानी	कृपण	दिन	रात
दिवा	रात्रि	दिव्य	अदिव्य
दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घकाय	कृशकाय
दुःख	सुख	दुर्जन	सज्जन
दुराचारी	सदाचारी	दुष्ट	भद्र, साधु
दुष्कर	सुकर	दुर्बल	सबल
दुर्लभ	सुलभ	दुष्प्राप्य	सुप्राप्य
दूषित	स्वच्छ	दैत्य	देव
द्वैत	अद्वैत	द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व

'ध'

धनी	निर्धन	धर्म	अधर्म
धवल	कृष्ण	ध्वंस	निर्माण
धनात्मक	ऋणात्मक	धनाढ्य	निर्धन
धीर	अधीर	धैर्य	अधैर्य
धूप	छाया	धृष्ट	विनीत

'न'

नकद	उधार	नख	शिख
नत	उन्नत	नमक हराम	नमक हलाल
नरक	स्वर्ग	नवीन	प्राचीन
नश्वर	शाश्वत	नागरिक	ग्रामीण
नादान	समझदार	नाश	निर्माण
नास्तिक	आस्तिक	निन्दा	स्तुति
निद्रा	जागरण	निकट	दूर
निडर	कायर	निर्गुण	सगुण
निराकार	साकार	निर्दय	सदय
निरामिष	सामिष	निरपेक्ष	सापेक्ष
निंद्य	बंध / श्लाध्य	निर्मल	मलिन
नियमित	अनियमित	निरर्थक	सार्थक
निरक्षर	साक्षर	निष्क्रिय	सक्रिय
निष्काम	साकाम	निषिद्ध	विहित, उचित
निश्चल	चंचल	निष्फल	सफल
निर्लज्ज	सलज्ज	नीरस	सरस
निश्चय	अनिश्चय, सन्देह	नूतन	पुरातन
न्यून	अधिक	न्यूनतम	अधिकतम
नैतिक	अनैतिक	नैसर्गिक	कृत्रिम

'प'

पठित	अपठित	पतन	उत्थान
परा	अपरा	परुष	कोमल
परतन्त्र	स्वतन्त्र	परकीय	स्वकीय

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है

पराधीन	स्वाधीन	परमार्थ	स्वार्थ
पश्चात्	पूर्व	पराया	अपना
पवित्र	अपवित्र	पतिव्रता	कुलटा
परितोष	दण्ड	पदोन्नत	पदावनत
पार	अपार	पालक	घालक
पाठ्य	अपाठ्य	पात्र	अपात्र, कुपात्र
पावन	अपावन	पाप	पुण्य
पाश्चात्य	पौर्वात्य	पूर्ण	अपूर्ण
पूरा	अधूरा	पूरस्कार	तिरस्कार
पुण्यात्मा	पापात्मा, पापी	पुरातन	नूतन
पुराना	नया	पुरुष	स्त्री
पूर्ण	अपूर्ण	पूर्ववर्ती	परवर्ती
पेय	अपेय	पूरा	अधूरा
प्रकाश	अन्धकार	प्रगति	अवनति
प्रत्यक्ष	परोक्ष	प्रधान	गौण
प्रभु	भृत्य	प्रसिद्ध	अप्रसिद्ध
प्रसारण	संकुचन	प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्रवेश	निर्गम	प्रजातन्त्र	राजतन्त्र
प्रतीची	प्राची	प्रमुख	सामान्य
प्रशंसा	निन्दा	प्रसन्न	अप्रसन्न
प्रसारण	संकोचन	प्रसाद	विषाद
प्रश्न	उत्तर	प्रातः	सायं
प्राचीन	अर्वाचीन	प्राची	प्रतीची
प्राकृतिक	अप्राकृतिक	प्रेम	घृणा

'फ'

फल	निष्फल	फैलना	सिकुड़ना
फूल	कांटा		

'ब'

बद्ध	मुक्त	बच्चा	बूढ़ा
बद	नेक	बढ़िया	घटिया
बर्बर	सभ्य	बलवान	निर्बल
बहादुर	डरपोक, कायर	बहिष्कार	स्वीकार
बहिरंग	अन्तरंग	बहुतायत	कमी, अभाव
बंजर	उर्वर	बंध्या	उर्वरा
बाढ़	सूखा	बैर	प्रीति

'भ'

भद्र	अभद्र	भला	बुरा
भय	साहस	भक्ष्य	अभक्ष्य
भाग्य	दुर्भाग्य	भाव	अभाव
भ्रान्त	अभ्रान्त	भारी	हल्का
भावी	अतीत	भिखारी	अमीर
भीत	निर्भय	भीड़	एकान्त
भीषण	सौम्य	भूत	भविष्य
भूरि	अल्प	भूषण	दूषण

भेद	अभेद	भोज्य	अभोज्य
भोला	चालाक	भोगी	योगी
भौतिक	आध्यात्मिक		

'म'

मग्न	दुःखी	मत	विमत
मधुर	कटु	मनुज	दनुज
मनुष्यता	पशुता	मलिन	निर्मल
मरण	जीवन	ममता	निष्ठुरता
मसृण	रुक्ष	महात्मा	दुरात्मा
महीन	मोटा	महंगा	सस्ता
मान	अपमान	मानव	दानव
मानवीय	अमानवीय	मान्य	अमान्य
मित	अपरिमित	मितव्यय	अपव्यय
मिथ्या	सत्य	मिलन	विछोह
मित्र	शत्रु	मुख	प्रतिमुख
मुख्य	गौण	मुनाफा	नुकसान
मुसीबत	आराम	मूक	वाचाल
मूल्यवान	मूल्यहीन	मेहमान	मेजबान
मेहनती	आलसी	मोटा	पतला
मौखिक	लिखित	मंगल	अमंगल
मन्द	तीव्र	मृदु	कठोर, कटु
मृत	जीवित		

'य'

यथार्थ	आदर्श, कल्पित	यश	अपयश
युक्त	अयुक्त	युगल	एकल
युद्ध	शान्ति	युवा	वृद्ध
योग	वियोग	योग्य	अयोग्य
योगी	भोगी	यौवन	बुढ़ापा, वार्धक्य

'र'

रचना	ध्वंस	रत	विरत
रति	विरति	रक्षक	भक्षक
राग	द्वेष, विराग	राजा	रंक, प्रजा
राहत	प्रकोप	रात्रि	दिवस
राक्षस	देवता	रिक्त	पूर्ण
रीता	भरा	रुदन	हास्य
रुग्ण	स्वस्थ	रोगी	निरोग
रंक	राजा		

'ल'

लघु	गुरु, दीर्घ	लचीला	कठोर
लभ्य	अलभ्य	लम्बा	चौड़ा
ललित	कुरूप	लाघव	गौरव
लाभ	हानि	लाभदायक	हानिकारक
लिखित	मौखिक	लिप्त	निर्लिप्त
लेन	देन	लोक	परलोक
लोभी	निर्लोभ	लौकिक	अलौकिक

'व'

वक्र	ऋजु	वंद्य	निंद्य
वरदान	अभिशाप	वन	मरु
व्यक्ति	समाज	व्यक्तिगत	सामाजिक
व्यष्टि	समष्टि	व्यर्थ	अव्यर्थ, सफल
वाद	विवाद	वादी	प्रतिवादी
विकास	ह्रास	विक्रय	क्रय
विकीर्ण	संकीर्ण	विख्यात	कुख्यात
विजय	पराजय	विजेता	विजित
विजित	अविजित	विधि	निषेध
विदाई	स्वागत	विद्वान	मूर्ख
विधवा	सधवा	विनत	उद्दण्ड
विनीत	उद्दण्ड, दुर्विनीत	विपदा	सम्पदा
विपत्ति	सम्पत्ति	विपन्न	सम्पन्न
विपुल	स्वल्प	विभव	पराभव
वियोग	संयोग	विरत	निरत
विरक्त	आसक्त	विराम	अविराम
विरोध	समर्थन	विलम्ब	अविलम्ब
विवादास्पद	निर्विवाद	विस्तार	संक्षेप
विस्तृत	संकुचित	विसर्जन	आवाहन
विस्मरण	स्मरण	विशिष्ट	साधारण, सामान्य
विश्वास	अविश्वास	विश्वासपात्र	विश्वासघाती
विश्लेषण	संश्लेषण	विशेष	साधारण
विज्ञ	अज्ञ	वीर	कायर
वेदना	आनन्द	वैतनिक	अवैतनिक
वैयक्तिक	निर्वैयक्तिक	वैमनस्य	सौमनस्य
वृद्धि	ह्रास, संक्षेपण	वृष्टि	अनावृष्टि

'श'

शकुन	अपशकुन	श्याम	शुक्ल
शयन	जागरण	श्यामल	गौर
श्वास	उच्छ्‌वास	श्लाघा	निन्दा
श्लील	अश्लील	शान्त	अशान्त
शायद	निश्चय, अवश्य	शासक	शासित
शिख	नख	शिक्षित	अशिक्षित
शिष्ट	अशिष्ट	शीत	उष्ण
शीर्ष	तल	शुभ	अशुभ
शुद्ध	अशुद्ध	शुष्क	आर्द्र
शूरवीर	कायर	शोक	हर्ष
शोषण	पोषण	श्रोता	वक्ता

'स'

सकाम	निष्काम	सगुण	निर्गुण
सच	झूठ	सचेत	अचेत
सजल	निर्जल	सजीव	निर्जीव
सज्जन	दुर्जन	सत्	असत्
सत्कार	तिरस्कार	सत्य	असत्य
सर्द	गर्म	सदाचार	कदाचार
सनातनी	प्रगतिशील	सफल	असफल, विफल
सबल	निर्बल	सभ्य	असभ्य
सम्मान	अपमान	सम	विषम
सम्मुख	विमुख	समष्टि	व्यष्टि
सम्भव	असम्भव	ससीम	असीम
सरल	कुटिल, दुष्कर	सरस	नीरस
सहमत	असहमत	सहयोगी	प्रतियोगी
सहानुभूति	घृणा	सक्षम	अक्षम
साकार	निराकार	सार्थक	निरर्थक
सादर	निरादर	साधर्म्य	वैधर्म्य
साधु	असाधु	सान्त	अनन्त
सापेक्ष	निरपेक्ष	साहस	भय
साहसी	भीरू, कायर	साक्षर	निरक्षर
सित	असित	स्थिर	अस्थिर
सुअवसर	कुअवसर	सुकर्म	दुष्कर्म, कुकर्म
सुख	दुःख	सुगम	दुर्गम
सुगन्ध	दुर्गन्ध	सुजान	अजान
सुन्दर	असुन्दर	सुबोध	दुर्बोध
सुबुद्धि	कुबुद्धि, दुर्बुद्धि	सुप्रबन्ध	कुप्रबन्ध
सुपुत्र	कुपुत्र	सुमति	कुमति
सुर	असुर	सुरीति	कुरीति
सुलभ	दुर्लभ	सुयोग	दुर्योग
सुक्ष्म	स्थूल	सौभाग्य	दुर्भाग्य
संकल्प	विकल्प	संकीर्ण	विस्तीर्ण
संग	विसंग	संगठन	विघटन
संगत	असंगत	संध्या	प्रातः
सन्तोष	असन्तोष	सन्देह	असन्देह
सन्धि	विग्रह	संशय	निश्चय
संयोग	वियोग	संयुक्त	वियुक्त
संक्षेप	विस्तार	संक्षिप्त	विस्तृत
संश्लिष्ट	विशिष्ट	स्मरण	विस्मरण
स्वकीय	परकीय	स्वर्ग	नरक
स्वजाति	विजाति	स्वदेश	विदेश, परदेश
स्वस्थ	अस्वस्थ	स्वार्थ	परार्थ, परमार्थ
स्वाधीन	पराधीन	स्वाभाविक	कृत्रिम
स्थावर	जंगम	स्थूल	सूक्ष्म
स्वीकृत	अस्वीकृत	स्पृश्य	अस्पृश्य
सृजन	संहार, विनाश	सृष्टि	प्रलय

'ह'

हरा	सूखा	हर्ष	विषाद
हार	जीत	हास	रुदन
हित	अहित	हिंसा	अहिंसा
हेय	ग्राह्य	होनी	अनहोनी
हंसना	रोना	हंसमुख	उग्र
हस्व	दीर्घ	ह्रास	वृद्धि

'क्ष'

क्षणिक	शाश्वत	क्षमा	दण्ड
क्षर	अक्षर	क्षय	अक्षय
क्षुद्र	विराट		

'ज्ञ'

ज्ञान	अज्ञान	ज्ञानी	अज्ञानी
ज्ञेय	अज्ञेय		

विविध

अंगीकरण	अनंगीकरण	अंगीकार	अनंगीकार
अंतिम	अनंतिम / आरंभिक		
उच्युत	च्युत	अज्ञ	विज्ञ / पज्ञ
अटल	डाँवाडोल / ढुलमुल		
अति	न्यून	अतुल	तुल्य
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	अत्यधिक	अत्यल्प
अद्यतन	पुरातन	अनंत	सांत / ससीम
अनिवार्य	निवार्य	अन्वय	अनन्वय
अपराध	निरपराध	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अमित	परिमित	अर्वाचीन	प्राचीन
अर्हता	अनहर्ता	अवकाश	अनवकाश
अवनत	उन्नत	अवशेष	निःशेष
अवसर	अनवसर	अन्वय	अनन्वय
अश्लील	श्लील	असूया	अनसूया
अहंकार	अनहंकार	अहंकारी	निरहंकार
आकीर्ण	विकीर्ण	आत्मनिर्भर	अनुजीवी / परजीवी
आपत्ति	सम्पत्ति	आपसदारी	दुजायगी
आद्य	अंत्य	आमंत्रित	अनामंत्रित
ईप्सित	अनीप्सित	उक्त	अनुक्त
उच्छवास	निःश्वास	उज्ज्वल	धूमिल
उत्तेजन	प्रशमन	उदार	अनुदार / कृपण
उदासीन	आसक्त	उन्मूलन	रोपण
उपरि	अधः		
उपरिलिखित		निम्नलिखित / अधोलिखित	
ऋत	अनृत	एकत्र	विकीर्ण
एकाग्रचित्त	अन्यमनस्क / दुचित्ता		
ऐक्य	अनैक्य	करुण	निष्ठुर
कर्ता	अकर्ता	कर्म	अकर्म
काज	अकाज	कामी	अकाम / निपकाक
कुरुप	सुरुप	क्रूर	अक्रूर
क्षणिक	शाश्वत	गौरव	लाघव
गुप्त	प्रकट	चिरंतन	नश्वर
चिरस्थायी	अल्पस्थायी	जंगम	स्थावर
जातीय	विजातीय	जारज	औरस
जितेंद्रिय	अजितेंद्रिय	तालीमयाफ्ता	जाहिल
दलित	अदलित	दिनांकित	अदिनांकित

नम्य	अनम्य	नराधम	नरपुंगव
नामवर	बदनाम	निंद्य	श्लाध्य
निरुद्ध	अनिरुद्ध	निषिद्ध	विहित
निरुजता	रुग्णता	पक्षपात	निष्पक्ष
पटु	अपटु	परार्थ	स्वार्थ
परिश्रम	विश्राम	प्रतिपन्न	अप्रतिपन्न
प्रवर	अवर	वाह्य	आभ्यंतर
बेमेल	संगत	भेद्य	दुर्भेद्य / अभेद्य
भ्रांत	विभ्रंति	मनुज	दनुज
मृसण	रुक्ष	मानवता	नृशंसता
मुनासिब	नमुनासिब	यर्थाथ	अयर्थाथ
यथेष्ट	कम	यशस्वी	अयशस्वी
यौवन	वार्धक्य	रचना	ध्वंश
रुक्ष	मृदु	वसंत	ग्रीष्म / पतझण
शानदार	शर्मनाक	शोषक	पोषक / शोषित
श्यामा	गौरी	श्रीगणेश	इतिश्री
संशयी	निःसंशयी	सक्रिय	अक्रिय
सचेष्ट	निःचेष्ट	सत्संग	कुसंग
सदाशय	दुराशय	समाप्त	असमाप्त
समाप्त	असमाप्त / व्यास	समास	व्यास
सशंक	निःशंक	सशस्त्र	निरस्त्र
सहयोगी	प्रतियोगी	सुदूर	संन्निकट
सुशील	दुःशील	सुषुप्ति	जागरण
स्याह	काला	स्वल्पायु	चिरायु
हत	आहत	एकांगी	सर्वांगीण
ओदीच्य	दाक्षिणात्य	छाया	आतप / धूप
जनाकीर्ण	जनहीन	ज्योतिर्मय	तमोमय
तन्वंगी	स्थूलंगी	तनय	तनया
दुर्दान्त	शांत	दूषित	सित
प्राची	प्रतीची	प्रशांत	उद्भ्रांत
भूमिका	उपसंहार	क्षिप्र	मंथर
यद्यपि	तदपि	युयुत्सा	मैत्री
विस्तारण	संकोचन	संभ्रम	संयम
संकलन	व्यकलन	समाधान	अवधान
झंकृत	निस्तब्ध	टीका	भाष्य
ईहा	अनीहा	प्रफुल्ल	म्लान
निःशंक	सशंक	याचित	अयाचित
यति	गृहस्थ	रव	नीरव
स्थायी	स्थानापन्न	सारथी	रथी
अगम	छिछला	अनुनासिक	अननुनासिक
अनृत	सत्य	अस्तेय	स्तेय
अश्लील	श्लील	उष्मीकरण	प्रशीतीकरण
उपमा	व्यतिरेक	ऋजु	वक्र
दृढ़	दोलायमान	ताप	शीत
कृश	पीन / स्थूल	आक्रमण	प्रतिरक्षा
आधार	आधेय / लंब	आदिष्ट	निषिद्ध
ओतप्रोत	विहीन	कोलाहल	शांत / नीखता

कुसुम	वज्र	ख्यात	अख्यात	सारथी	रथी	सुशील	दुःशील
गृहीता	दाता	ग्रंथित	विकीर्ण	श्लाघा	निन्दा	राग/अनुराग	विराग
घटक	समुदाय	छल	सारल्य	अनिवार्य	निवार्य	प्रासाद	पर्णकुटी
दोषमोचन	अभिशप्ति	देह	विदेह	शोषक	पोषक/शोषित	तमस	सात्विक/ज्योतिर्मय
निःसीम	ससीम	प्रभु	भृत्य	मानवता	नृशंसता	अर्थी	प्रत्यर्थी
पैना	भोथरा	विवस्त्र	सवस्त्र	ताण्डव	लास्य	विपुल	स्वल्प
समावेशन	अनावेशन	श्लाघा	निन्दा	गीर्ण	उद्गीर्ण	गोपन	प्रकाशन
अर्थी	प्रत्यर्थी	मानवता	नृशंसता	भ्रामक	निश्चयात्मक	युयुत्स	मैत्री
ताण्डव	लास्य	गोपन	प्रकाशन	संभ्रम	संयम	संदूषित	संशोधित
भ्रामक	निश्चयात्मक	संदूषित	संशोधित	आत्मीय	अनात्मीय	आकुंचन	प्रसारण
आत्मीय	अनात्मीय	आकुंचन	प्रसारण	कृश	पीन/पुष्ट	छादन	प्रकाशन
छादन	प्रकाशन	भंजक	योजक	टीका	भाष्य	भंजक	योजक
विधि	निषेध	विश्लेषण	संश्लेषण	विधि	निषेध	त्रिकुटी	भृकुटी
भौतिक	आध्यात्मिक	अतिथि	अतिथेय	अनुलोम	विलोम/प्रतिलोम	अनिवार्य	निवार्य/वैकल्पिक
राग/अनुराग	विराग	अभिज्ञ/भिज्ञ	अनभिज्ञ	मूक	वाचाल/मुखर	करुण	निष्ठुर/निष्करुण
अज्ञ	विज्ञ	ईषत	अलम	जागृति	सुषुप्ति	भौतिक	आध्यात्मिक
क्रम	व्यतिक्रम	घरेलू	बनैला	विश्लेषण	संश्लेषण	अतिथि	अतिथेय
चिन्मय	जड़	प्रज्ञ	मूढ़	राग/अनुराग	विराग	अभिज्ञ/भिज्ञ	अनभिज्ञ
लुभावना	घिनौना	भूलोक	द्युलोक	अज्ञ	विज्ञ	ईषत्	अलम
पूर्ववत्	नूतनवत्	बद	नेक	उर्वर	अनुर्वर/ऊसर/बंजर		
भूचर	खेचर	मानक	अमानक	क्रम	व्यतिक्रम	घरेलू	बनैला
वन	मरु	षंडत्व	पुसंत्व	चिन्मय	जड़	ज्योतिर्मय	तमोमय
संग	निःसंग	षंड	मर्द	दुर्दान्त	शांत	द्रुत	मंथर
सुभग	दुभग	गृहीत	त्यक्त	निषिद्ध	विहित	प्रज्ञ	मूढ़
चिरंतन	नश्वर	ताना	भरनी	लुभावना	घिनौना	लिप्त	अलिप्त/निर्लिप्त
नश्वर	शाश्वत	अभिमान	निरभिमान	शालीन	उद्धत/धृष्ट	श्लील	अश्लील
कुलदीप	कुलांगार	स्वादिष्ट	निःस्वाद	घन	तरल	स्थिर	चंचल
गहन	पुलिन	अनवधान	सावधान	हत	अहत	व्यस्त	मुक्त
अस्तेय	स्तेय	आक्रमण	प्रतिरक्षा	सहचर्य	पृथक्करण	आक्रमण	प्रतिरक्षा
आधार	आधेय/लंब	आदिष्ट	निषिद्ध	पाश्चात्य	पौर्वात्य	प्रसाद	विषाद
ओतप्रोत	विहीन	आत्मनिर्भर	अनुजीवी/परजीवी	भूलोक	द्युलोक	पूर्ववत	नूतनवत्
अस्तित्व	अनस्तित्व	ईहा	अनीहा	परार्थ	स्वार्थ	बद	नेक
उत्सुक	अनुत्सुक	उपमा	व्यतिरेक	भ्रांत	निभ्रांति	पता	खोज
उदासीन	आसक्त	कोलाहल	नीरवता	मानक	अमानक	विवाद	निर्विवाद/निर्णय
कुसुम	वज्र	ख्यात	अख्यात	बसंत	पतझड़	विरत	निरत/शत
ग्रहीता	दाता	ग्रंथित	विकीर्ण	विसर्जन	सर्जन	वन	मरु
घटक	समुदाय	छल	सारल्य	षंडत्व	पुंसत्व	षंड	मर्द
झंकृत	निस्तब्ध	टकसाली	सामान्य	संग	निःसंग	समाज	व्यक्ति
दृढ़	दोलायमान	दोषमोचन	अभिशप्ति	संश्लिष्ट	विश्लिष्ट	सुभग	दुभग
देह	विदेह	निरुद्ध	अनिरुद्ध	सुराज	दुराज	अंगीकार	अस्वीकार
निःसीम	ससीम	निःशंक	सशंक	अथ	अनथ	आगम	लोप
परायंत	स्वायंत	प्रभु	भृत्य	इकट्ठा	अलग	ऊधम	विनय
पैना	थोधरा	ममता	निर्ममता	उपमा	अनुपमा	गृहीत	व्यक्त
रनिवास	सेविका–वास	यथेष्ट	स्वल्प	चिरंतन	नश्वर	ताना	भरनी
विवस्त्र	सवस्त्र	समावेशन	अनावेशन	नश्वर	शाश्वत		

The Institute
जहाँ सलेक्शन एक जिद है

तत्सम–तद्भव

(अ, आ, इ, ...)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अकार्य	अकाज	अक्षवाट	अखाड़ा
अग्रपद	अगुआ	अग्निष्ठिका	अंगीठी
अज्ञान	अजान	अक्षि	आँख
अश्रु	आँसू	अमूल्य	अमोल
अक्षर	अच्छर	अट्टालिका	अटारी
अन्यत्र	अनत	अमरुत	अमरूद
अग्नि	आग	अशीति	अस्सी
अवगुण	औगुन	अंक	आँक
अर्द्ध	आधा	अर्पण	अरपन
अर्क	आक	अमावस्या	अमावस
अगम्य	अगम	अमृत	अमिय
अनार्य	अनाड़ी	अंश	अंस
अन्नाथ	अनाज	अंगरक्षक	अंगरखा
अँगुली	अँगुरी	अंधकार	अंधियारा
अंध	अन्धा	अग्रहायण	अगहन
अवतार	औतार	अद्य	आज
अगणित	अनगिनत	अग्रणी	अगाड़ी
अंगुष्ठ	अँगूठा	अवघट	औघर
अम्लिका	इमली	आश्विन	आसिन
आशा	आस	आत्मा	आप
आश्रय	आसरा	आदेश	आदेस
आषाढ़	आसाढ़	आशीष	आसीस
आदित्यवार	इतवार	आभीर	अहीर
आमलकः	आँवला	आलस्य	आलस
आलुक	आलू	आम्र	आम
आखेट	अहेर	इसिका	ईंट
ईक्षु	ईख	ईन्धन	इन्धन
ईर्ष्या	ईर्षा	उत्साह	उछाह
उपाध्याय	ओझा	उलूक	उल्लू
उष्ट्र	ऊँट	उलूखन	ओखली
उल्लास	हुलास	उपवास	उपास
उपालम्भ	उलाहना	उद्वर्तन	उबटन
उच्च	ऊँचा	उपाख्यान	उपखान
ऊर्ण	ऊन	एला	इलायची
एकादश	ग्यारह	ऐक्य	एका
ओष्ठ	होठ	औदक	ओदा

(क वर्ग)

कच्चपुरिका	कचौड़ी	कज्जल	काजल
कूप	कूआँ	कषपट्टिका	कसौटी
कास	खाँसी	कर्त्तरी	कैंची
कर्पूर	कपूर	कार्य	काज
कोटि	करोड़	कपाट	किवाड़
काष्ठ	काठ	कुक्षि	कोख
कार्तिका	कातिक	क्लेश	कलेश
कण	कन	काक	कौआ
कंकन	कंगन	कोण	कोना
कदली	केला	कंडुर	करेला
कपर्दिका	कौड़ी	कथावत	कहावत
काँस्यकार	कसार	किंचित	कुछ
कोष्ट	कोठा	कैवर्त	केवट
कुमार	कुँअर	कुचिका	कूची

कच्छप	कछुआ	कन्दुक	गेंद
कृषक	किसान	कोकिल	कोयल
क्रूर	कूर	कल्लोल	कलोल
कुक्कुर	कुत्ता	कुष्ठ	कोढ़
कर्ण	कान	कुपुत्र	कपूत
केशरी	केहरी	कर्त्तव्य	करतब
कंटक	काँटा	कर्पट	कपड़ा
कटुक	कड़ुआ	कर्म	काम
कुम्भकार	कुम्हार	कटाक	कड़ाह
कर्त्तन	कतरन	कर्पास	कपास
कुटुम्ब	कुटुम	कीर्ति	कीरति
क्षेत्र	खेत	क्षति	छति
क्षार	खार	क्षीण	छीन
क्षण	छन	क्षत्रिय	खत्री
क्षुर	खुर	क्षुरिका	छुरी
क्षीर	खीर	क्षमा	छमा
क्षुरप्र	खुरपा	क्षेप	खेप
खट्वा	खाट	खर्जूर	खजूर
गड्डलिका	गड़रिया	गर्गर	गागर
ग्राहक	गाहक	गात्र	गात
ग्रंथि	गाँठ	गो	गाय
गृष्ट	घूँट	गृध्र	गिद्ध
गर्भिणी	गाभिन	गर्जन	गरजन
गुर्जर	गूजर	गुम्फ	गूँथन
गैरिक	गेरुवा	गौर	गोरा
गोधूम	गेहूँ	गोमय	गोबर
गुहा	गुफा	गायक	गवैया
ग्राम	गाँव	गुटिका	गुड़िया
गजेन्द्र	गयन्द	गोस्वामी	गुसाई
गर्दभ	गदहा	गुण	गुन
गम्भीर	गहरा	ग्रह	गेह
गोपाल	ग्वाल	गृह	घर
गृहिणी	घरनी	गुच्छ	गुच्छा
घटी	घड़ी	घृत	घी
घट	घड़ा	घृणा	घिन
घोटक	घोड़ा	घोङ्घ	घोंघा

(च वर्ग)

चर्म	चमड़ा, चाम	चित्रकार	चितेरा
चर्मकार	चमार	चित्रक	चीता
चतुर्थ	चौथा	चतुष्क	चौक
चतुष्कोण	चौकोर	चैत्र	चैत
चिक्कण	चिकना	चंचु	चोंच
चर्मकार	चमार	चौर	चोर
चन्द्रिका	चाँदनी	चक्रवाक	चकवा
चूर्ण	चूरन	चतुष्पद	चौपाया
चतुर्दश	चौदह	चतुर्दिक	चहुँओर, चहुँदिसि
चन्द्र	चन्दा	चुम्बन	चूमना
चक्र	चाक	चर्वण	चबाना
चछ	चख	छत्र	छाता
छाँह	छाया	छिद्र	छेद
छेदनम	छेनी	ज्येष्ठ	जेठ
ज्योति	जोति	जन्यवास	जनवास
जन्म	जनम	जम्बुल	जामुन
जीर्ण	जीरन	जीरक	जीरा

The Institute
जहाँ सलेक्शन एक जिद है

चिह्वा	जीभ	जंघा	जाँघ
जगत्	जग	जामाता	जमाई
जाड्य	जाड़ा	जंभ	जबड़ा
ज्ञानी	ग्यानी	ज्ञान	ग्यान

(ट वर्ग)

टंकशाला	टकसाल	टंक	टाका
टंग	टाँगा	टिट्टिभ	टिटिहरी
टिक	डिग	ठक्कुर	ठाकुर
डाकिनी	डायन	डिब	डिब्बा
डयन	डैना	डोरक	डोरा
ढक्का	ढकना	ढुंढन	ढूंढ़ना

(त वर्ग)

तृण	तिनका	ताम्र	ताँबा
तिलक	टीका	तुंड	ठुड्डी
तुच्छ	टुच्चा	तुन्द	तोंद
तिक्त	तीता	तीक्ष्ण	तीखा
तप्त	तपना, तपन	त्रयोदश	तेरह
ताम्रचूड़	तमचूर	तालक	ताला
तैल	तेल	ताम्बूल	पान
तपस्वी	तपसी	ताम्बूलिक	तमोली
त्वरित	तुरन्त	तीर्थ	तीरथ
तंदुल	तन्दुल	त्रिकाष्ठ	टिकठी
त्रुट	टूट	त्रोटक	टोटका
थुत्कार	थुथकार	थुवर्ण	थूरना
दीपक	दीया	दंड	डंडा
दृष्टि	दीठि	द्रष्टा	डाढ़
द्विपर	दुपट्टा	दूर्बा	दूब
दुग्ध	दूध	द्रम्म	दाम
द्रोण	दोना	दक्ष	दच
दैव	दई	द्वौ	दो
दधि	दही	दृक	दृग
द्वादश	बारह	दाह	डाह
दंश	डंक	दुर्बल	दुबला
दद्रू	दाद	द्विपहरी	दुपहरी
दक्षिण	दाहिना	दीपावलि	दिवाली
दुःख	दुख	द्विवेदी	दुबे
दन्तधावन	दातून	द्विगुण	दूना
दोरक	डोरा	दोलिका	डोली
द्यूतम्/युक्त	जुआ	द्यूतकारिक	जुआरी
धैर्य	धीरज	धनश्रेष्ठि	धन्नासेठ
धर्तूर	धतूरा	धात्री	दाई
धूलि	धूरि	धूम्र	धुआँ
धौत्र	धोती	धर्म	धरम
धान्य	धान	धर	धुर
धृत	धड़	धृष्टता	ढिठाई
निम्ब	नीम	नृत्य	नाच
नापित	नाई	निद्रा	नींद
नारिकेल	नारियल	निम्बुक	नींबू
नप्ता	नाती	निर्झर	झरना
नासिक/नक्र	नाक	नव्य	नया
नस्य	नस	नकुल	नेवला
नक्षत्र	नखत	नयन	नैन
निष्ठुर	निठुर	नक्र	नाक

(प वर्ग)

पक्व	पका	पंजर	पिंजरा
पौत्री	पोती	पत्र	पता
पृष्ठ	पीठ	पण्डित	पाँड़े
पक्ष	पाख	पक्षी	पंछी
परीक्षा	परख	पित्तल	पीतल
पिप्पल	पीपल	पौष	पूस
पर्ण	पान	प्रहर	पहर
पूर्ण	पूरा	पुष्कर	पोखर
परमार्थ	परमारथ	पानीय	पानी
पक्वान्न	पकवान	प्रस्वेद	पसीना
प्रतिवास	पड़ोस	पूर्व	पूरब
पक्व	पका	परश्वः	परसों
पिपासा	प्यासा	पुष्प	पुहुप, फूल
पाश	फाँस/फन्दा	पारद	पारा
पीत	पीला	पुस्तिका	पोथी
पुत्र	पूत	पूपक	पुआ
पूपालिका	पूड़ी	पार्श्ववती	पड़ोसी
पर्यक	पलंग	पाषाण	पाहन
पाद	पैर	प्रिय	पिया
प्रतिच्छाया	परछाई	प्रस्तर	पत्थर
पर्पट	पापड़	पक्ष	पंख
स्पर्श	परस	पंक्ति	पंगत/पाँत
पुच्छ	पूँछ	पुत्रवधू	पतोहू
पर्पटा	पराठा	पन्थ	पथ
पर्पटिका	पपड़ी	पुराण	पुरान
परशु	फरसा	पश्चात्ताप	पछताना
प्रहरी	पहरुआ	प्रहेलिका	पहेली
फाल्गुन	फागुन	फुल्लवाटिका	फलवाड़ी
फुप्फुस	फेफड़ा	वंशी	बाँसुरी
बीटक	बीड़ी	बकुलश्री	मौलश्री
बालुका	बालू	बुभुक्षा	भूख
बधिर	बहिर	बन्ध	बाँध
बिन्दु	बिन्दी	बज्रांग	बजरंग
बन्ध्या	बाँझ	भण्डागार	भंडार
भद्रक	भला	भद्र	भला
भ्रमर	भौंरा	भीष्म	भीसम
भ्रातृवधू	भाभी	भ्रातृजा	भतीजी
भाण्डागारिक	भंडारी	भाद्र	भादो
भ्रातृ	भाई	भ्रू	भौं
भागिनेय	भानजा	भ्रम	भरम
भिक्षा	भीख	भिक्षाकारी	भिखारी
भिक्षुक	भिच्छुक	भ्रातृजाया	भावज
भल्लुक	भालू	भगिनीपति	बहनोई
भगिनी	बहिन	मकर	मगर
मस्तक	माथा	मातुल	मामा
मामिका	मामी	मृत्यु	मौत
मित्र	मीत	मेघ	मेह
मयूर	मोर	मास	महीना
मानुष	मानुस	मुख	मुँह
मुद्गरिका	मुँगरी	मूल्य	मोल
मुषल	मूखल	मर्कटक	मकड़ी
मशक	मच्छर	मार्ग	मारग
मक्षिका	माखी	मुक्ता	मोती
महिष	भैंस	मृगांक	मयंक
मिष्ठान्न	मिठाई	मल	मैल
महार्घ	महँगा	मधूक	महुआ
मंचिका	मचिया	मृत्तिका	माटी

The Institute

(य, र, ल, व)

यमुना	जमुना	यव	जौ
यम	जम	योगी	जोगी
यन्त्र	जन्त्र	यूथ	जत्था
यज्ञोपवीत	जनेऊ	युवा	जवान
यजमान	जजमान	यौवन	जोबन
रक्तिका	रत्ती	राजपुत्र	राजपूत
रात्रि	रात	राज्ञी	रानी
राशि	रास	रज्जु	रस्सी
रक्षा	राखी	रिक्त	रीता
लज्जा	लाज	लौहकार	लुहार
लौह	लोहा	लवंग	लौंग
लम्बक	लम्बा	लवण	नौन
लोष्ट	लोढ़ा	लोमश	लोमड़ी
वेदना	बेदना	विवाह	विआह
वन	बन	वरयात्रा	बारात
वर्तिका	बत्ती / बाती	विग्रह	बिगाड़
विष्टा	बीट	व्यथा	विथा
विद्युत	बिजली	वधू	बहू
वत्स	बच्चा	वट	बड़
व्याघ्र	बाघ	वणिक	बनिया
वंश	बाँस	वृद्ध	बुड्ढा
वक	बगुला	वानर	बन्दर
वृश्चिक	बिच्छू	वाष्प	भाप
वीरवनिता	मैयरबानी	वर्ष	बरस
वर्धकिन	बढ़ई	व्याख्यान	बखान
वारिद	बादल	वार्त्ता	बात
वातुलक	बावला	वाराणसी	बनारस
वाद्य	बाजा	विग्रह	बीघा
विल्व	बेल	वेश	भेस

(श, ष, स, ह)

शकुन	सगुन	शकट	छकड़ा
शलाकिका	सलाई	श्यालक	साला
शत	सौ	श्वसुर	ससुर
शिक्षा	सीख	शय्या	सेज
श्रावण	सावन	शर्करा	शक्कर
श्रृंगार	सिंगार	शाक	साग
श्वास	साँस	शुष्क	सूखा
शूकर	सूअर	शून्य	सूना
शप्तशती	सतसई	शीतल	सीतल
श्यामल	साँवला	श्वश्रृ	सास
शाप	श्राप, सराप	शुण्ड	सूँड़
शुण्ठिका	सोंठ	श्रद्धा	साध
श्रृंगाल	सियार	शैक्ष्य	सीख
श्रृंग	सींग	श्रावणी	सावनी
श्रेष्ठिन	सेठ	षंड	साँड़
षट्	छः	षट्कोना	छकोना
षट्राग	खटराग	षट्वांग	खटवांग
षष्ठ	छठा	षोडस	सोलह
स्कंध	कंधा	स्फोटक	फोड़ा
स्कन्धभार	कहार	स्फूट	फूट
स्तम्भ	खंभा	स्तन	थन
स्थानक	थाना	स्वामी	साईं
स्थापन	ठप्पा	सज्जा	साज
साक्षी	साखी	सपत्नी	सौत
सर्प	साँप	संदंशिका	सँड़सी
सूर्य	सूरज	सन्धि	सेंध
सप्तशती	सतसई	सूत्र	सूत
सूची	सूई	स्वप्न	सपना
सर्सप	सरसों	संध्या	शाम
सौराष्ट्रक	सोरठा	हस्ति	हाथी
हरिण	हिरन	होलिका	होली
हिण्डोला	हिड़ोरा	हरिद्रा	हल्दी
हट्टताल	हड़ताल	हस्त	हाथ
हास्य	हँसी	हत्याकार	हत्यारा
हस्तिनी	हथनी	हृदय	हिया

खाद्य सामग्री

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
गाजर	गृज्जन	कोदो	कोद्रव
काढ़ा	क्वाथ	कटहल	कंटफल
इमली	अमलिका	इलाइची	एला
हींग	हिंगु	हरण	हरीतकी
हल्दी	हरिद्रा	ईख	इक्षु
अफीम	अहि–फेन	आवला	आमलकः
अदरक	आर्द्रक	अखरोट	अक्षोट / अक्षोर
अण्डी	एरंडी	गेहू	गोधूम
घी	घृत	चना	चणक
चूना	चूर्ण	जौ	यव
जामुन	जुबुल / जंबु	तेदुल	तेन्दुल
कैथा	कपित्थ	अजवाइन	यवनिका
कचोड़ी	कच्चपुरिका	कुआ	कूप
मक्खन	म्रक्षण	बेर	बदरी
बेल	बिल्व	सेम	शिम्बा
सोठ	शुष्ठि	दही	दधि
दाख	द्राक्षा	पराठा	पर्पटा
पापड़	पर्पट	सरसों	सर्षप
फिटकरी	स्फटिक	महुआ	मधूक
लहसुन	लशुन	लौंग	लवंग
मूग	मुदग	धनिया	धनिका
धान	धान्य	नारियल	नारिकेल
नीम	निम्ब	नीबू	निम्बक
पान	पर्ण	पीपल	पिप्पल
केला	कदली	खजूर	खर्जूर
कपास	कर्पास	करेला	कंदुर
कुम्हड़ा	कुष्माण्ड		

पशु–पक्षी

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
गिद्ध	गृध्र	गोह	गोधा
कुत्ता	कुक्कुर	कीड़ा	कीटक
ऊट	उष्ट्र	कोयल	कोकिल
तोता	सुआ / शुक	कौवा	काकः
घोड़ा	घोटक	चकवा	चक्रवाक
चिड़िया	चटिका	टिटिहरी	टिट्टिभी
तीतर	तिन्तिरि	नेवला	नकुल
वंदर	वानर	वगुला	वक
बछड़ा	वत्स	वाघ	व्याघ्र
विच्छू	वृश्चिक	बैल	बलीवर्द
बटेर	बर्तक	भालू	भल्लुक
भैस	महीष	मक्खी	मक्षिका
मछली	मत्स्य	मोर	मयूर

मच्छर	मत्सर	सूवर	शूकर
सुआ	शुक	केकड़ा	कर्कट
चीता	चित्रक	लोमड़ी	लोमश
सियार	शृगाल		

सगे–संबंधी

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
बढ़ई	वर्द्धकी / वीर्ध	पोती	पौत्री
पोता	पौत्र	पंसारी	पण्यशालिक
नन्दोई	ननांदृपति	नाई	नापित
नाथ	नस्ता	पतोहू	पुत्र वधु
परपोती	परपौत्री	परपोता	परपौत्र
पुजारी	पुजाकारी	पूत	पुत्र
वच्चा	वत्स	बनिया	वणिक
बुआ	पितृश्वसा	मौसी	मातृश्वसा
ग्वाला	गोपालक	कसेरा	कांस्यकार
ओझा	उपाध्याय	अहीर	आभीर
चमार	चर्मकार	चितेरा	चित्रकार
डाइन	डाकिनी	पिता	तात
माता	मातृ	भाई	भातृ
तमूलिक	ताम्बूलिक	दाई	धात्री
दमाद	जमाता	वहनोई	भगिनीपति
दूल्हा	दुर्लभ	देवर	द्विवर
भतीजा	भ्रातृण्य	भतीजा	भ्रातृजा
भांजा	भगिनेय	भाभी	भ्रातृभार्या
भावज(भौजाई)	भ्रातृजाया	साढू	श्यालीवाट
साला	श्याक / श्यालक	सास	श्वश्रु
ससुर	श्वसुर	ससुराल	श्वसुरालय
चौबे	चतुर्वेदी	दूबे	द्विवेदी
केवट	कैवर्ट	नाना	मातमह
नानी	मातमही	मामा	मातुल
मामी	मातुली / मातुला		

शरीर

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
कोहनी	कफोणी	कोख	कुक्षि
आख	अक्षि	अंगूठा	अनुत्थ
अंतड़ी	अंत्र	कान	कर्ण
घाव	घात	चाम	चर्म
चूमना	चुम्बन	जीफ	जिह्वा
जांघ	जंघा	नाखून	नख
नाक	नक	पैर	पदिर
कुदारी	कुदाल	अंगीठी	अग्निष्ठिका
अगौछा	अंगप्रौछा	ऊन	ऊर्णा
उबटन	उद्वर्तन	ईट	इसिका
गर्मी	धर्म	घड़ा	घट
घड़ी	घटिका	ताबा	ताम्र
दोना	द्रोण	दुपट्टा	द्विपर
काजल	कज्जल	अँगरखा	अंगरक्षक
अँगूठी	अंगुष्ठिका	अखाड़ा	अक्षवाट
अगहन	अग्रहायन / अग्रहायण		
अधूरा	अर्थपूरक	अनाड़ी	अनार्य
अनूठा	अनुत्थ	अपाहज	अपादहस्त
अलग	अलग्न	आँच	अर्चि
आरसी	आदर्शिका / आदर्श		
आवा	आपाक	औधा	अवमूर्ध
ईंधन	इन्धन	ऊगना	उद्गत

उगलना	उद्गलन	उछाह	उत्साह
उजाला	उज्ज्वल	ऊखल	उदखल
एकलौता	एकलपुत्रः	ऐसा	ईदृश
ओस	अवश्याय	ओला	उपल
कंगन	कंकण	कंघी	कंकटी
कटघरा	काष्टगृह	कठपुतली	काष्टपुतलिका
कपड़ा	कर्पट	कुपूत	कुपुत्र
करोड़	क्रोटि	कल	कल्य
कसौटी	कर्षपाट्टिका	कहाँ	कुत्रस्थ
कहार	सकंधभार	कहानी	कथनिका
कौर	कवल	केहरी	केशरी
कोस	क्रोश	कंचन	कांचन
कोढ़ी	कुष्ठी	खण्डहर	खण्डगृह
खत्री	क्षत्रिय	खाँज	खर्जू
खाट	खट्वा	खेत	क्षेत्र
खेती	क्षेत्रित	खैर	खदिर
खुर	क्षुर	खाट	क्षार
खीर	क्षीर		
गवार	ग्रामीण / ग्राम+कार / ग्रामक्कार		
गोबर	गोविट / गोमय		
गागर	गर्गर	गुफा	गुहा
गेंद	कंदुक	गोंद	क्रोड
गोना	गमन	गाणी	गार्ट
गेरु	गैरिक	गड्ता	गर्त
धाम	धर्म	घुँघची	गुञ्चा
घूघट	गुंठन	घटनी	गृहणी
घुन	घुण	चबाना	चवर्ण
चोंच	चञ्चु	चौक	चुयक
चौखट	चनुयकाठ	चख	चक्षु
चाक	चक्र	छत	छत्र
छकड़ा	शकट	छाता	छत्रक
छिलका	शकल	छति	क्षति
जत्था	यूथ	जम्हाई	जृम्भिका
जाड़ा	जाड्य	जुआ	युक्त
जैसा	यादृश	तैसा	तादृश
जोबन	यौवन	जंगला	वातायन
जगुति	युक्ति	झरना	निर्झर
झरोखा	जालक	झील	क्षीर
तकशाल	टंकशाला	ठंडा	स्तब्ध
ढीला	शिथिल	तलवार	तरवारि
ताकना	तर्कन	ताव	ताप
तेरा	तब+केर	तोद	तुंद
त्यौहार	तिथिवार	थम्ब	स्तम्भ
थन	स्तन	थामना	स्तम्भन
थोड़ा	स्तोक	थाली	स्थाल
दाढ़	दंष्ट्रा	दाढ़ी	दंष्ट्रिका
दूध	दुग्ध	दूब	दूर्वा
दूना	द्विगुण	आधा	अर्ध
देखना	दृश+पेक्षण	धुआ	धूम / धूम्र
धरती	धरित्री	दीठ	दृष्टि
दाख	द्राक्षा	नरसो	अन्यपरश्व
नस	नस्या	नहना	नखहरण
नाघना	लंघन	निडर	निर्दर
नैहर	ज्ञातिगृह	नोचना	लुंचन
नाप	मापन	पंख	पक्ष
पकवान	पक्वान्न	पखवारा	पक्ष+वार
पड़ोस	प्रतिवेश	परकोटा	परिकूट

परनाला	प्रणाल	परसो	परश्व	मूदना	मुद्रण	मौर	मुकुट
पलंग	पर्यंक	पल्ला	पल्लव	मंहगा	महार्घ	मसहरी	भशकहरी
पसीना	प्रस्विन्न	पहचान	प्रत्यभिज्ञान	रस्सी	रश्मि	रहट	अरहट्ट
पहनना	परिधान	पहला	प्रथिल	राख	क्षार	रीठा	अरिष्ट
पहुँच	प्रभुत्व	पानी	पानीय	रुख	वृक्ष	रसोई	रसवती
पिटारा	पिटक	पाहुना	प्राघूर्ण	राखी	रक्षिका	लंगड़ा	लंग
पोखरा	पुष्कर	पगहा	प्रग्रह	लगोंट	लिंगपट्ट	लकड़ी	लगुड़
पैदल	पदाति	परछाई	प्रतिच्छाया	लखपति	लक्षपति	लेई	लेपिका
फरुआ	परशु	फांसी	पाशिका	लोहा	लौह	लाठी	लगुड़ + यष्टि
फूल	फुल्ल	बहिरा	वधिर	सँड़शी	संदेशिका	सगा	स्वक
बहेड़ा	विभीतिका	बाग	वल्गा	सत्तू	सक्तु	समेटना	समावर्तन
बालू	बालुका	बावला	वातुल	सलाई	शलाका	सहिजन	शोभांजन
बिकना	विक्रयण	बीघा	बिग्रह	सहेली	सहहेलनी	सांकल	शृंखला
बुरा	विरुप	बूटी	वृतिक	साड़ी	शाती	सिंघाड़ा	शृंगाटक
वसेरा	वासगृह	भण्डार	भंडागार	सिक्ख	शिष्य	सींग	शृंग
भट्ठी	भ्राष्टिका	भभूत	विभूति	सीढ़ी	श्रेढ़ी / श्रेणी	सूड़	शुण्डा
भाड़ा	भाटक	भात	भक्त	सेठ	श्रेष्ठी	सौत	सपत्नी
भूसा	बुष	भुवाल	भूपाल	सौरी	सूतगृह	हथौड़ा	हस्त
भिखारी	भिक्षाकारी	मक्खी	मक्षिका	हीरा	हीरक	हरा	हरिथ
माला	मानिक	मदारी	मंत्रकारी	होठ	ओष्ठ	हेथी	अधः स्थिति
मूछ	श्मश्रु	मगर	मकर	सूई	शूचिका		

वर्तनी

हिन्दी भाषा ने अपने विकास की एक लम्बी यात्रा तय की है। वह अपनी ही बोलियों और अन्य भारतीय भाषाओं से निरन्तर प्रभावित होती रही है। फलस्वरूप उसका मानक रूप तैयार करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। जिन भाषाओं के शब्दों को हिन्दी ने ग्रहण किया है उनकी मूल प्रकृति से भिन्न हैं। इसलिए इन भाषाओं के शब्दों लेखन एवं प्रयोग में अशुद्धियाँ होती रहती हैं। इन अशुद्धियों के कारण भावों को यथार्थ ढंग से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। शब्द–शुद्धि के लिए शब्दों की वर्तनी (spelling) सम्बन्धी नियमों का ज्ञान आवश्यक होता है। अतः हिन्दी के शब्द–लेखन में होने वाली अशुद्धियों और उनके शुद्ध रूपों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
		'अ, आ'	
अँकुर	अंकुर	अगम	अगम्य
अगामी	आगामी	आधीन	अधीन
अतिथी	अतिथि	अहिल्या	अहल्या
अभ्यार्थी	अभ्यर्थी	अन्ताक्षरी	अन्त्याक्षरी
अध्यात्मिक	आध्यात्मिक	अशंतोष	असंतोष
अग्यान	अज्ञान	अच्छर	अक्षर
अधिशाषी	अधिशासी	अंत्येष्ठि	अन्त्येष्टि
अतैव	अतएव	अत्याधिक	अत्यधिक
अन्तर्चेतना	अंतश्चेतना	अतीक्रमण	अतिक्रमण
अवकास	अवकाश	अनेकों	अनेक
अनुदित	अनूदित	अलोकिक	अलौकिक
अनुगृह	अनुग्रह	अनुग्रहीत	अनुगृहीत
अरगला	अर्गला	अंधेरा	अँधेरा
अंतकरण	अन्तःकरण	अंतरगत	अंतर्गत
अत्योक्ति	अत्युक्ति	अध्यन	अध्ययन
अधोपतन	अधःपतन	अन्विती	अन्विति
अन्वेशण	अन्वेषण	अभिसेक	अभिषेक

अभीराम	अभिराम	आयक्रर	आयकर
अभिष्ट	अभीष्ट	आसीस	आशीष
अक्षुण्य	अक्षुण्ण	असुया	असूया
अधःवस्त्र	अधोवस्त्र	अध्यावसाय	अध्यवसाय
अनाधिकार	अनधिकार	अपरान्ह	अपराह्न
अभ्यांतर	अभ्यंतर	अनभिग्य	अनभिज्ञ
अधिक्षक	अधीक्षक	अनुछेद	अनुच्छेद
अक्षोहिणी	अक्षौहिणी	आकंट	आकंठ
आखर	अक्षर	आजीवका	आजीविका
आतमिक	आत्मिक	अरोग्य	आरोग्य
आव्हान	आह्वान	आद्र	आर्द्र

'इ, ई'

इन्दरा	इन्दिरा	इन्द्रीय	इन्द्रिय
इतिहासिक	ऐतिहासिक	इंदू	इंदु
इस्त्री	स्त्री	इस्ट	इष्ट
इस्थिति	स्थिति	ईर्षा	ईर्ष्या
इन्धन	ईंधन		

'उ'

उच्छवास	उच्छ्वास	उज्वल	उज्ज्वल
उज्जयनी	उज्जयिनी	उधारण	उदाहरण
उधम	उद्यम	उलंघन	उल्लंघन
उन्नती	उन्नति	उनयन	उन्नयन
उमर	उम्र	उधोग	उद्योग
उपरोक्त	उपर्युक्त	उपलक्ष	उपलक्ष्य
उछिष्ट	उच्छिष्ट	उपन्यासिक	औपन्यासिक

'ऊ'

ऊषा	उषा	उष्मा	ऊष्मा
उर्ध्व	ऊर्ध्व	उर्जा	ऊर्जा
ऊखली	ओखली	उर्मि	ऊर्मि
उरु	ऊरू	उर्जस्वित	ऊर्जस्वित

'ऋ'

श्रृंखला	शृंखला	श्रृंगार	शृंगार
ऋतू	ऋतु	ऋषी	ऋषि

'ए, ऐ'

एकत्रित	एकत्र	एक्य	ऐक्य
ऐक्यता	एकता	ऐशवर्य	ऐश्वर्य
एच्छिक	ऐच्छिक	एतरेय	ऐतरेय

'ओ, औ'

ओचित्य	औचित्य	ओत्सुक्य	औत्सुक्य
ओद्योगिक	औद्योगिक	ओरत	औरत
ओषध	औषध	ओषधी	औषधि
ओदार्य	औदार्य	उद्योगीकरण	औद्योगीकरण
उपनिवेशिक	औपनिवेशिक		

'क'

कच्छा	कक्षा	कंगा	कंघा
कठनाई	कठिनाई	कनिष्ट	कनिष्ठ
कदम	कदंब	कलस	कलश
कलेश	क्लेश	कवी	कवि
कविन्द्र	कवीन्द्र	करूणा	करुणा
क्रतघ्न	कृतघ्न	कृतिज्ञ	कृतज्ञ
कवित्री	कवयित्री	कार्यकर्म	कार्यक्रम
किरपान	कृपाण	कीरीट	किरीट
कृतग्य	कृतज्ञ	कृसमस	क्रिसमस
कुतुहल	कौतूहल	कुशाण	कुषाण
कीर्ती	कीर्ति	केन्द्रिय	केन्द्रीय
कुशुम	कुसुम	केकयी	कैकयी
कोटी	कोटि	कोतुक	कौतुक
कोमदी	कौमुदी	कोशल्या	कौशल्या
क्रति	कृति	क्रषि	कृषि
कोशीश	कोशिश	कोतक	कौतुक
क्रोंच	क्रौंच	क्षणक	क्षणिक
क्षीन	क्षीण	क्षुब्द	क्षुब्ध
क्रोधीत	क्रोधित	क्षत्रीय	क्षत्रिय
क्षोनी	क्षोणि	क्षैत्रिय	क्षेत्रीय

'ख'

खंबा	खंभा	खिजूर	खजूर
खीजना	खीझना	खेतीहर	खेतिहर
खुस	खुश		

'ग'

गती	गति	गदहा	गधा
गर्भीणी	गर्भिणी	गणमान्य	गण्यमान्य
गान्धी	गांधी	गायका	गायिका
गिरस्थी	गृहस्थी	गीतांजली	गीतांजलि
गीध	गिद्ध	गोप्यनीय	गोपनीय
गोरव	गौरव	गोतम	गौतम
गौरवता	गुरुता, गौरव	गृहणी	गृहिणी
गृहण	ग्रहण	ग्यान	ज्ञान
गत्यावरोध	गत्यवरोध	गरिष्ट	गरिष्ठ

घनिष्ट	घनिष्ठ	घणा	घृणा
घानी	घाणी	घोश	घोष
घ्रत	धृत		

'च'

चरन	चरण	चन्चल	चंचल
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष	चातुर्यता	चतुरता, चातुर्य
चाक्षुस	चाक्षुष	चांद	चाँद
चाँवल	चावल	चिड़ना	चिढ़ना
चिन्ह	चिह्न		

'छ'

छमा	क्षमा	छत्रिय	क्षत्रिय
छिति	क्षिति	छदम	छद्म
छिन	क्षण	छार	क्षार
छिन्द्रान्वेशी	छिद्र	छुद्र	क्षुद्र
छेम	क्षेम		

'ज'

जनम	जन्म	जरजर	जर्जर
जंतू	जंतु	जमुना	यमुना
जागृत	जाग्रत	जिव्हा	जिह्वा
जागरति	जागृति	जीवत	जीवित
जेष्ठ	ज्येष्ठ	जोग	योग
जोत्सना	ज्योत्स्ना	ज्ञानूदय	ज्ञानोदय

'झ'

झख	झष	झनकृत	झंकृत
झूँठ	झूठ	झोंपड़ी	झोंपड़ी

'त'

तत्व	तत्त्व	तकुवा	तकुआ
तनखा	तनख्वाह	तदानुकूल	तदनुकूल
तदोपरान्त	तदुपरांत	तदंतर	तदनंतर
तपश्या	तपस्या	तत्कालिक	तात्कालिक
तिथी	तिथि	तिलांजली	तिलांजलि
त्यार	तैयार	तृकोण	त्रिकोण
तिरष्कार	तिरस्कार		

'थ'

थूँक	थूक	थोग	थोक

'द'

दयालू	दयालु	दाँया	दायाँ
दावाग्नी	दावाग्नि	दारिद्रयता	दरिद्रता, दारिद्र्य
दरिद्री	दरिद्र	दिवार	दीवार
दिवारात्री	दिवारात्र	दूकान	दुकान
दीयासलाई	दियासलाई	दाइत्व	दायित्व
दुख	दुःख	दुरावस्था	दुरवस्था
दुस्कर	दुष्कर	द्वारिका	द्वारका
दुरगति	दुर्गति	द्रष्टि	दृष्टि
द्रष्य	दृश्य	देविक	दैविक
द्रढ़	दृढ़	दोगुना	दुगुना
दैन्यता	दैन्य	दुसह	दुस्सह

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक जिद्द है

'ध'

धंदा	धंधा	धनाड्य	धनाढ्य
धराशाई	धराशायी	धातू	धातु
धुरंदर	धुरंधर	धैर्यता	धैर्य, धीरता
धोका	धोखा	ध्वनी	ध्वनि
ध्रष्ट	धृष्ट		

'न'

नर्क	नरक	नराज	नाराज
नर्बदा	नर्मदा	नायका	नायिका
निरावलंब	निरवलंब	निरोत्साह	निरुत्साह
निस्वार्थ	निस्स्वार्थ	निरपराधी	निरपराध
निरावयव	निरवयव	निरोग	नीरोग
निरक्षण	निरीक्षण	निधी	निधि
निकस	निकष	नीमग्न	निमग्न
नीती	नीति	नामावलि	नामावली
निसेध	निषेध	निसिद्ध	निषिद्ध
निछावर	न्योछावर	निर्पेक्ष	निरपेक्ष
निस्कलंक	निष्कलंक	निसाकर	निशाचर
निस्स्पंद	निस्पंद	निसार	निस्सार
निहारिका	नीहारिका	निरव	नीरव
निशंग	निषंग	निस्फल	निष्फल
नीराशा	निराशा	नीर्णय	निर्णय
न्रप	नृप	नुपुर	नूपुर
नेत्रत्व	नेतृत्व	नेपथ	नेपथ्य
नृसंश	नृशंस		

'प, फ'

पट	पटु	परचित	परिचित
परिक्षा	परीक्षा	पर्णीता	परणीता
परिस्थती	परिस्थिति	परिणित	परिणत
परिक्षित	परीक्षित	परिवेक्षण	पर्यवेक्षण
परिषद	परिषद्	परचंड	प्रचंड
परुश	पुरुष	पड़ौसन	पड़ोसिन
परदोष	प्रदोष	पत्नि	पत्नी
परियाय	पर्याय	पतंजली	पातंजलि
परबंध	प्रबन्ध	पिंजड़ा	पिंजरा
पिसाच	पिशाच	पितांबर	पीतांबर
पारितोशिक	पारितोषिक	पुरष्कार	पुरस्कार
पुनरोक्ति	पुनरुक्ति	पितर	पितृ
पिपिलिका	पिपीलिका	प्रथक	पृथक
प्रसासन	प्रशासन	पुनरोत्थान	पुनरुत्थान
परिशष्ट	परिशिष्ट	परीचय	परिचय
पक्षि	पक्षी	पुरन्धर	पुरन्दर
पुष्ठी	पुष्टि	पूर्वग्रह	पूर्वाग्रह
पूज्यनीय	पूजनीय, पूज्य	पैत्रिक	पैतृक
प्रशाद	प्रसाद	प्रसंशा	प्रशंसा
प्रमोदित	प्रमुदित	प्रगती	प्रगति
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
प्रकृती	प्रकृति	प्रतिनिधी	प्रतिनिधि
प्रतिलिपी	प्रतिलिपि	प्रतिछाया	प्रतिच्छाया
प्रमाणिक	प्रामाणिक	प्रसंगिक	प्रासंगिक
प्रत्युत्	प्रत्युत	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	पृष्ट	पृष्ठ
प्रातकाल	प्रातःकाल	प्रादुभाव	प्रादुर्भाव
प्रीती	प्रीति	प्रत्यार्पण	प्रत्यर्पण
पर्वतिय	पर्वतीय	प्रमात्मा	परमात्मा
प्रतिद्वन्द	प्रतिद्वन्द्व	पुन्य	पुण्य
फिटकरी	फिटकिरी		

'ब'

बनस्पती	वनस्पति	बन्धू	बंधु
बंदना	बंधु	बंदना	वंदना
बलीदान	बलिदान	बाहू	बाहु
बदाम	बादाम	बांझ	बाँझ
बांया	बायां	बलिष्ट	बलिष्ठ
ब्राम्हण	ब्राह्मण	बुद्धी	बुद्धि
बिन्दू	बिंदु	बन	वन
बाहुल्यता	बहुलता, बाहुल्य	बाल्मीकी	वाल्मीकि
बृज	ब्रज	बृटिश	ब्रिटिश
बृहद	वृहत	ब्रहस्पती	बृहस्पति

'भ'

भगन	भग्न	भगनी	भगिनी
भगीरथी	भागीरथी	भरम	भ्रम
भरतरी	भर्तृहरि	भर्तसना	भर्त्सना
भगत	भक्त	भानू	भानु
भारवी	भारवि	भारतिय	भारतीय
भाष्कर	भास्कर	भीक	भीख
भीसण	भीषण	भिखारिणी	भिखारिन
भुजंगनी	भुजंगिनी	भूमी	भूमि
भृकुटी	भृकुटि	भेसज	भेषज
भ्रत्य	भृत्य	भ्रांती	भ्रांति

'म'

मगन	मग्न	मंत्रीमंडल	मंत्रिमण्डल
मट	मठ	मध्यान्ह	मध्याह्न
मरयादा	मर्यादा	महत्व	महत्त्व
महमा	महिमा	मानवीयकरण	मानवीकरण
मात्रभूमी	मातृभूमि	मारूति	मारुति
मान्यनीय	मान्य, माननीय	मारजार	मार्जार
मिलित	मीलित	मुनी	मुनि
माताहीन	मातृहीन	मूलतया	मूलतः
मैथलीशरण	मैथिलीशरण	मूर्छा	मूर्च्छा
मुहुर्त	मुहूर्त	म्रग	मृग
म्रत्यु	मृत्यु	मात्रभाषा	मातृभाषा

'य'

यतन	यत्न	यथार्त	यथार्थ
यक्रत	यकृत	यद्यपी	यद्यपि
योगीराज	योगिराज	युप	यूप
युक्ती	युक्ति	युधष्ठिर	युधिष्ठिर
यशगान	यशोगान	यशलाभ	यशोलाभ
योज्ञ	योग्य		

'र'

रक्छक	रक्षक	रैंग	रंग
रमन	रमण	रविन्द्र	रवीन्द्र
रवी	रवि	रचयता	रचयिता
रनभूमि	रणभूमि	राक्छस	राक्षस
रात्री	रात्रि	रामायन	रामायण
राजाभिषेक	राज्याभिषेक	रितिकाल	रीतिकाल
राजनैतिक	राजनीतिक	रागनी	रागिनी

रिण	ऋण	रितु	ऋतु
रिषी	ऋषि	रुची	रुचि
रेनू	रेणु	रूद्र	रुद्र

'ल'

लक्खन	लक्षण	लछमी	लक्ष्मी
लघुत्तर	लघूत्तर	लाजवती	लाजवंती
लावण्यता	लावण्य	लिपी	लिपि
लोकेषणा	लोकैषणा	लोकिक	लौकिक
लौहित	लोहित		

'ब'

वरिष्ट	वरिष्ठ	वरन	वरन्
वन्हि	वह्नि	वाँछनीय	वांछनीय
विव्हल	विह्वल	वित्तेषणा	वितैषणा
वापिस	वापस	वासुकी	वासुकि
विमर्ष	विमर्श	विलच्छण	विलक्षण
विनास	विनाश	विधार्थी	विद्यार्थी
विदेशिक	वैदेशिक	विधी	विधि
विस्म्रित	विस्मृत	विशाद	विषाद
विसन्न	विषण्ण	वेदेही	वैदेही
वहिरंग	बहिरंग	विपच्छ	विपक्ष
वाल्मीकी	वाल्मीकि	वांगमय	वाङ्मय
वाहनी	वाहिनी	वधु	वधू
विषेश	विशेष	विक्खात	विख्यात
विपन	विपन्न	विशिष्ठ	विशिष्ट
विशिष्ट	वसिष्ठ, वशिष्ठ	वेदिक	वैदिक
वैश्या	वेश्या	वेमनस्य	वैमनस्य
वेषभूषा	वेशभूषा	व्योहार	व्यवहार
व्यंग	व्यंग्य	व्यवसायिक	व्यावसायिक
व्यवहारिक	व्यावहारिक	वय्याकरण	वैयाकरण
विछेद	विच्छेद	विद्वान	विद्वान्
विश	विष	वीना	वीणा
वृद्धी	वृद्धि	व्रंद	वृन्द

'श'

शनी	शनि	शहरीय	शहरी
शांती	शांति	शाषकीय	शासकीय
शारिरिक	शारीरिक	शंशय	संशय
शांतमय	शांतिमय	शाशन	शासन
शिश्य	शिष्य	शिघ्र	शीघ्र
शिवर	शिविर	शुन्य	शून्य
शूर्पनखा	शूर्पणखा	शुरु	शुरू
शोनित	शोणित	शौचनीय	शोचनीय
श्मस्त्रु	श्मश्रु (मूंछ)	श्रवन	श्रवण
श्रंखला	शृंखला	श्रंगाल	शृंगाल (सियार)
श्राद	श्राद्ध	श्रीमान	श्रीमान्
श्रीमति	श्रीमती	श्रृंगार	शृंगार
श्रृंग	शृंग		

'ष'

षटानन	षडानन	षड़यत्र	षड्यंत्र
षट्मास	षण्मास	षस्टी	षष्ठी
षष्ट	षष्ठ	षष्टी	षष्टि
षोड़शी	षोडशी		

'स'

सक्छम	सक्षम	समरथ	समर्थ
सन्मुख	सम्मुख	सन्मान	सम्मान
सतगुण	सद्गुण	सरीता	सरिता
समिक्षा	समीक्षा	सहस्त्र	सहस्र
सम्रद्ध	समृद्ध	सत्मार्ग	सन्मार्ग
सदृश्य	सदृश	सरोजनी	सरोजिनी
संपति	संपत्ति	सहाब	साहब
सशंकित	सशंक	संतती	संतति
सदोपदेश	सदुपदेश	सम्वाद	संवाद
संस्कर्ण	संस्करण	सदृश्य	सदृश
समुन्दर	समुद्र	सम्यक्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान
सन्यासी	संन्यासी	स्वस्थ्य	स्वस्थ, स्वास्थ्य
सम्मन्ध	सम्बन्ध	संसारिक	सांसारिक
स्तुती	स्तुति	सर्जन	सृजन
सप्ताहिक	साप्ताहिक	स्मर्ण	स्मरण
समासिक	सामाजिक	स्मसान	श्मशान
सथान	स्थान	संग्रहीत	संगृहीत
सदेव	सदैव	सन्कट	संकट
साम्यता	साम्य, समानता	साहित्यक	साहित्यिक
समाधी	समाधि	सन्कट	संकट
सामिग्री	सामग्री	साफल्यता	सफलता
साछर	साक्षर	साक्ष	साक्ष्य
सादरपूर्वक	सादर, आदरपूर्वक	साधू	साधु
सांतवना	सांत्वना	सानंदपूर्वक	सानंद
सारथी	सारथि	स्थाई	स्थायी
सप्ता	सप्ताह	स्वंय	स्वयं
स्वपन	स्वप्न	स्वामीभक्त	स्वामिभक्त
स्त्रिी	स्त्री	सिखर	शिखर
सारिणी	सारणी	सिथिल	शिथिल
सिंघासन	सिंहासन	सीत	शीत
सुचि	शुचि	सुक्ति	सूक्ति
सुचिपत्र	सूचीपत्र	सुसमा	सुषमा
सुई	सूई	सूड	सूँड़
सृष्टी	सृष्टि	सृष्टा	स्रष्टा
सृजन	सर्जन	सेष	शेष
सेनिक	सैनिक	सेन्न	सैन्य
सोभित	शोभित	सोभाग्य	सौभाग्य
सोम्य	सौम्य	सोचनीय	शोचनीय
स्त्रोत	स्रोत	सोंदर्यता	सौंदर्य
सौहार्द्र	सौहार्द	स्वातंत्रोत्तर	स्वातंत्र्योत्तर

'ह'

हट	हठ	हर्श	हर्ष
हरितिमा	हरीतिमा	ह्रष्ट	हृष्ट
ह्रदय	हृदय	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप
हानी	हानि	हिरन	हरिण
हितेषी	हितैषी	हाथिन	हथिनी
हिंस्त्र	हिंस्र	हिन्दु	हिन्दू
हेतू	हेतु	हनुमान्	हनुमान
हिन्सा	हिंसा		

समास

'समास' का अर्थ है, संक्षेप। कम–से–कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' का मुख्य प्रयोजन है। पं. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतन्त्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं ओर उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह 'समास' कहलाता है। अर्थात्–

1. समास में कम से कम दो पदों का योग होता है।
2. वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते हैं : 'एकपदीभावः समासः'।
3. समास में समस्त होने वाले पदों का विभक्ति–प्रत्यय लुप्त हो जाता है।
4. समस्त पदों के बीच संधि की स्थिति होने पर संधि अवश्य होती है।

समास और संधि में अंतर :

समास और संधि का अन्तर इस प्रकार है– (1) समास में दो पदों का योग होता है किन्तु संधि में दो वर्णों का। (2) समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं। संधि के लिए दो वर्णों के मेल और विकार की गुंजाइश रहती है, जबकि समास को इस मेल या विकार से कोई मतलब नहीं। (3) संधि के तोड़ने को 'विच्छेद' कहते हैं, जबकि समास का 'विग्रह' होता है। जैसे, 'पीताम्बर' में दो पद हैं पीत और अम्बर। संधि विच्छेद होगा– पीत + अम्बर, जबकि समास विग्रह होगा– पीत है जो अम्बर या पीत है जिसका अम्बर = पीताम्बर। यहाँ ध्यान देने की बात है कि हिन्दी में संधि प्रायः तत्सम पदों में होती है, जबकि समास संस्कृत तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में। यही कारण हे कि हिन्दी पदों के समास में संधि आवश्यक नहीं है।

समास के भेद

समास के निम्नलिखित छः भेद हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययी भाव समास : जिस सामासिक शब्द का प्रथम पद प्रधान हो और अव्यय भी हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहा जाता है। प्रायः इन शब्दों का प्रयोग क्रिया–विशेषण की भाँति होता है। जैसे– यथाक्रम, यथासम्भव, प्रतिदिन, प्रत्येक, आजीवन, हाथोंहाथ, भरसक, बाकायदा, बखूबी आदि।

2. तत्पुरुष समास : जिस सामासिक शब्द का उत्तर पदप्रधान हो, उसे 'तत्पुरुष समास' कहा जाता है।

इसमें कारकों (कर्ता और सम्बोधन कारकों को छोड़कर) की विभक्ति पूर्व पद और उत्तर पद के बीच लुप्त रहती है। इसमें जिस कारक की विभक्ति होती है, उसी के नाम पर तत्पुरुष समास का नामकरण होता है। जैसे–

(i) **कर्म तत्पुरुष–**	गिरहकट	(गिरह को काटने वाला)
	परलोकगमन	(परलोक को गमन)
(ii) **करण तत्पुरुष–**	दयार्द्र	(दया से आर्द्र)
	निराला रचित	(निराला के द्वारा रचित)
	मुँहमाँगा	(मुँह से माँगा हुआ)
	प्रकृतिप्रदत्त	(प्रकृति से प्रदत्त)
(iii) **सम्प्रदान तत्पुरुष–**	रसोईघर	(रसोई के लिए घर)
	यज्ञशाला	(यज्ञ के लिए शाला)
	राहखर्च	(राह के लिए खर्च)
	गुरु–दक्षिणा	(गुरु के लिए दक्षिणा)
(iv) **अपादान तत्पुरुष–**	पथभ्रष्ट	(पथ से भ्रष्ट)
	रोगमुक्त	(रोग से मुक्त)
	पदच्युत	(पद से च्युत)
(v) **सम्बन्ध तत्पुरुष–**	गंगा जल	(गंगा का जल)
	पवनसुत	(पवन का सुत)
	घुड़दौड़	(घोड़ों की दौड़)
(vi) **अधिकरण तत्पुरुष–**	आपबीती	(आप पर बीती)
	जलमग्न	(जल में मग्न)
	दानवीर	(दान में वीर)
	घुड़सवार	(घोड़े पर सवार)

इनके अतिरिक्त तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं–

(i) **नञतत्पुरुष :** जहाँ निषेधात्मक अर्थ में 'अ' या 'अन' का प्रयोग होता हो जैसे–

अपूर्ण	(न पूर्ण)
अनिष्ट	(न इष्ट)
अधर्म	(न धर्म)

(ii) **अलुक् तत्पुरुष :** जहाँ पूर्व पद की विभक्ति का लोप न हो, जैसे–

मनसिज	(मनसि (मन में) उत्पन्न)
खेचर	(खे (आकाश में) विचरने वाला)

3. कर्मधारय समास : जिस सामासिक शब्द का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद एवं उत्तर पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय सम्बन्ध हो, उसे 'कर्मधारय समास' कहा जाता है। कर्मधारय समास के तीन भेद हैं–

(i) विशेषण विशेष्य कर्मधारय

(ii) उपमान कर्मधारय

(iii) मध्यपदलोपी कर्मधारय

(i) **विशेषण विशेष्य कर्मधारय** : जब पूर्व पद एवं उत्तर पद विशेषण विशेष्य सम्बन्ध रखते हों। जैसे– नीलगगन, नीलकमल, श्वेताम्बर (तीनों में पूर्व पद विशेषण है), नरोत्तम (इसमें उत्तर पद विशेषण है) गोरा–काला, खट्टा–मीठा, लाल–हरा (इन तीनों में दोनों पद विशेषण हैं)।

(ii) **उपमान कर्मधारय** : जब दोनों पदों (पूर्व–उत्तर) में उपमान उपमेय सम्बन्ध हो, जैसे– राजीवनयन (राजीव/कमल के समान नयन) कनकलता (कनक की सी लता)।

(iii) **मध्यपदलोपी कर्मधारय** : जब पूर्व पद और उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाला पद लुप्त हो। जैसे– पनचक्की (पानी से चलने वाली चक्की), गुरुभाई (गुरु के सम्बन्ध से भाई)।

4. **द्विगु समास** : जिस सामासिक शब्द का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहा जाता है। जैसे– नवग्रह, नवरात्र, पंचवटी, त्रिभुवन, चतुर्भुज आदि।

5. **द्वन्द्व समास** : जिस सामासिक शब्द के दोनों पद प्रधान हों तथा जिसका विग्रह करने पर अथवा, और, एवं, या लगता हो, उसे 'द्वन्द्व समास' कहा जाता है। द्वन्द्व समास के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

(i) **इतरेतर द्वन्द्व** : इसमें दोनोंपद योगसूचक 'और' संयोजक से जुड़े रहते हैं, परन्तु 'और' लुप्तावस्था में रहता है, जैसे– गाय–बैल (गाय और बैल), दाल–भात (दाल और भात), रात–दिन (रात और दिन), गुण–दोष (गुण और दोष), आदि।

(ii) **वैकल्पिक द्वन्द्व** : इसमें दोनों पद (पूर्व–उत्तर) 'या', 'अथवा' संयोजक शब्दों से जुड़े होते हैं लेकिन ये संयोजक शब्द लुप्तावस्था में रहते हैं, जैसे– ऊँच–नीच (ऊँच या नीच), भला–बुरा (भला अथवा बुरा) आदि।

(iii) **समाहार द्वन्द्व** : जिसमें प्रयुक्त पदों के अर्थ के अतिरिक्त उसी प्रकार का और भी अर्थ सूचित होता हो। जैसे– आटा–दाल (एक अर्थ है आटा और दाल, दूसरा अर्थ है– घर–गृहस्थी के झंझट तथा व्यावहारिक जीवन के कटु अनुभव–आटा दाल का भाव मालूम होना) खाता–पीता, कहा–सुनी आदि भी इसी तरह के सामासिक शब्द हैं।

6. **बहुब्रीहि समास** : जिस सामासिक शब्द के दोनों पद (पूर्व–उत्तर) अप्रधान हों और जिसके शब्दार्थ नहीं, वरन् सांकेतिक अर्थ प्रधान हो, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहा जाता है। जैसे– लम्बोदर (लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश), चन्द्रशेखर (चन्द्र है शेखर पर जिसके अर्थात् शिव), नीलकंठ (नीला है कंठ जिसका अर्थात् शंकर) आदि। बहुब्रीहि समास के तीन भेद हैं–

(i) **व्यधिकरण** : जिसमें पूर्व पद विशेषण न हो, जैसे– चक्रपाणि।

(ii) **समानाधिकरण** : जिसमें पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य हो। जैसे– नीलकंठ।

(iii) **मध्यपदलोपी** : जिसमें मध्य पद लुप्त हो। जैसे– चार फुटा।

कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अन्तर : कर्मधारय समास की विशेषता यह है कि इसके दोनों पदों में विशेषण–विशेष्य संबंध होता है या उपमान उपमेय संबंध होता है और उसमें शब्दार्थ प्रधान होता है जबकि बहुब्रीहि समास के दोनों पदों में विशेषण–विशेष्य संबंध न होकर समस्त पद ही किसी अन्य संज्ञादि का विशेषण होता है और इसमें शब्दार्थ नहीं वरन् भिन्नार्थ प्रधान होता है। जैसे– 'लम्बोदर' शब्द में यदि विग्रह हो 'लम्बा हो उदर जिसका' तो कर्मधारय समास होगा और यदि 'लम्बा हो उदर जिसका अर्थात् गणेश'– विग्रह किया जाये तो बहुब्रीहि समास होगा।

प्रयोग की दृष्टि से समास के भेद : प्रयोग की दृष्टि से समास के तीन भेद किये जा सकते हैं– (1) संयोगमूलक समास, (2) आश्रयमूलक समास और (3) वर्णनमूलक समास।

संज्ञा–समास : संयोगमूलक समास को द्वन्द्व समास अथवा संज्ञा–समास कहते हैं। इस प्रकार के समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं। दूसरे शब्दों में इसमें दो संज्ञाओं का संयोग होता हैं जैसे– माँ–बाप, भाई–बहन, माँ–बेटी, सास–पतोहू, दिन–रात, रोटी–बेटी, माता–पिता, दही–बड़ा, दूध–दही, थाना–पुलिस, सूर्य–चन्द्र इत्यादि। इनमें सभी पद प्रधान होते हैं। किन्तु जहां, योजक चिह्न (–) नहीं लगता, वहाँ तत्पुरुष समास होता है। तत्पुरुष में भी दो संज्ञाओं का संयोग होता है। जैसे– पाठशाला, गंगाजल, राजपुत्र, पर्णकुटीर इत्यादि।

विशेषण–समास : यह **आश्रयमूलक समास** है। यह प्रायः कर्मधारय समास होता हैं इस समास में प्रथम पद विशेषण होता है, किन्तु द्वितीय पद का अर्थ बलवान होता है। कर्मधारय का अर्थ है कर्म अथवा वृत्ति धारण करने वाला। यह विशेषण–विशेष्य, विशेष्य–विशेषण, विशेषण तथा विशेष्य पदों द्वारा सम्पन्न होता है। जैसे–

(क) जहाँ पूर्वपद विशेषण हो, यथा– कच्चाकेला, शीशमहल, महारानी।

(ख) जहाँ उत्तरपद विशेषण हो; यथा– घनश्याम।

(ग) जहाँ दोनों पद विशेषण हो; यथा– लाल–पीला, खट्टा–मीठा।

(घ) जहाँ दोनों पद विशेषण हों; यथा– मौलवीसाहब, राजाबहादुर।

अव्यय समास : वर्णमूलक समास के अन्तर्गत बहुब्रीहि ओर अव्ययीभाव समास का निर्माण होता है। इस समास (अव्ययीभाव) मेंप्रथम पद साधारणतः अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा। जैसे– यथाशक्ति, यथासाध्य, प्रतिमास, यथासम्भव, घड़ी–घड़ी, प्रत्येक, भरपेट, यथाशीघ्र इत्यादि।

सामासिक पदों की सूची

अव्ययीभाव

पद	विग्रह
दिनानुदिन	दिन के बाद दिन
प्रत्यंग	अंग–अंग
भरपेट	पेट भरकर
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
निर्भय	बिना भय का
उपकूल	कुल के समीप
प्रत्यक्ष	अक्षि (आँख) के प्रति (आगे)
समक्ष	अक्षि के सामने
निधड़क	बिना धड़क के
बखूबी	खूबी के साथ
यथार्थ	अर्थ के अनुसार
प्रत्येक	एक–एक
मनमाना	मन के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो
बेकाम	बिना काम का
बेलाग	बिना लाग का
आपादमस्तक	पाद से मस्तक तक
प्रत्युपकार	उपकार के प्रति
परोक्ष	अक्षि के परे
बेफायदा	बिना फायदे का
बेखटके	बिना खटके के
बेरहम	बिना रहम के

तत्पुरुष (कर्मतत्पुरुष)

पद	विग्रह
गगनचुम्बी	गगन (को) चूमनेवाला
पाकिटमार	पाकेट (को) मारनेवाला
चिड़ीमार	चिड़ियों (को) मारने वाला
गृहागत	गृह को आगत
कठखोदवा	काठ (को) खोदने वाला
गिरहकाट	गिरह (को) काटनेवाला
मुँहतोड़	मुँह (को) तोड़नेवाला
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त

करण तत्पुरुष

पद	विग्रह
प्रेमसिक्त	प्रेम से सिक्त
जलसिक्त	जल से सिक्त
रसभरा	रस से भरा
मदमाता	मद से माता
मेषाच्छन्न	मेघ से आच्छन्न
पददलित	पद से दलित
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
दुःखसन्तप्त	दुःख से सन्तप्त
शोकाकुल	शोक से आकुल
करुणापूर्ण	करुणा से पूर्ण
रोपीड़ित	रोग से पीड़ित
रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
मुंहमांगा	मुंह से माँगा
दुःखार्त	दुःख से आर्त
मदान्ध	मद से अन्ध
देहचोर	देह से चोर
अकालपीड़ित	आकाल से पीड़ित
शोकग्रस्त	शोक से ग्रस्त
शोकार्त	शोक से आर्त
श्रमजीवी	श्रम से जीने वाला
कामचोर	काम से चोर
मुंहचोर	मुंह से चोर

सम्प्रदान तत्पुरुष

पद	विग्रह
शिवार्पण	शिव के लिए अर्पण
रसोईघर	रसोई के लिए घर
सभाभवन	सभा के लिए भवन
लोकहितकारी	लोक के लिए हितकारी
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय
स्नानघर	स्थान के लिए घर
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
डाकमहसूल	डाक के लिए महसूल
साधुदक्षिणा	साधु के लिए दक्षिणा
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
पुत्रशोक	पुत्र के लिए शोक
ब्राह्मणदेय	ब्राह्मण के लिए देय
राहखर्च	राह के लिए खर्च
गोशाला	गो के लिए शाला
देवालय	देव के लिए आलय
विधानसभा	विधान के लिए सभा

अपादान तत्पुरुष

पद	विग्रह
बलहीन	बल से हीन
धनहीन	धन से हीन
पदभ्रष्ट	पद से भ्रष्ट
स्थानभ्रष्ट	स्थान से भ्रष्ट
मायारिक्ति	माया से रिक्त
पापमुक्त	पाप से मुक्त
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
ईश्वरविमुख	ईश्वर से विमुख
स्थानच्युत	स्थान से च्युत
लोकोत्तर	लोक से उत्तर (परे)
नेत्रहीन	नेत्र से हीन
शक्तिहीन	शक्ति से हीन
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
जलरिक्त	जल से रिक्त
प्रेमरिक्त	प्रेम से रिक्त
व्ययमुक्त	व्यय से मुक्त
धर्मविमुख	धर्म से विमुख
पदच्युत	पद से च्युत
धर्मच्युत	धर्म से च्युत
मरणोत्तर	मरण से उत्तर

The Institute

समीर प्लाजा, मनमोहन पार्क, कटरा, बांसमण्डी के सामने, इलाहाबाद
फोन नं. : 0532.3266722, 9956971111, 9235581475

सम्बन्ध तत्पुरुष

अन्नदान	अन्न का दान
श्रमदान	श्रम का दान
वीरकन्या	वीर की कन्या
त्रिपुरारि	त्रिपुर का अरि
राजभवन	राजा का भवन
प्रेमोपासक	प्रेम का उपासक
चन्द्रोदय	चन्द्र का उदय
देशसेवा	देश की सेवा
चरित्रचित्रण	चरित्र का चित्रण
राजगृह	राजा का गृह
अमरस	आम का रस
आनन्दाश्रम	आनन्द का आश्रम
देवालय	देव का आलय
रामायण	राम का अयन
खरारि	खर का अरि
गंगाजल	गंगा का जल
रामोपासक	राम का उपासक
गुरुसेवा	गुरु की सेवा
सेनानायक	सेना का नायक
ग्रामोद्धार	ग्राम का उद्धार
मृगछौना	मृग का छौना
राजपुत्र	राजा का पुत्र
राजदरबार	राजा का दरबार
सभापति	सभा का पति
विद्यासागर	विद्या का सागर
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय
राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति
हिमालय	हिम का आलय

अधिकरण तत्पुरुष

पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम
पुरुषसिंह	पुरुषों में सिंह
ग्रामवास	ग्राम में वास
शास्त्रप्रवीण	शास्त्रों में प्रवीण
आत्मनिर्भर	आत्म पर निर्भर
क्षत्रियाधम	क्षत्रियों में अधम
शरणागत	शरण में आगत
हरफनमौला	हर फन में मौला
मुनिश्रेष्ठ	मुनियों में श्रेष्ठ
नरोत्तम	नरों में उत्तम
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
कविश्रेष्ठ	कवियों में श्रेष्ठ
दानवीर	दान में वीर
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
नराधम	नरों में अधम
सर्वोत्तम	सर्व में उत्तम
रणशूर	रण में शूर
आन्नदमग्न	आनन्द में मग्न

कर्मधारय

नीलोत्पल	नील उत्पल
महापुरुष	महान् पुरुष
सन्मार्ग	सत् मार्ग
कुमारश्रमणा	कुमारी (क्वाँरी) श्रमणा (संन्यास ग्रहण की हुयी)
श्यामसुन्दर	श्याम जो सुन्दर है
नीलपीत	नीला–पीला (दोनों मिले)
कृताकृत	किया–बेकिया
आम्रवृक्ष	आम्र है जो वृक्ष
विद्युदेश	विद्युत के समान वेग
शैलोन्नत	शैल के समान उन्नत
कुसुमकोमल	कुसुम के समान कोमल
नररत्न	नर रत्न के समान
चरणकमल	चरण कमल के समान
मुखचन्द्र	मुख चन्द्र के समान
पुरुषरत्न	पुरुष ही है रत्न
भाष्याब्धि	भाष्य ही है अब्धि
महात्मा	महान् आत्मा
महावीर	महान् वीर
मदनमनोहर	मदन जो मनोहर है
जनकखेतिहर	जनक खेतिहर (खेती करनेवाला)
शीतोष्ण	शीत–उष्ण (दोनों मिले)
कहनी–अनकहनी	कहना–न–कहना
वायसदम्पत्ति	वायस है जो दम्पत्ति
घनश्याम	घन जैसा श्याम
विद्युच्चंचला	विद्युत–जैसी चंचला
लोहपुरुष	लोहे के समान पुरुष
अधरपल्लव	अधर पल्लव के समान
नरसिंह	नर सिंह के समान
पद पंकज	पद पंकज के समान
मुखचन्द्र	मुख ही है चन्द्र
पुत्ररत्न	पुत्र ही है रत्न

द्विगु

त्रिभुवन	तीन भुवनों का समाहार
त्रिकाल	तीन कालों का समाहार
चवन्नी	चार आनों का समाहार
नवग्रह	नौ ग्रहों का समाहार
त्रिगुण	तीन गुणों का समूह
पसेरी	पाँच सेरों का समाहार
अष्टाध्यायी	अष्ट अध्यायों का समाहार
त्रिलोक, त्रिलोकी	तीनों लोकों का समाहार
दुअन्नी	दो आनों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
षट्रस	षट् (दह) रसों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
नवरत्न	नव रत्नों का समाहार
सतसई	सात सौ का समाहार

त्रिपाद	तीन पादों का समाहार
पंचवटी	पाँच वटों का समाहार
दुपहर	दूसरा पहर
शतांश	शत (सौंवाँ) अंश
पंचहत्थड़	पाँच हत्थड़ (हैंडिल)
पंचपात्र	पाँच पात्रों का समाहार
चतुर्वेद	चार वेदों का समाहार
पंचप्रमाण	पाँच प्रमाण (नाप)
दुसूती	दो सूतोंवाला
दुधारी	दो धारों वाली (तलवार)

बहुव्रीहि (समानाधिकरण बहुव्रीहि)

प्राप्तोदक	प्राप्त है उदक जिसे
दत्तभोजन	दत्त है भोजन जिसे
पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका
नेकनाम	नेक है नाम जिसका
सतखण्डा	सात हैं खण्ड जिसमें (वह महल)
चतुरानन	चार हैं आनन जिसके
वज्रायुध	वज्र है आयुध जिसका
शान्तिप्रिय	शान्ति है प्रिय जिसे वह
वज्रदेह	वज्र है देह जिसकी
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका
जितेन्द्रिय	जीती हैं इन्द्रियां जिसने
निर्धन	निर्गत है धन जिससे
मिठबोला	मीठी है बोली जिसकी (वह पुरुष)
चौलड़ी	चार है लड़ियां जिसकी (वह माला)
चतुर्भुज	चार है भुजाएं जिसकी
दिगम्बर	दिक् है अंबर जिसका
सहस्रकर	सहस्र हैं कर जिसके
सहस्रानन	सहस्र हैं आनन जिसके
दशमुख	दश हैं मुख जिसके
गोपाल	वह जो, गौ का पालन करे

व्यधिकरण बहुव्रीहि

शूलपाणि	शूल है पाणि में जिसके
चन्द्रभाल	चन्द्र है भाल पर जिसके
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके
चन्द्रवदन	चन्द्र है वदन पर जिसके

द्वन्द्व

इतरेतर द्वन्द्व

धर्माधर्म	धर्म और अधर्म
भलाबुरा	भला और बुरा
गौरीशंकर	गौरी और शंकर
सीताराम	सीता और राम
लेनदेन	लेन और देन
देवासुर	देव और असुर
शिवपार्वती	शिव और पार्वती
पापपुण्य	पाप और पुण्य
भातदाल	भात और दाल
देशविदेश	देश और विदेश
भाई बहन	भाई और बहन
हरिशंकर	हरि और शंकर
धुनर्बाण	धनुष और बाण
राधाकृष्ण	राधा और कृष्ण

समाहार द्वन्द्व

रुपया–पैसा	रुपया–पैसा वगैरह
घर–आंगन	घर–आंगन वगैरह (परिवार)
घर–द्वार	घर–द्वार वगैरह (परिवार)
नाक–कान	नाक–कान वगैरह
नहाया–धोया	नहाया और धोया आदि
कपड़ा–लत्ता	कपड़ा–लत्ता वगैरह

वैकल्पिक द्वन्द्व

पाप–पुण्य	पाप या पुण्य
भला–बुरा	भला या बुरा
लाभालाभ	लाभ या अलाभ
धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
थोड़ा–बहुत	थोड़ा या बहुत
ठण्डा–गरम	ठण्डा या गरम

कारक

कारक परिचय

क्रम	कारक	लक्षण	चिह्न	उदाहरण
1.	कर्त्ता	जो काम करे	ने	प्रेमशंकर ने पुस्तक पढ़ी। प्रेमशंकर पुस्तक पढ़ता है।
2.	कर्म	जिस पर क्रिया का फल पड़े	को	राम ने रावण को मारा। गौरव ने पुस्तक पढ़ी है।
3.	करण	जिस साधन के द्वारा काम हो	से, के द्वारा	प्रिंस ने लाठी से कुत्ते को मारा।
4.	सम्प्रदान	जिसके लिए कर्त्ता काम करे (देने के योग में भी यही कारक होता है)	के लिए, को	धर्मेन्द्र, सीता के लिए फल लाया। सुरेश ने ब्राह्मण को फल दिये।
5.	अपादान	जिससे कोई वस्तु अलग हो (आरम्भ, तुलना, भय और लज्जा के अर्थ में भी आता है)	से	बालिका छत से गिर पड़ी। रूचि से निधि योग्य है। मधु, पति से लजाती है। शिवम कौए से डरता है। मैंने सारिका से गाना सीखा।
6.	सम्बन्ध	जो दो शब्दों का सम्बन्ध जोड़े	का, के, की रा, रे री ना, ने, नी	मुन्ना की माता, मुन्न के भाई तथा अश्विनी के पिता यहां आये मेरा भाई, मेरी अपनी बहिन, मेरे अपने मित्र।
7.	अधिकरण	जिस पर या जिसमें कर्त्ता काम करे	में, पर	अनन्य घर में है। जूही छत पर है। झूठ बोलने में हानि है।
8.	सम्बोधन	जिससे किसी को बुलाया जाए	अरे, रे, हे, ओ	हे मुनि ! आओ ! अरे ! तू यह क्या करता है ?

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है।

उपसर्ग / प्रत्यय

उपसर्ग :

- उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है– किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना।
- जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुडत्रकर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं, वे **उपसर्ग** कहलाते हैं।

'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। परन्तु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा– 'प्रहार' (प्र + हार) जिसका अर्थ है चोट करना। इसी तरह 'आ' जोड़ने से आहार (भोजन), 'सम्' जोड़ने से संहार (विनाश) तथा 'वि' जोड़ने से 'विहार' (घूमना) इत्यादि शब्द बन जाएँगे।

संस्कृत के उपसर्ग :

क्र.	उपसर्ग	अर्थ	शब्द
1.	अति	अधिक	अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
2.	अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति, अधिनायक
3.	अनु	पीछे, समान	अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन
4.	अप	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपकार
5.	अभि	सामने, चारो ओर, पास	अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख
6.	अव	हीन, नीच	अवगुण, अवनति, अवतार, अवतरण
7.	आ	तक, समेत	आजीवन, आगमन, आरक्षण, आक्रमण
8.	उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर	उद्गम, उत्कर्ष, उत्तम, उत्पत्ति
9.	उप	निकट, सदृश, गौण	उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार
10.	दुर्	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार
11.	दुस्	बुरा, कठिन	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुष्कर
12.	निर्	बिना, बाहर, निषेध	निरपराध, निर्जर, निराकार, निर्गुण
13.	निस्	रहित, पूरा, विपरीत	निस्सार, निस्तार, निश्चल, निश्चित
14.	नि	निषेध, अधिकता, नीचे	निवारण, निपात, नियोग, निषेध
15.	परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, परामर्श, पराक्रम
16.	परि	आसपास, चारों तरफ	परिजन, परिक्रम, परिपूर्ण, परिमाण
17.	प्र	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति
18.	प्रति	उलटा, सामने, हर एक	प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
19.	वि	भिन्न, विशेष	विदेश, विलाप, वियोग, विपक्ष
20.	सम्	उत्तम, साथ, पूर्ण	संस्कार, संगम, संतुष्ट, संभव
21.	सु	अच्छा, अधिक	सुजन, सुगम, सुशिक्षित, सुपात्र

हिन्दी के उपसर्ग :

क्र.	उपसर्ग	अर्थ	शब्द
1.	अ	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
2.	अन	अभाव, निषेध	अनमोल, अनबन, अनपढ़
3.	कु	बुरा	कुचाल, कुचैला, कुचक्र
4.	दु	कम, बुरा	दुबला, दुलारा, दुधारू
5.	नि	कमी	निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
6.	औ	हीन, निषेध	औगुन, औघर, औसर, औसान
7.	भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
8.	सु	अच्छा	सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
9.	अध	आधा	अधपका, अधकच्चा, अधमरा, अधकचरा
10.	उन	एक कम	उनतीस, उनचालीस, उनसठ, उनहत्तर
11.	पर	दूसरा, बाद का	परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
12.	बिन	बिना, निषेध	बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

प्रत्यय :

- प्रत्यय = प्रति (साथ में पर बाद में) + अय (चलनेवाला) शब्द का अर्थ है पीछे चलना।
- जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, वे **प्रत्यय** कहलाते हैं; जैसे– दयालु = दया शब्द के अंत में आलु जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गई है। अतः यहाँ 'आलु' शब्दांश प्रत्यय है।
- प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ भी नहीं होता और न ही इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता हैं
- प्रत्यय के दो भेद हैं– 1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय
- वे प्रत्यय जो धातु (root word) में जोडत्रे जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त (कृत् + अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे– लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय हैं तथा लेखक कृदंत शब्द हैं।
- वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों– संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण– में जुड़तें हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे– सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय है तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

The Institute
कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं

कृत् प्रत्यय (Primary Suffixes) :

क्र.	प्रत्यय	मूल शब्द/धातु	उदाहरण
1.	अक	लेख, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2.	अन	पालू, सह्, ने, चर्	पालन, सहन, नयन, चरण
3.	अना	घट्, तुल्,वन्द्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
4.	अनीय	मान्, रम्, कृश, पूज, श्रु	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय
5.	आ	सूख, भूल, जाग, पूज, इष्, भिक्ष्	सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा
6.	आई	लड़, सिल, पढ़, चढ़	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
7.	आन	उड़, मिल, दौड़	उड़ान, मिलान, दौड़ान
8.	इ	हर, गिर, दशरथ, माला	हरि, गिरि, दाशरथि, माली
9.	इया	छल, जड़, बढ़, घट	छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया
10.	इत	पठ, व्यथा, फुल, पुष्प	पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित
11.	इत्र	चर्, पो, खन्	चरित्र, पवित्र, खनित्र
12.	इयल	अड़, मर, सड़	अड़ियल, मरियल, सड़ियल
13.	ई	हँस, बोल, त्यज्, रेत	हँसी, बोली, त्यागी, रेती
14.	उक	इच्छ्, भिक्ष्	इच्छुक, भिक्षुक
15.	तव्य	कृ, वच्	कर्तव्य, वक्तव्य
16.	ता	आ, जा, बह, मर, गा	आता, जाता, बहता, मरता, गाता
17.	ति	अ, प्री, शक्, भज	अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति
18.	ते	जा, खा	जाते, खाते
19.	त्र	अन्य, सर्व, अस्	अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र
20.	न	क्रंद, वंद, मंद, खिद्, बेल, ले	क्रंदन, वंदन, मंदन, खिन्न, बेलन, लेन
21.	ना	पढ़, लिख, बेल, गा	पढ़ना, लिखना, बेलना, गाना
22.	म	दा, धा	दाम, धाम
23.	य	गद् पद्, कृ, पंडित, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ्	गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पश्चात्य, दंत्य, ओष्ठ्य
24.	या	मृग, विद्	मृगया, विद्या
25.	रू	गे	गेरू
26.	वाला	देना, आना, पढ़ना	देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला
27.	ऐया/वैया	रख, बच, डाँट; गा, खा	रखैया, बचैया, डटैया; गवैया, खवैया
28.	हार	होना, रखना, खेवना	होनहार, रखनहार, खेवनहार

तद्धित प्रत्यय (Nominal Suffixes) :

क्र.	प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
1.	आइ	पछताना, जगना	पछताइ, जगाइ
2.	आइन	पण्डित, ठाकुर	पण्डिताइन, ठकुराइन
3.	आई	पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा	पण्डिताई, ठकुराई, चौड़ाई
4.	आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी
5.	आयत	बहुत, पंच, अपना	बहुतायत, पंचायत, अपनायत
6.	आर/आरा	लोहा, सोना, दूध, गाँव	लोहार, सुनार, दूधार, गँवार
7.	आहट	चिकना, घबरा, चिल्ल, कड़वा	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट
8.	इल	फेन, कूट, तन्द्रा, जटा, पंक, स्वप्न, धूम	फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पंकिल, स्वप्निल, धूमिल
9.	इष्ठ	कन्, वर्, गुरु, बल	कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ
10.	ई	सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक, तेल, देहात	सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली, देहाती
11.	ईन	ग्राम, कुल	ग्रामीण, कुलीन
12.	ईय	भवत्, भारत, पाणिनी, राष्ट्र	भवदीय, भारतीय, पाणिनीय, राष्ट्रीय
13.	ए	बच्चा, लेखा, लड़का	बच्चे, लेखे, लड़के
14.	एय	अतिथि, अत्रि, कुन्ती, पुरुष, राधा	आतिथेय, आत्रेय, कौन्तेय, पौरुषेय, राधेय
15.	एल	फुल, नाक	फुलेल, नकेल
16.	ऐत	डाका, लाठी	डकैत, लठैत
17.	एरा/ऐरा	अंध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लुट	अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा
18.	ओला	खाट, पाट, साँप	खटोला, पटोला, सँपोला
19.	औती	बाप, ठाकुर, मान	बपौती, ठकरौती, मनौती
20.	औटा	बिल्ला, काजर	बिलौटा, कजरौटा
21.	क	धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल	धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक
22.	कर	विशेष, खास	विशेषकर, खासकर
23.	का	खट, झट	खटका, झटका
24.	जा	भ्राता, दो	भतीजा, दूजा
25.	ड़ा, ड़ी	चाम, बाछा; पंख, टाँग	चमड़ा, बछड़ा; पंखड़ी, टँगड़ी
26.	त	रंग, संग, खप	रंगत, संगत, खपत
27.	तन	अद्य	अद्यतन
28.	तर	गुरु, श्रेष्ठ	गुरुतर, श्रेष्ठतर
29.	तः	अंश, स्व	अंशतः, स्वतः
30.	ती	कम, बढ़, चढ़	कमती, बढ़ती, चढ़ती
31.	धा	अनेक, बहु, शत्	अनेकधा, बहुधा, शतधा
32.	पन	लड़का, बच्चा, काला, धीमा	लड़कपन, बचपन, कालापन, धीमापन
33.	पा	बूढ़ा, मोटा	बुढ़ापा, मोटापा

34.	मात्र	लेश, रंच	लेशमात्र, रंचमात्र
35.	य	ग्राम, पंडित, मधुर, दिती, मुनि	ग्राम्य, पांडित्य, माधुर्य, दैत्य, मौन
36.	ल	शीत, श्याम, वत्स, मांस	शीतल, श्यामल, वत्सल, मांसल
37.	लु	दया, कृपा, निद्रा, तंद्रा	दयालु, कृपालु, निद्रालु, तंद्रालु
38.	व	रघु, लघु	राघव, लाघव
39.	वत्	मातृ, पुत्र, यत्	मातृवत्, पुत्रवत्, यावत्
40.	वान्	धन, गुण	धनवान, गुणवान
41.	वाल	पाली, ब्रज	पालीवाल, ब्रजवाल
42.	वाँ	पाँच, आठ	पाँचवाँ, आठवाँ

43.	वी	तपस, मेघा, माया, लखनऊ	तपस्वी, मेघावी, मायावी, लखनवी
44.	शः	क्रम, अक्षर	क्रमशः, अक्षरशः
45.	स	वय, सर, घम	वयस, सरस, घमस
46.	सा	ऐ, वै, मरा	ऐसा, वैसा, मरा–सा
47.	सरा	दो, तीन	दूसरा, तीसरा
48.	सों	पर, तर	परसों, तरसों
49.	हरा	सोना, दो	सुनहरा, दुहरा
50.	हारा	पानी, लकड़ी	पनिहारा, लकड़हारा

शब्द और शब्द–भेद

1. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

2. इतिहास या स्रोत के आधार पर शब्दों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है–

I. तत्सम : जो शब्द अपरिवर्तित रूप में संस्कृत से लिए गए हैं।

जैसे– पुष्प, पुस्तक, बशलक, कन्या आदि।

II. तद्भव : संस्कृत के जो शब्द प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिंदी आदि से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिल रहे हैं।

जैसे– सात, साँप, कान, मुँह आदि।

III. देशी या देशज शब्द : यह वे शब्द हैं, जिनका स्रोत संस्कृत नहीं है, किन्तु वे भारत में ग्राम्य क्षेत्रों अथवा जनजातियों में बोली जाने वाली, संस्कृत से भिन्न भाषा परिवारों के हैं।

जैसे– झाड़ू, टट्टी, पगड़ी, लोटा, झोला, टाँग, ठेठ आदि।

IV. विदेशी शब्द : ये शब्द अरबी–फारसी या अंग्रेजी से प्रमुखतया आए हैं।

अरबी–फारसी : बाजार, अल्लाह, सजा, बाग, बगीचा, बर्फ, कागज़, कानून, गरीब, जिला, दरोगा, फकीर, बेगम, कत्ल, कैदी, जमींदार आदि।

अंग्रेजी : डॉक्टर, टैक्सी, डायरी, अफ़सर, डिग्री, टिकट, पार्टी, मोटर, गैस, कालेज, हैट, पुलिस, फीस, कालोनी, स्कूल, स्टाप, डेस्क, टोस्ट, कर्फ्यू, इंजन, टीम, फुटबाल, कापी, नर्स, कोर्ट, टेलीफोन, राशन, ट्यूब, मशीन, मिल, यूनियन, पालिसी, कमीशन आदि।

पुर्तगाली : अल्मारी, इस्तरी, कनस्तर, कप्तान, गोदाम, नीलाम, पादरी, संतरा, बालटी, साबुन।

फ्रांसीसी : काजू, कारतूस, अंग्रेज

जापानी : रिक्शा

चीनी : चाय, लीची

3. रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–

I. रूढ़ : जिन शब्दों के सार्थक खंड न हो सकें और जो अन्य शब्दों के मेल से न बने हों। जैसे– दिन, घर, किताब

II. यौगिक : वे शब्द जिनमें रूढ़ शब्द के अतिरिक्त एक शब्दांश (उपसर्ग, प्रत्यय) या एक अन्य रूढ़ शब्द अवश्य होता है। जैसे–

नमकीन ('नमक' रूढ़ और 'ईन' प्रत्यय)

पुस्तकालय ('पुस्तक' रूढ़ और 'आलय' रूढ़)

III. योगरूढ़ : जिन यौगिक शब्दों का एक रूढ़ अर्थ में प्रयोग होने लगा है।

जैसे : पंकज (पंक + ज) अर्थात् 'कीचड़ में जन्म लेने वाला' किन्तु इसका प्रयोग केवल 'कमल' के अर्थ में होता है।

4. व्याकरणिक विवेचन की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं :

I. विकारी शब्द : वे शब्द जिनमें लिंग, वचन आदि के आधार पर मूलशब्द का रूपांतरण होता है।

जैसे– लड़का → लड़के → लड़कों

मैं → मुझ → मुझे → मेरा

अच्छा → अच्छे

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी शब्द हैं।

II. अविकारी शब्द (अव्यय) : जिन शब्दों का प्रयोग मूल रूप में होता है और लिंग, वचन आदि के आधार पर उनमें कोई परिवर्तन नहीं आता।

जैसे– आज, यहाँ, और, अथवा

क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं।

The Institute

वाक्य–भेद

वाक्य के भेद :

वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं। उनका विभाजन हम दो आधारों पर कर सकते हैं–

1. **अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद–** अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं–
   (i) **विधानवाचक** (Assertive Sentence) : जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– मैंने दूध पिया। वर्षा हो रही है। राम पढ़ रहा है।
   (ii) **निषेधवाचक** (Negative Sentence) : जिन वाक्यों से कार्य न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे– मैंने दूध नहीं पिया। मैंने खाना नहीं खाया। तुम मत लिखो।
   (iii) **आज्ञावाचक** (Imperative Sentence) : जिन वाक्यों से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– बाजार जाकर फल ले आओ। मोहन तुम बैठ कर पढ़ो। बड़ों का सम्मान करो।
   (iv) **प्रश्नवाचक** (Interrogative Sentence) : जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– सीता तुम कहाँ से आ रही हो ? तुम क्या पढ़ रहे हो ? रमेश कहाँ जाएगा?
   (v) **इच्छावाचक** (Illative Sentence) : जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– तुम्हारा कल्याण हो। आज तो मैं केवल फल खाऊँगा। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।
   (vi) **संदेहवाचक** (Sentence indicating Doubt) : जिन वाक्यों से संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– शायद शाम को वर्षा हो जाए। वह आ रहा होगा, पर हमें क्या मालूम। हो सकता है राजेश आ जाए।
   (vii) **विस्मयवाचक** (Exclamatory Sentence) : जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उनहें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– वाह! कितना सुंदर दृश्य है। हाय! उसके माता–पिता दोनों ही चल बसे। शबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।
   (viii) **संकेतवाचक** (Conditional Sentence) : जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है। उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे। पिताजी अभी आते तो अच्छा होता। अगर वर्षा होगी तो फसल भी होगी।
2. **रचना के आधार पर वाक्य के भेद–** रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–
   (i) **सरल वाक्य/साधारण वाक्य** (Simple Sentence) : जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं, इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है; जैसे– मुकेश पढ़ता है। शिल्पी पत्र लिखती है। राकेश ने भोजन किया।
   (ii) **संयुक्त वाक्य** (Compound Sentence) : जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधक अवययों (और, तथा, एवं, पर, परंतु आदि) से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं; जैसे– वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो पर असत्य नहीं। उसने परिश्रम तो बहुत किया किंतु सफलता नहीं मिली।
   (iii) **मिश्रित/मिश्र वाक्य** (Complex Sentence) : जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उनहें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं; जैसे– ज्यों ही उसने दवा पी, वह सो गया। यदि परिश्रम करोगे तो, उत्तीर्ण हो जाओगे। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते।

वाक्य–शुद्धि

- वाक्य भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई होता है। अतएव परिष्कृत भाषा के लिए वाक्य शुद्धि का ज्ञान आवश्यक है। वाक्य–रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय से संबंधित या अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ हो सकती हैं। इन्हीं को आधार बनाकर परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं।
- नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य में मोटे अक्षरों में छपे शब्द अशुद्ध हैं जिनका शुद्ध रूप कोष्ठक में दिया गया है।

I. संज्ञा–संबंधी अशुद्धियाँ

1. हिन्दी के प्रचार में आज भी **बड़े–बड़े संकट** हैं। (बड़ी–बड़ी बाधाएँ)
2. सीता ने गीत की दो–चार **लड़ियाँ** गायीं। (कड़ियाँ)
3. पतिव्रता नारी को छूने का **उत्साह** कौन करेगा। (साहस)
4. कृषि हमारी व्यवस्था **की रीढ़** है। (का आधार)
5. प्रेम करना तलवार की **नोक पर चलना** है। (धार पर)
6. नगर की सारी **जनसंख्या** भूखी है। (जनता)
7. वह **मेरे शब्दों पर** ध्यान नहीं देता। (मेरी बात पर)
8. जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली **कथा** चरितार्थ होती है। (कहावत)
9. मुझे सफल होने की **निराशा** है। (आशा नहीं)
10. इस समस्या **की औषध** उसके पास है। (का समाधान)
11. गोलियों **की बाढ़**। (बौछार)

(i) लिंग–संबंधी अशुद्धियाँ

1. परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए। (बदलनी)
2. हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर **दिया गया**। (दी गयी)
3. मुझे मजा **आती** है। (आता)
4. रामायण **का** टीका। (की)
5. देश **की** सम्मान की रक्षा करो। (के)
6. लड़की ने जोर से हँस **दी**। (दिया)
7. दंगे में बालक, युवा, नर–नारी सब पकड़ी गयीं। (पकड़े गये)

(ii) वचन–संबंधी अशुद्धियाँ

1. **सबों** ने यह राय दी। (सब)
2. उसने अनेक प्रकार की **विद्या** सीखीं। (विद्याएँ)
3. मेरे **आँसू** से रूमाल भींग गया। (आँसुओं)
4. ऐसी एकाध **बातें** सुनकर दुःख होता है। (बात)
5. हमारे **सामानों** का ख्याल रखियेगा। (सामान)
6. वे विविध **विषय** से परिचित हैं। (विषयों)
7. इस विषय पर एक भी अच्छी **पुस्तकें** नहीं हैं। (पुस्तक)

(iii) कारक–संबंधी अशुद्धियाँ

1. **हमने** यह काम करना है। (हमें)
2. मैंने राम **को** पूछा। (से)
3. सब **से** नमस्ते। (को)
4. जनता **के** अन्दर असंतोष फैल गया। (में)
5. नौकर **का** कमीज। (की)
6. **मैंने** नहीं जाना। (मुझे)
7. मेरे नये पते **से** चिटि्ठयाँ भेजना। (पर)

II. सर्वनाम–संबंधी अशुद्धियाँ

1. **मेरे से** मत पूछो। (मुझ से)
2. **मेरे को** यह बात पसंद नहीं। (मुझे)
3. **तेरे को** अब जाना चाहिए। (तुझे)
4. **मैंने** नहीं जाना। (मुझे)
5. आप **आपका** काम करो। (अपना)
6. जो सोवेगा **वह** खोवेगा। (सो)
7. **आप** जाकर ले लो। (तुम)
8. **वह** सब भले लोग हैं। (वे)
9. आँख में **कौन** पड़ गया ? (क्या)
10. मैं **उन्होंके** पिताजी से जाकर मिला। (उनके)

III. विशेषण–संबंधी अशुद्धियाँ

1. उसे **भारी** प्यास लगी है। (बहुत)
2. जीवन और साहित्य का **घोर** संबंध है। (घनिष्ठ)
3. मुझे **बड़ी** भूख लगी है। (बहुत)
4. यह एक **गहरी** समस्या है। (गंभीर)
5. वहाँ **भारी भरकम** भीड़ जमा थी। (बहुत या बहुत भारी)
6. इसका **कोई** अर्थ नहीं है। (कुछ भी)
7. इस **वीरान** जीवन में। (नीरस)
8. उसकी **बहुत** हानि हुई। (बड़ी)
9. राजेश **अग्रिम** बुधवार को आएगा। (आगामी)
10. दूध का अभाव **चिन्तनीय** है। (चिन्ताजनक)

IV. क्रिया–संबंधी अशुद्धियाँ

1. वह कुरता **डालकर** गया है। (पहनकर)
2. पगड़ी **ओढ़कर** आओ। (बाँधकर)
3. वह लड़का मोटर **हाँक** सकता है। (चला)
4. छोटी उम्र शिक्षा **लेने** के लिए है। (पाने)
5. वे दस–बारह पशु **उठा** ले गए। (हाँक)
6. राधा ने माला **गूँध** ली। (गूँथ)
7. अपना हस्ताक्षर **लगा** दो। (कर)
8. उपस्थित लोगों ने संकल्प **लिया**। (किया)
9. हमें यह सावधानी **लेनी** होगी। (बरतनी)
10. वहाँ घना अँधेरा **घिरा** था। (छाया)

V. अव्यय–संबंधी अशुद्धियाँ

1. **यद्यपि** वह बीमार था परन्तु वह स्कूल गया। (तथापि)
2. पुस्तक **विद्वतापूर्ण** लिखी गयी है। (विद्वतापूर्वक)
3. **आसानीपूर्वक** यह काम कर लिया। (आसानी से)
4. **शनैः** उसको सफलता मिलने लगी। (शनैः शनैः)
5. **एकमात्र** दो उपाय हैं। (केवल)
6. यह पत्र आपके **अनुसार** है। (अनुरूप)
7. यह बात **कदापि भी** सत्य नहीं हो सकती। (कदापि)
8. वह **अत्यन्त ही** सुन्दर है। (अत्यन्त)
9. **सारे देश भर** में अकाल है। (सारे देश में)
10. मैं पहुँचा ही था **जब कि** वह आ गया। (कि)

VI. पदक्रम–संबंधी अशुद्धियाँ

1. छात्रों ने मुख्य अतिथि को **एक फूलों की माला** पहनाई। (फूलों की एक माला)
2. भीड़ में **चार पटना के व्यक्ति** भी थे। (पटना के चार व्यक्ति)
3. **कई बैंक के कर्मचारियों** ने प्रदर्शन किया। (बैंक के कई कर्मचारियों)
4. आप जाएँगे क्या ? (क्या आप जाएँगे ?)

VII. द्विरुक्ति/पुनरुक्ति–संबंधी अशुद्धियां

1. मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ **बशर्ते कि** तुम मेरा कहा मानो। (बशर्ते/शर्त है कि)
2. वह अभी **शैशव अवस्था** में है। (शैशव/शिशु अवस्था)
3. **मध्यकालीन युग** में कलाओं की बहुत उन्नति हुई। (मध्यकाल/मध्ययुग)
4. यौवनावस्था की बुराइयों से बचो। (यौवन/युवा अवस्था)
5. साहित्य के क्षेत्र में **महिला लेखिकाओं** की संख्या कम है। (लेखिकाओं/महिला लेखकों)
6. **नौजवान युवकों** को दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए। (नौजवानों/युवकों)
7. **आपका भवदीय**। (आपका/भवदीय)
8. **प्रातःकाल के समय** टहलना चाहिए। (प्रातःकाल/प्रातःसमय)
9. राजस्थान का **अधिकांश भाग** रेतीला है। (अधिकांश/अधिक भाग)
10. वे **परस्पर एक दूसरे** से उलझ पड़े। (परस्पर/एक दूसरे से)

VIII. अधिकपदत्य–संबंधी अशुद्धियाँ

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे पद अनावश्यक हैं–

1. मानव ईश्वर की **सबसे** उत्कृष्टतम कृति है।
2. हीन भावना से ग्रस्त मोहन अपने को दुनिया का **सबसे** निकृष्टतम व्यक्ति समझता है।
3. सीता नित्य गीता **को** पढ़ती है।
4. उसने **गुप्त** रहस्य प्रकट कर दिये।
5. माली **जल से** पौधों को सींच रहा था।

IX. शब्द–ज्ञान–संबंधी अशुद्धियाँ

1. बाण बड़ा उपयोगी **शस्त्र** है। (अस्त्र)
2. लाठी बड़ा उपयोगी **अस्त्र** है। (शस्त्र)
3. चिड़ियाँ **गा** रही हैं। (चहक)
4. वह नित्य गाने **की कसरत** करता है। (का अभ्यास/का रियाज)
5. सोहन नित्य दण्ड **मारता** है। (पेलता)
6. इस समय सीता की **आयु** सोलह वर्ष है। (उम्र/अवस्था)
7. धनीराम की **सौभाग्यवती** पुत्री का विवाह कल होगा। (सौभाग्यकांक्षिणी)
8. **कर्मवान** व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। (कर्मवीर)

वाक्यांश के लिए एक शब्द

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। लेकिन यह अभिव्यक्ति अगर संक्षिप्त, आकर्षक एवं सुगठित हो, तो रचना सशक्त एवं प्रभावपूर्ण बन जाती है। विश्व की अधिकांश समृद्ध भाषाओं की यही प्रकृति रही है कि वे एक वाक्य या वाक्यांश के स्थान पर एक सार्थक शब्द का प्रयोग करती हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ भर देने की क्षमता से समय की बचत के साथ–साथ अधिक ज्ञान भी सम्पादित होता है। ऐसे शब्दों का ज्ञान संक्षिप्तीकरण के लिए परमावश्यक है।

हिन्दी भाषा को यह शब्द–परम्परा धरोहर के रूप में प्राप्त हुई है। ऐसे शब्दों को 'स्थानापन्न शब्द' भी कहते हैं क्योंकि ये अन्य शब्द–समूहों का स्थान लेते हैं। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले ऐसे शब्दों की सूची इस प्रकार है–

- जिसके पास कुछ भी न हो — **अकिंचन**
- जिसकी कल्पना भी न की जा सके — **अकल्पनीय**
- जो कुछ भी न करे — **अकर्मण्य**
- जो कहा न जा सकता हो — **अकथनीय**
- जो काटा न जा सके — **अकाट्य**
- जो खाया न जा सके — **अखाद्य**
- जिसके टुकड़े (खण्ड) न हो सकें — **अखण्ड**
- जिसकी गिनती न हो सकती हो — **अगणित**
- जो इन्द्रिय ज्ञान से परे हो — **अगोचर**
- जहाँ पहुंचा न जा सके — **अगम्य**
- जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई) — **अग्रज**
- जो बहुत गहरा हो — **अगाध**
- जो पहले गिना जाता हो — **अग्रगण्य**
- जिसने अभी तक जन्म न लिया हो — **अजन्मा**
- जो कभी बूढ़ा न हो — **अजर**
- जिसको न जीता जा सके — **अजेय**
- जिसे जाना न जा सके — **अज्ञात**
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो — **अजातशत्रु**
- जिसका चिन्तन न किया जा सके — **अचिंत्य**
- जिसकी तुलना न की जा सके — **अतुलनीय**
- जो क्षमा न किया जा सके — **अक्षम्य**
- धरती और आकाश (स्वर्ग) के बीच का स्थान — **अंतरिक्ष**
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके — **अच्युत**
- जो छूने योग्य न हो — **अछूत**
- जो छुआ न गया हो — **अछूता**
- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो — **अतिथि**
- इन्द्रियों की पहुंच से बाहर — **अतीन्द्रिय**
- किसी सीमा का अनुचित उल्लंघन — **अतिक्रमण**
- आवश्यकता से अधिक बरसात — **अतिवृष्टि**
- जो व्यतीत हो गया हो — **अतीत**
- जिसके बारे में कोई निश्चय न हो — **अनिश्चित**
- जो अपनी बात से टले नहीं — **अटल**
- किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना — **अतिश्योक्ति**
- जिसका दमन न किया जा सके — **अदम्य**
- आगे का विचार न कर सकने वाला — **अदूरदर्शी**
- जो आज तक से सम्बन्ध रखता है — **अद्यतन**
- जिसके बराबर कोई दूसरा न हो — **अद्वितीय**
- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो — **अन्तेवासी**
- जिसकी थाह न मिले — **अथाह**
- ऐसा आदेश जो एक निश्चित अवधि तक लागू हो — **अध्यादेश**
- जो बिना सोचे–समझे विश्वास करे — **अंधविश्वासी**
- जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो — **अधिकृत**
- सर्वाधिकार प्राप्त व शासक — **अधिनायक**
- विधायिका द्वारा स्वीकृत नियम — **अधिनियम**
- वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला शुल्क — **अधिशुल्क**
- अधिकार में ले लिया गया हो — **अधिकृत**
- किसी एक में ही आस्था रखने वाला अथवा, अन्य से सम्बन्ध रखने वाला — **अनन्य**
- जिसका कोई आदि/प्रारम्भ न हो — **अनादि**
- जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो — **अनुत्तीर्ण**
- जिसका अनुभव किया गया हो — **अनुभूत**
- कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उंगली — **अनामिका**
- जिसका कोई घर (निकेत) न हो — **अनिकेत**
- जिसे करना आवश्यक हो, अथवा जिसका निवारण न किया जा सके — **अनिवार्य**
- जिसका भाषा द्वारा वर्णन न किया जा सके — **अनिर्वचनीय, अवर्णनीय**

The Institute
जहाँ सेलेक्शन सके निश्चित है

- वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो — अन्योदर
- परम्परा से चली आई हुई कथा — अनुश्रुति
- किसी सिद्धान्त या सम्प्रदाय का समर्थन करने वाला — अनुयायी
- किसी प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया — अनुमोदन
- एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना — अनुवाद
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हो — अंत्यज
- पलक को झपकाए बिना — अनिमेष, निनिर्मेष
- जिसे बुलाया न गया हो — अनाहूत
- जिसका किसी अन्य से लगाव या प्रेम हो — अनुरक्त
- जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो — अनुगृहीत
- पहले लिखे गए पत्र का स्मरण कराते हुए लिखा गया पत्र — अनुस्मारक
- वह सिद्धान्त जो हर वस्तु को नश्वर मानता हो — अनित्यवादी
- जो सबके मन की बात जानता हो — अन्तर्यामी
- जो कभी न आया हो — अनागत
- महल का वह भाग जहां रानियां निवास करती हैं — अन्तःपुर
- जो कुछ नहीं जानता हो — अज्ञ, अज्ञानी
- जिसका आदर न किया गया हो — अनादृत
- जो पहले पढ़ा न गया हो — अपठित
- जिसका मन कहीं अन्यत्र लगा हो — अन्यमनस्क
- नीचे की ओर लाना या खींचना — अपकर्ष
- जो बिना सोच–समझे अनुगमन करे — अन्धानुगामी
- आवश्यकता से अधिक धन का ग्रहण न करे — अपरिग्रह
- जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो — अपव्ययी
- जिसकी आशा न की गई हो — अप्रत्याशित
- जो किसी पर अभियोग लगाए — अभियोगी
- जिस पर अपराध करने का आरोप हो — अभियुक्त
- वह समय जो दोपहर के बाद आता है — अपराह्न
- जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध हो — अपथ्य
- जिस वस्तु का मूल्य न आंका जा सके — अमूल्य
- जो पहले न हुआ हो — अभूतपूर्व
- जो साहित्य–कला आदि में रस न ले — अरसिक
- जो कम जानता हो — अल्पज्ञ
- जिसको लांघा न जा सके — अलंघ्य
- किसी वसतु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा — अभीप्सा
- जो बिना वेतन के कार्य करता हो — अवैतनिक
- जो विधि या कानून के विरुद्ध हो — अवैध
- जो सोच–समझकर काम न करता हो — अविवेकी
- जो विधान के अनुसार न हो — अवैधानिक
- जो व्यक्ति विदेश में रहता हो — अप्रवासी
- जिसको व्यवहार में न लाया गया हो — अव्यवहृत
- जो मृत्यु के समीप हो — आसन्नमृत्यु
- जो कार्य अवश्य होने वाला हो — अवश्यम्भावी
- जिसका विश्वास न किया जा सके — अविश्वसनीय
- जिस रोग का इलाज न किया जा सके — असाध्य रोग
- जो शोक करने योग्य नहीं हो — अशोक्य
- फेंक कर चलाये जाने वाले हथियार — अस्त्र
- जिसकी भुजाएं घुटनों तक लम्बी हो — अजानुवाहु
- जो ईश्वर में विश्वास रखता हो — आस्तिक
- जो गुण–दोष का विवेचन करता हो — आलोचक
- जो कवि तत्काल कविता कर सके — आशुकवि
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो — आगतपति का
- जो शीघ्र प्रसन्न हो जाए — आशुतोष
- प्रारम्भ से लेकर अन्त तक — आद्योपान्त
- विदेश से देश में सामान मंगवाना — आयात
- अपने प्राण स्वयं ही समाप्त कर ले — आत्मघाती

The Institute जहाँ से ज्ञान एक बिंदु है।

- दूसरों के हित में अपने प्राणों का बलिदान करने वाला — **आत्मोत्सर्ग**
- वह जिस पर हमला किया गया हो — **आक्रांत**
- जो आत्मा से सम्बन्धित हो — **आध्यात्मिक**
- जहाँ प्राचीन युग की वसतुएं संग्रहीत हों — **अजायबघर**
- जिसका जन्म अंडे से हुआ हो — **अंडज**
- मूल कथा में आने वाला प्रसंग — **अन्तर्कथा**
- वह वस्तु जिसकी चाह हो — **इच्छित**
- इतिहास से सम्बन्धित ज्ञान रखने वाला — **इतिहासज्ञ**
- जो इन्द्र पर विजय प्राप्त कर चुका हो — **इन्द्रजीत**
- सूर्य के उदय होने का स्थान — **उदयाचल**
- ऐसी जमीन जो उत्पादक हो — **उर्वरा**
- जिस जमीन में कुछ भी पैदा न हो — **ऊसर**
- किसी के बाद उसका स्थान लेने वाला — **उत्तराधिकारी**
- पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि — **उपत्यका**
- जिसका ऊपर कथन किया गया हो — **उपर्युक्त**
- जिसने अपना ऋण पूरा चुका दिया हो — **उऋण**
- जो छाती के बल चलता हो — **उरग**
- भोजन करने के बाद बचा हुआ अन्न — **उच्छिष्ट**
- विचारों का ऐसा प्रवाह जिससे कोई निष्कर्ष न निकले — **ऊहापोह**
- सांसारिक वस्तुओं को प्रापत करने की इच्छा — **एषणा**
- जो व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता हो — **ऐच्छिक**
- भूत–प्रेत या सांप–बिच्छू का मंत्रों से इलाज करने वाला — **ओझा**
- जिस पर किसी एक का ही अधिकार हो — **एकाधिकार**
- कई जगह से मिलकर इकट्ठा किया हुआ — **एकीकृत**
- ऐसी लड़की जिसका विवाह न हुआ हो — **कुमारी, कन्या**
- दो व्यक्तियों में परस्पर हाने वाली बातचीत — **कथोपकथन**
- जो कल्पना से परे हो — **कल्पनातीत**
- किए हुए उपकार को न मानने वाला — **कृतघ्न**
- किए हुए उपकार को मानने वाला — **कृतज्ञ**

- जो धन को अत्यधिक कंजूसी से खर्च करता है — **कृपण**
- जिसकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र हो — **कुशाग्र बुद्धि**
- जो बात पूर्वकाल से लोगों में कह–सुन कर प्रचलित हो — **किंवदन्ती / जनश्रुति**
- वह बाह्य जगत के ज्ञान से अनभिज्ञ हो — **कूपमंडूक**
- जिसका जन्म अच्छे कुल में हुआ हो — **कुलीन**
- जिसे मोल / खरीद लिया गया हो — **क्रीत**
- अपनी गल्ती स्वीकार करने वाला — **कायल**
- काम से जी चुराने वाला — **कामचोर**
- शृंगारिक वासनाओं के प्रति आकर्षित — **कामुक**
- जिसने संकल्प कर रखा हो — **कृतसंकल्प**
- जिससे समय पर काम चल सके — **कामचलाऊ**
- लता, वृक्ष, फूलों से घिरा हुआ सुन्दर स्थान — **कुंज**
- बुरे मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति — **कुमार्गगामी**
- जिसका कुछ समय में ही नाश हो जाए — **क्षणभंगुर**
- जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं — **क्षितिज**
- जो भूख मिटाने के लिए बेचैन हो — **क्षुधातुर**
- जो क्षमा किया जा सके — **क्षम्य**
- वर्षा के चारों महीनों का समूह — **चौमासा**
- जिसकी चार भुजाएं हों — **चतुर्भुज**
- दूसरों के मत का विरोध करने वाला — **खण्डन**
- आकाश के पिण्डों का विवेचन करने वाला — **खगोलशास्त्र**
- वह स्त्री जिसका पति रात को अन्य स्त्री के साथ रहकर प्रातःकाल लौटे — **खंडिता**
- शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री — **गणिका**
- आकाश को स्पर्श करने वाला — **गगनचुम्बी**
- जो अशिष्ट व्यवहार करता हो — **गंवार**
- गुप्त रूप से घूम कर सूचना देने वाला — **गुप्तचर**
- घर या देश के अन्दर ही लोगों की आपसी लड़ाई — **गृहयुद्ध**
- जिस नाटक के संवाद गीतों के रूप में लिखें हों — **गीतिनाट्य**
- वह समय जब गायें जंगल से लौटती हों — **गोधूलि वेला**
- जहां से गंगा नदी का उद्गम होता है — **गंगोत्री**
- जो ग्रहण करने योग्य हो — **ग्राह्य**
- घास खोदकर जीवन–निर्वाह करने वाला — **घसियारा**
- शरीर को हानि पहुंचाने वाला — **घातक**
- जो पदार्थ घुलने वाला हो — **घुलनशील**
- वह व्यक्ति जो कार्य करने के लिए अनुचित रूप से धन की मांग करे — **घूसखोर**
- चक्र के रूप में घूमती हुई चलने वाली हवा — **चक्रवात**
- आश्चर्य में डाल देने वाला कार्य — **चमत्कार**
- वह रचना जिसमें गद्य और पद्य दोनों मिश्रित हो — **चम्पू**
- वह ब्याज जिसके मूल के ब्याज पर ब्याज लगता है — **चक्रवृद्धि**

- जिसके सिर पर चन्द्रकला हो (शिव) **चन्द्रशेखर/चन्द्रचूड़**
- लम्बे समय तक जीने वाला **चिरंजीवी**
- जो चिरकाल से चला आया है **चिरंतन**
- सावधान करने के लिए दिया गया संकेत **चेतावनी**
- जनप्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन व्यवस्था **जनतन्त्र**
- सभी प्रकार की चिन्ताओं को दूर करने वाली एक मणि **चिन्तामणि**
- जिस पर चिह्न लगाया गया हो **चिह्नित**
- जो गुप्त रूप से निवास कर रहा हो **छद्मवासी**
- वह स्थान जहाँ सैनिक निवास करते हों **छावनी**
- छिपकर आक्रमण करने वाला **छापामार**
- जो दूसरों में केवल दोषों को ही खोजता हो **छिद्रान्वेषी**
- जो जल से उत्पन्न होता हो **जलज**
- जो बात लोगों से सुनी गई हो **जनश्रुति**
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला **जंगम**
- जानने की इच्छा **जिज्ञासा**
- किसी को जीत लेने की इच्छा रखने वाला **जिगीषु**
- जिन्दा रहने की इच्छा **जिजीविषा**
- जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो **जितेन्द्रिय**
- किसी के जीवन भर के कार्यों का विवरण **जीवन–चरित्र**
- स्त्रियों द्वारा अपने सतीत्व की रक्षा के लिए किया गया अग्नि–प्रवेश **जौहर**
- ज्ञान–प्राप्ति की इच्छा रखने वाला **ज्ञान–पिपासु**
- बहुत बड़ा और गहरा प्राकृतिक जलाशय **झील**
- जहाँ सिक्कों की ढलाई होती है **टकसाल**
- अधिक समय तक रहने या चलने वाला **टिकाऊ**
- जो छोटे कद का हो **ठिगना**
- जो किसी गुट में न हो **तटस्थ**
- जो किसी चिन्तन में लीन हो **तल्लीन**
- ऋषियों के तप करने की भूमि **तपोभूमि**
- तर्क करने वाला व्यक्ति **तार्किक**
- ज्ञान में प्रवेश का मार्ग दर्शक **तीर्थंकर**
- किसी पद को छोड़ने के लिए लिखा गया पत्र **त्यागपत्र**
- गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन स्थान **त्रिवेणी/संगम**
- भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने वाला **त्रिकालज्ञ**
- भूत, वर्तमान और भविष्य को देखने वाला **त्रिकालदर्शी**
- दो भृकुटियों के बीच का स्थान **त्रिकुटी**
- वह व्यक्ति जिसे गोद लिया जाए **दत्तक**
- दस वर्षों की समयावधि **दशक**
- जंगल में फैलने वाली आग **दावाग्नि**
- दो बार जन्म लेने वाला **द्विज**
- जिसे कठिनाई से जाना जा सके **दुर्ज्ञेय**
- जिसे कठिनाई से लांघा जा सके **दुर्लंघ्य**
- बुरे भाव से की गई सन्धि **दुरभि सन्धि**
- जो कठिनाई से समझ में आता है **दुर्बोध**
- जो कठिनाई से वहन किया जा सके **दुर्वह**
- अनुचित वार के लिए आग्रह करना **दुराग्रह**
- जो बुरा आचरण करता हो **दुराचारी**
- जिसको जीतना कठिन हो **दुर्जेय**
- वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता हो **दुर्गम**
- आगे की बात भी सोच लेने वाला व्यक्ति **दूरदर्शी**
- जो शीघ्रता से चलता हो **द्रुतगामी**
- दो भिन्न भाषियों के बीच अनुवाद करके बातचीत कराने वाला **दुभाषिया**
- शिक्षा (दीक्षा) की समाप्ति पर दिए जाने वाला उपदेश **दीक्षान्त भाषण**
- धनुष को धारण करने वाला **धनुर्धर**
- सभी को धारण करने वाली **धरणी**
- किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु **धरोहर/थाती**
- श्रेष्ठ गुणों से युक्त नायक **धीरोदात्त**
- जिसकी धर्म में निष्ठा हो **धर्मनिष्ठ**
- अपने स्थान पर अचल रहने वाला **ध्रुव**
- नाखून से चोटी तक का वर्णन **नखशिख वर्णन**
- जिसका अभी–अभी जन्म हुआ हो **नवजात**
- जिसका अभी उदय या विकास हुआ हो **नवोदित**
- जो ममत्व से रहित हो **निर्मम**
- जो वस्तु नाशवान हो **नश्वर**
- जो आकाश में विचरण करता हो **नभचर**
- जिसका ईश्वर पर विश्वास न हो **नास्तिक**
- जो पढ़ना–लिखना न जानता हो **निरक्षर**
- जिसका कोई अर्थ न हो **निरर्थक**
- जिसका कोई रूप या आकार न हो **निराकार**
- जो मांस रहित भोजन करता हो **निरामिष**
- जिसके पास कोई उपाय न हो **निरुपाय**
- जिसके कोई सन्तान न हो **निःसंतान**
- नीचे लिखा हुआ **निम्नलिखित**
- जिसका कोई आधार न हो **निराधार**
- जिसका कोई आश्रय न हो **निराश्रित**
- जिसका अपना कोई स्वार्थ न हो **निःस्वार्थ**
- जिसको किसी में भी आसक्ति न हो **निस्संग, असंग**
- जिसको कोई इच्छा न हो **निःस्पृह**
- जिसमें कोई विकार न हो **निर्विकार**
- जिसको देश से निकाल दिया गया हो **निर्वासित**
- देश से बाहर वस्तुएं भेजने का कार्य **निर्यात**
- रात्रि में विचरण करने वाला **निशाचर**
- जिससे किसी की उपमा या तुलना न दी जा सके **निरुपम**

The Institute जहाँ से लेखपाल बनना जिद है

- निर्णय करने वाला व्यक्ति — निर्णायक
- जो सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो — निश्चिन्त
- रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान — नेपथ्य
- जो किसी पर दया न करे — निर्दय
- मास के दो पक्षों में से एक पक्ष — पखवाड़ा
- अपने किसी अपराध के लिए प्रकट होने वाला दुःख — पश्चाताप
- अपने पति में अनुराग रखने वाली स्त्री — पतिव्रता
- अपने मार्ग से भटका हुआ — पथभ्रष्ट
- अपने पद से हटाया हुआ — पदच्युत
- जो केवल दूध का आहार करता हो — दुग्धाहारी/पयोहारी
- दूसरों पर निर्भर रहने वाला — पराश्रयी/पराश्रित
- हाथ से लिखी हुई पुस्तक — पाण्डुलिपि
- जिसमें से आर–पार देखा जा सके — पारदर्शी
- पशुओं के समान जिसका स्वभाव हो — पाशविक
- पर पुरुष से प्रेम करने वाली — परकीया
- शरणागत की रक्षा करने वाला — प्रणतपाल
- एक बार कही हुई बात को दुहराते रहना — पिष्टपेषण
- किसी प्रश्न का शीघ्र उत्तर देने वाला — प्रत्युत्पन्न मति
- सर्वप्रथम किसी मत को चलाने वाला — प्रवर्तक
- पिता से प्राप्त की हुई सम्पत्ति — पैतृक सम्पत्ति
- जिसको देखकर अच्छा लगे — प्रियदर्शी
- जो दूसरों का उपकार करे — परोपकारी
- जो प्रकृति से सम्बन्धित हो — प्राकृतिक
- दूसरों के अधिकार में रहने वाला — पराधीन
- जो परलोग से सम्बन्धित हो — पारलौकिक
- मार्ग में खाने के लिए भोजन — पाथेय
- हास्य रस से परिपूर्ण नाटक — प्रहसन
- संध्या और रात्रि के बीच का समय — प्रदोष/पूर्वरात्र
- जो स्त्री पति द्वारा त्याग दी गई हो — परित्यक्ता
- किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता — पारंगत
- किसी परिश्रम के बदले मिलने वाली राशि — पारिश्रमिक
- उपकार के बदले किया गया उपकार — प्रत्युपकार
- बार–बार कही हुई बात — पुररुक्ति
- पहले कहा गया कथन — पूर्वोक्त
- दोपहर से पहले का समय — पूर्वाह्न
- वह स्त्री जिसका पति दूर स्थान पर गया हो — प्रोषितपतिका
- पृथ्वी का वह भाग जिसके तीन ओर पानी हो — प्रायद्वीप
- व्यर्थ में किया व्यय — अपव्यय
- सूर्योदय से दो घड़ी पहले तक का समय — ब्रह्ममुहूर्त
- बहुत विषयों का जानकार — बहुज्ञ
- समुद्र में लगने वाली आग — बड़वानल
- जो अनेक रूप धारण करता हो — बहुरूपिया
- वह स्त्री जिसके सन्तान न हो — बांझ
- जो बुद्धि से जीविका चलाता हो — बुद्धिजीवी
- जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न हो — निश्चिन्त
- अनेक भाषाओं को जानने वाला — बहुभाषाविद्
- रात्रि का भोजन — रात्रिभोज/ब्यालू
- जिसका हृदय टूट गया हो — भग्न हृदय
- भाग्य पर भरोसा रखने वाला — भाग्यवादी
- दीवारों पर बने हुए चित्र — भित्तिचित्र
- जो पृथ्वी के भीतर का ज्ञान रखता हो — भूगर्भवेत्ता
- औषधियों का जानकार — भेषज
- प्रातःकाल गाया जाने वाला राग — भैरवी
- कम खर्च करने वाला — मितव्ययी
- जो असत्य बोलता हो — मिथ्यावादी
- जो कम बोलता हो — मितभाषी
- केवल मुंह से ली जाने वाली परीक्षा — मौखिक
- जो रचना किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं लिखी गई हो — मौलिक
- दो पक्षों के बीच में पड़कर फैसला करने वाला — मध्यस्थ
- जो बहुत ऊँची आकांक्षा रखता हो — महत्वाकांक्षी
- जिसकी बुद्धि बहुत मन्द हो — मन्दबुद्धि
- मध्य रात्रि का समय — निशीथ/मध्यरात्र
- दोपहर का समय — मध्याह्न
- जिसकी आत्मा महान हो — महात्मा
- माता की हत्या करने वाला — मातृहंता
- जिसने मृत्यु को जीत लिया हो — मृत्युंजय
- हरिण (मृग) के नेत्रों समान आंखों वाली — मृगनयनी
- मुद्रा का अधिक चलन या प्रसार — मुद्रास्फीति
- मरणासन्न अवस्था वाला — मुमूर्षु
- शक्ति के अनुसार — यथाशक्ति
- घूम–घूम कर जीवन व्यतीत करने वाला — यायावर
- अपने युग का ज्ञान रखने वाला — युगद्रष्टा
- युद्ध की इच्छा रखने वाला — युयुत्सु
- जो यन्त्र से सम्बन्धित हो — यान्त्रिक
- किसानों से भूमि कर लेने वाला सरकारी विभाग — राजस्व विभाग
- रात को कुछ न दिखाई देने वाला रोग — रतौंधी
- विभिन्न वनस्पतियों और औषधियों से तैयार पदार्थ — रसायन
- सरकार की ओर से अधिकारिक रूप से प्रकाशित होने वाला पत्र — राजपत्र
- जिसके नीचे रेखाएं लगाई गई हों — रेखांकित
- जिसका कोई इलाज न हो — लाइलाज

The Institute

- जो इस संसार से भिन्न हो — **लोकोत्तर**
- बच्चों को सुलाने के लिए गाए जाने वाला गीत — **लोरी**
- जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाएं — **लोमहर्षक**
- जिसके हाथ में वज्र हो — **वज्रपाणि**
- जिसका वर्णन करना सम्भव न हो — **वर्णनातीत**
- कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रस्म — **वाग्दान**
- बहुत बोलने वाला — **वाचाल**
- बाल्यकाल और यौवन के मध्य की आयु — **वयःसन्धि**
- जिस पर विश्वास किया जा सके — **विश्वसनीय**
- किसी साहित्य के ग्रन्थों का समूह — **वाङ्गमय**
- जिसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी हो — **विधुर**
- अधिक पढ़ी–लिखी स्त्री — **विदुषी**
- जिसमें कोई विकार आ गया हो — **विकृत**
- विविध प्रकार के विवादों में फंसा हुआ — **विवादास्पद**
- किसी मामले के खिलाफ दिया गया मत — **विमत**
- सामाजिक मान–मार्यादा के विपरीत कार्य करने वाला — **वामाचारी**
- किसी विषय विशेष का अधिक जानकार — **विशेषज्ञ**
- जिसे अपने स्थान से हटा दिया गया हो — **विस्थापित**
- जिस स्त्री का पति मर गया हो — **विधवा**
- वह व्यक्ति जिसके शरीर के किसी भाग (अंग) में कमी हो — **विकलांग**
- जो अपने धर्म के विरुद्ध कार्य करता हो — **विधर्मी**
- जो विषय वासनाओं में अधिक डूबा हुआ हो — **विषयासक्त**
- जिस पर अभी विचार चल रहा हो — **विचाराधीन**
- विष्णु का उपासक — **वैष्णव**
- प्रशंसा के बहाने निन्दा करने वाला — **व्याजस्तुति**
- सौ वर्षों का समय — **शताब्दी**
- जो शक्ति की उपासना करता है — **शाक्त**
- हाथ में पकड़ कर चलाए जाने वाला हथियार — **शस्त्र**
- शरण में आया हुआ — **शरणागत**
- शरण की इच्छा रखने वाला — **शरणार्थी**
- जिसका कोई आदि और अन्त न हो — **शाश्वत**
- जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते हों — **श्लिष्ट, श्लेष**
- एक ही मां से उत्पन्न भाई — **सहोदर**
- जो सब कुछ जानता हो — **सर्वज्ञ**
- स्त्री के समान स्वभाव वाला — **स्त्रैण**
- स्वेच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला — **स्वयंसेवक**
- अपनी इच्छा से पति का वरण करने वाली — **स्वयंवरा**
- जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो — **स्वयंपाकी**
- अपने द्वारा अनुभव किया हुआ — **स्वानुभूत**
- सत्य के लिए आग्रह — **सत्याग्रह**
- सबको समान भाव से देखने वाला — **समदर्शी**
- स्पष्ट बात करने वाला — **स्पष्टवक्ता**
- जिसे अक्षर ज्ञान हो, जो पढ़ना लिखना जानता हो — **साक्षर**
- जो सत्य बोलता हो — **सत्यवादी**
- जिसकी कमियां ठीक कर दी गई हों — **संशोधित**
- जिसका चरित्र अच्छा हो — **सच्चरित्र**
- वह स्त्री जिसका पति जीवित हो — **सधवा**
- जो समान उम्र का हो — **समवयस्क**
- जो सदा से चला आ रहा हो — **सनातन**
- उसी समय में होने वाला — **समकालीन**
- जो दूसरों की बात सहन कर सकता हो — **सहिष्णु**
- जो सभी देशों या स्थानों से सम्बन्धित हो — **सार्वभौम**
- सब कुछ पाने वाला — **सर्वलब्ध**
- जो एक ही स्थान पर रहता हो — **स्थावर**
- जिसमें सभी का मेल हो जाता हो — **सामंजस्य**
- जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो — **सुग्रीव**
- सौ वस्तुओं का संग्रह — **सैकड़ा**
- दूसरे स्थान पर काम करने वाला — **स्थानापन्न**
- किसी काम में आगे बढ़ जाने की इच्छा — **स्पर्धा**
- अपना हित सोचने वाला — **स्वार्थी**
- जो सब जगह विद्यमान हो — **सर्वव्यापी**
- जो बाएं (सव्य) हाथ से भी काम कर लेता हो — **सव्यवसाची**
- जो स्त्री हंस की तरह गमन (गति) करती हो — **हंसगामिनी**
- दूसरे के कार्य में दखल देना — **हस्तक्षेप**
- हित चाहने वाला — **हितैषी**
- जिसे अपने हाथ में ले लिया गया हो — **हस्तगत**
- वह लेख जो हाथ से लिख गया हो — **हस्तलिखित**
- जो बात हृदय में अच्छी तरह समा गई हो — **हृदयंगम**
- सोने के समान चोटियों वाला पर्वत — **हेमाद्रि**
- हाथ से कार्य करने का कौशल — **हस्तलाघव**
- यज्ञ के लिए निर्धारित अग्नि — **होमाग्नि**
- हृदय को अतयधिक कष्ट पहुंचाने वाला — **हृदय विदारक**
- हवन से सम्बन्धित सामग्री — **हवि**
- जो बयान शपथ सहित दिया गया हो — **हलफ़नामा / शपथपत्र**
- जो किसी अन्य व्यक्ति के स्थान पर कार्यरत हो — **स्थानापन्न**
- वह राजकीय धन जो किसानों के सहायतार्थ दिया जाता है। — **तकावी / राजसहायता**
- जीवन के एक अंश को लेकर लिख गया प्रबंध काव्य — **खण्डकाव्य**

The Institute जहाँ सेलेक्शन एक जिद है

- वह स्थान जहाँ सर्दी–गर्मी को नियंत्रित कियागया हो —वातानुकूलन
- जो वेतन लिये बिना कार्य कर रहा हो —अवैतनिक
- जो उस पद पर होने के कारण किसी कार्य में रत हो —प्रभारी
- जो कुछ समय के लिए नियुक्त किया गया हो —अंशकालिक
- जो आधी अवधि तक कार्य करता है —अर्द्धकालिक
- जिसको छोड़ा नहीं जा सकता हो —अत्याज्य
- जो आंखों से सुनता हो —श्रवणचक्षुक/चक्षुस्त्रवा
- जो पेट बल चलता हो —उदग
- जिसका उत्तर नहीं दिया जा सके —अनुत्तरित
- जिसे कर्त्तव्य न सूझ रहा हो —किंकर्तव्यविमूढ़
- सौ वर्षों का समूह —शताब्दि
- दो भिन्न भाषियों के बीच मध्यस्थता करने वाला —दुभाषिया
- विष्णु का उपासक —वैष्णव
- गोद लिया हुआ —दत्तक
- जानने की इच्छा रखने वाला —जिज्ञासु
- जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ है —कुलीन
- जो युद्ध में स्थिर रहता है —युधिष्ठिर
- जो स्त्री कविता रचती है —कवयित्री
- जिसकी आशा न की गयी हो —अप्रत्याशित
- आशा हो बहुत अधिक —आशातीत
- जो धरती फोड़कर जन्मता हो —उद्भिज
- जो पहले कभी नहीं सुना गया है —अनसुत
- जो बहुत भाषाएं जानता है —बहुभाषाविद्
- जिसको क्षमा न किया जा सके —अक्षम्य
- जिसका कोई शत्रु न हो —अजातशत्रु
- जिस पर मुकदमा चल रहा हो —प्रतिवादी
- पुस्तक की हाथ से लिखी हुई प्रति —पाण्डुलिपि
- जिसका निवारण न हो सकता हो —अनिवार्य
- जिसके सिर पर बाल न हो —खल्वाट
- किसी काम को चित्त लगाकर करने वाला —दत्तचित्त
- उत्तर द्वारा खण्डन करके कहा हुआ —प्रत्युक्त
- जिसके हृदय को चोट पहुंची हो —मर्माहत
- वर्षा का अभाव —अनावृष्टि
- वर्षा की अधिकता —अतिवृष्टि
- जिसका वाणी/वचन द्वारा वर्णन न किया जा सके —अनिर्वचनीय
- जिसका किसी तरह वर्णन न हो सके —अवर्णनीय
- जो कहा न जा सके —अकथनीय
- जो कहा न गया हो —अकथित
- अंक (गोद) में सोने वाली स्त्री —अंकशयिनी
- अंक में सोने वाला पुरुष —अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ —अंकस्थ
- जिसका खण्डन न किया जा सके —अखण्डनीय
- जिसके खण्ड या टुकड़े न किये गय हों —अखंडित
- जो गिना न जा सके —अगणित/अनगिनत
- जिसकी गिनती न की जा सके —अग्रगण्य
- जो पढ़ा न जा सके —अपठनीय
- जो पढ़ा न गया हो —अपठित
- अपने को धोखा देना —आत्मवंचना
- अपने को धोखा देने वाला —आत्मवंचक
- जिसा पर आक्रमण हो —आक्रान्त
- जो आक्रमण करे —आक्रामक
- जिस पर आक्रमण न हो —अनाक्रांत
- पिता का पिता —पितामह
- पिता का पिता का पिता —प्रपितामह
- लाल कमल —कोकनद
- सफेद कमल —पुण्डरीक
- नीले रंग का कमल —नीलंम्बुज
- कमल की दण्डी —मृणाल
- इन्द्रियों से संबंधित —एंन्द्रिक
- इन्द्रियों का वश में रखने वाला —इन्द्रियजित
- इन्द्रियों पर किया जाने वाला वश —इन्द्रियविग्रह
- इन्द्रियों की पहुंच से बाहर —इन्द्रियातीत
- जो दूसरों की उन्नति देखकर जलता हो —ईर्ष्यालु
- जो तर्क के आधार ठीक सिद्ध हो —तर्कसंगत
- तर्क के द्वारा जो माना गया हो —तर्कसम्मत
- उपदेश देने वाला —उपदेशक
- दूसरों को उपदेश देने वाला —परोदेशक
- जो चक्रधारण करता हो —चक्रधर
- जिसके हाथ में चक्र (सुदर्शन) हो —चक्रपाणि
- सम्भोग की इच्छा —यियप्सु
- यज्ञ की इच्छा —यियक्षु
- जाने की इच्छा —यियासा
- जाने को इच्छुक —पिपासु
- फूलों की रज —पराग
- फूलों की मधु —मकरंद
- फूलों का आधा खिला भाग/फूलों का पूर्ण रूप से विकसित न होना —मुकुल
- रात्रि का प्रथम प्रहर —प्रदोष
- राति का द्वितीय/मध्य पहर —निशीथ
- रात्रि का तृतीय पहर —त्रियामा
- तारों भरी रात —विभावरी

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक ज़िद है

- चाँदनी रात —शर्वरी
- सूर्योदय से पहले का समय —ऊषाकाल
- संध्या एवं रात्रि के बीच का समय —गोधूलि बेला
- पृथ्वी एवं आकाश के बीच का स्थान —अंतरिक्ष
- जिसका आदि एवं अंत न हो —अनाद्यांत
- आदि से लेकर अंत के —आद्योपान्त
- बिना देख—रेख का जानवर —अनेर
- जिस जानवर का कोई माकलक न हो —अन्ना
- पर पुरुषों से गुप्त संबंध रखने वाली स्त्री —पुंश्चली
- पति के मरने पर पुनः विवाह करने वाली स्त्री —पुनर्भू
- वह लड़की जिसका विवाह होने को है —वैवाहिकी
- दस साल की लड़की —कुमारी
- दस से पन्द्रह वर्ष की लड़की —किशोरी
- 12 से 16 वर्ष की नायिका —अनुरागिनी/पुरवा
- जो स्त्री दुराचारिणी हो —स्वैरिणी
- स्त्री के वश में रहने वाला —स्त्रैण
- जिस स्त्री के पुत्र एवं पति हो —पुरन्ध्री
- जिस स्त्री के पति एवं पुत्र न हो —अबीरा
- जिस स्त्री के पुत्र न हो —निपूती
- जो स्त्री विद्वान हो —विदुषी
- वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले —अध्यूढा
- वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को हो —प्रवत्यपतिका
- वह स्त्री जिसका पति विदेश गया हो —प्रोषितघतिका
- वह जिसका पति विदेश से लौटा हो —आगत पतिका
- वह स्त्रीजिसका पति परदेश से आने वाला हो —आगमिस्यतपतिका
- जो सबके अंतःकरण की बात जाननेवाला हो —अन्तर्यामी
- जो सदा से चला आ रहा हो —अनवरत
- जो आगे की न सोचता हो —अदूरदर्शी
- दोपहर के बाद का समय —अपराह्न
- जो प्रमाण से सिद्ध न किया जा सके —अप्रमेय
- जो तौला या नापा न जा सके —अपरिमेय
- जो समय पर न हो —असामयिक
- जिसमें किसी का हेतु या कारण न हो —अहेतुक
- जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो —अन्यमनस्क
- तर्क के बिना मान लिया गया विश्वास —अंधविश्वास
- जो कार्य रूप में न लाया जा सके —अव्यावहारिक
- जिसका कोई खण्डन न हो सके —अकाट्य
- जिसका खंड न हो सके —अखण्ड
- पहाड़ का ऊपरी भाग/पर्वत के ऊपर की समतल भूमि —अधित्यका
- जिसे बुलाया न गया हो/जो बिना बुलाये आया हो —अनाहूत
- जो हिसाब किताब की जाँच करता हो —अंकेक्षक
- जिस वस्त्र को पहना नहीं गया हो —अप्रहत
- जिसके अंदर प्रसंसा करने की योग्यता न हो —अप्रशस्त
- जिसे अधिक बकवास न करना आता हो —अप्रगल्भ
- जिसकी सारी कामनाएं पूरी हो गयी हों —आप्तकाम
- सर्वाधिक सम्पन्न शासक अधिकारी —अधिनायक
- गुरू के समीप रहने वाला विद्यार्थी —अन्तेवासी/अन्तःवासी
- जो स्त्री सूर्य भी न देख पाती हो —असूर्ययश्मा
- जिसे बाहरी जगत का ज्ञान न हो —अन्तर्मुखी
- ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो —आकाशवृत्ति
- अतिथि की सेवा करने वाला —आतिथेयी
- दैव अथवा प्रकृति होने वाला दुःख —आधिदैविक
- भूतों अथवा जीवों द्वारा होने वाला दुख —अधिभौतिक
- पैर से लेकर सिर तक —आपादमस्तक
- ऋषि निर्मित या कथित —आर्ष
- जिसकी बाहे घुटने तक हो —अजानबाहु
- अग्रज के विवाह से पूर्व अनुज का विवाह —अनुवेश
- शीघ्र प्रसन्न होने वाला —आशुतोष
- जो तुरन्त कविता करता हो —आशुकवि
- जिसकी बाहें लंबी हो —दीर्घबाहु
- किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत्त —इतिवृत्त
- पूरब और उत्तर के बीच की दिशा —ईशानकोण
- जिसके दांत न जमे हों —उदन्त
- पर्वत के पास की भूमि —उपत्यका
- जन्म लेते ही मर जाना —आदण्डपात
- निरंतर ऊंचे उठने की इच्छा —उदीषा
- जो किसी नियम का पालन न करे —उच्छृंखल
- खाने से बचा जूड़ा भोजन —उच्छिष्ट
- जिसका जन्म गर्मी से हुआ हो —ऊष्मज
- इन्द्र का सफेद हाथी —ऐरावत
- जिसके एक आँख हो —एकाक्ष
- अपनी विवाहिता पत्नी से उत्पन्न पुत्र —औरस
- जिसका उपनिषद् से संबंध हो —औपनिषदिक
- अपने ही कुल का नाश करने वाला —कुलांगार
- इच्छानुसार रूप धारण करने वाला —कामरूप
- जिस व्यक्ति का विवाह न हुआ हो —कुमार
- जिसकी ग्रीवा कबूतर की तरह सुन्दर हो —कात्बुग्रीवा
- जिसकी ग्रीवा शंख की तरह सुन्दर हो —कपोतग्रीवा
- वह नयिका अपने पति/प्रेमी से मिलने जाती है —कृष्णाभिसारिका
- दूसरों की बात व्यर्थ ही काटने वाला —किन्तुवादी
- जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो —क्षिप्रहस्त
- जो सदैव हाथ में तलवार लिये रहता हो —खड़गहस्त

The Institute
जहाँ सेलेक्शन एक जिद है

- जो आकाश में चलता हो —खेचर
- सूर्य/चंद्र के समस्त मण्डल के ढक जानेवाला ग्रहण —खग्रास
- गंगा से संबंधित या गंगा में उत्पन्न —गांगेय
- प्राचीन आदर्श के अनुकूल चलने वाला/जो लकीर का फकीर हो —गतानुगतिक
- हाथी की तरह चलने वाली स्त्री —गजगामिनी
- चैतन्यस्वरूप की माया —चिद्विलास
- घृणा किये जाने योग्य —घृण्य
- जो आंखों से संबंधित हो —चाक्षुष
- किसी को जीतने की चाह —जिगीषा
- किसी पर विजय पाने की इच्छा रखने वाला —जिगीषु
- अधिक समय तक जीने की इच्छा —जिनीविषा
- अधिक समय तक जीते रहने का इच्छुक —जिजीविषु
- भोजन की इच्छा रखने वाला —जिघुत्षु
- खाने की इच्छा रखना —
- बेटी का पति —जमाता
- तैर कर पार करने की इच्छा रखने वाला —तितीर्षु
- तैरने या तैरकर पार होने की इच्छा —तितीर्षा
- जो काफी दिक्कत से काबू में आ सके —दुरभिग्रह
- जिसके पेट में माँ ने रस्सी बांध दी हो —दामोदर
- दुष्ट उद्देश्य से की जाने वाली मंत्रणा या साजिश —दुरभिसंधि
- जिसके बारे में सोचा तक न जा सके —दुर्विभाव्य
- दिशाएं ही जिसका वस्त्र हो —दिगम्बर
- मछली पकड़ने वाली जाति —धीवर
- हाल ब्याही स्त्री —नवोढ़ा
- वालूकामयप्रदेश के बीच पाये जाना वाला हरा भाग —नखलिस्तान
- जो इन्द्रिय रहित हो —निरीन्द्रिय
- मनोविनोद के लिए सैर करने वाला —पर्यटक
- पूछने योग्य —प्रष्टव्य
- टाह या मार्ग का भोजन —पाथेय
- किसी स्त्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करने के लिए उसका हाथ पकड़ना —पाणिग्रहण
- जिसकी प्रतारणा (ठगी) की गयी हो —प्रतारित
- वह जो दूसरों द्वारा लगाये गये अभियोग का उत्तर दे —प्रतिवादी
- वापस बुलाया हुआ —प्रत्याहूत
- ग्रंथ के वे बचे हुए अंश जो प्रायः अंत में जोड़े जाते हैं —परिशिष्ट
- ज्ञान नेत्र से देखने वाला अंधा व्यक्ति —प्रज्ञाचक्षु
- जमानत लेने वाला —प्रतिभू
- फल की आकांक्षा वाला —फलासक्त
- सागर में लगने वाली आग —बड़वानल
- जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके —बोधगम्य
- दो दिशाओं के बीच का कोण —विदिश
- क्रोध करने वाली स्त्री —भामिनी
- गर्भ में बालक की हत्या —भ्रणहत्या
- दीवार पर बने चित्र —भित्तिचित्र
- भूतों का ईश्वर —भूतेश
- राजा के साथ अभिषेक की हुई रानी —महिषी
- मनाने के लिए की गयी विनती —मनुहार
- मन वचन और कार्य से —मनसा–वाचा–कर्मणा
- रात में पहरा देने वाला व्यक्ति —यामिक
- हमेशा घूते रहने वाला —यायावर
- पुलिस या सेना में भर्ती नया जवान —रंगरूट
- उत्तराधिकार में मिली जायदाद —रिक्थ
- रघु के वंश का —राघव
- राधा के पुत्र —राधेय
- चाटने योग्य वस्तु —लेह्य
- कुछ लाभ पाने की चाह —लिप्सा
- जो आसानी से पच जाय —लघुपाक
- हिलोरे उत्पन्न करने वाला —विलोडक
- बचपन और जवानी के बीच की उम्र —वयःसन्धि
- कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रश्म —वाग्दान
- कन्या जिसके विवाह का वचन दे दिया गया हो —वाग्दत्ता
- जिसको पत्नीका साथ न हो —विपत्नीक
- जो सब में व्याप्त हो —विभु
- पसीने से उत्पन्न होने वाला —स्वेदजा
- इच्छा अनुसार अपना वर चुनने वाली कन्या —स्वयंवरा
- हरा–भरा मैदान —शाद्वल
- शत्रुओं का मार डालने वाला —शत्रुघ्न
- नित्य दीन दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था —सदावर्त
- जो (बायें) हाथ से काम कर लेने वाला —सव्यसाची
- जिसकी ग्रीवा सुन्दर —सुग्रीव
- अपने मन की प्रसन्नता के लिए —स्वान्तःसुखाय
- तालाब से उत्पन्न होने वाला कमल —सरसिज
- जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया जा सके —स्थावर
- सेना का वह भाग जो सबसे आगे रहता है —हरावल
- अगहन और पूस में पड़ने वाली ऋतु —हेमंत
- जो होने को हो/होकर रहे —होनहार
- हवन की वस्तु —हवि
- जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो —क्षिप्रहस्त

The Institute
जहाँ सपने होते हैं

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

ऐसा वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ को प्रतीति कराये, 'मुहावरा' कहलाता है। अरबी भाषा का 'मुहवरः' शब्द हिन्दी में 'मुहावरा' हो गया है। उर्दूवाले 'मुहाविरा' बोलते हैं। इसका अर्थ 'अभ्यास' या 'बातचीत' है। हिन्दी में 'मुहावरा' एक पारिभाषिक शब्द बन गया है। कुछ लोग 'मुहावरा' को 'रोजमर्रा' या 'वाग्धारा' भी कहते हैं।

हिन्दी में प्रचलित मुहावरे

- **अंक भरना** (स्नेह से लिपटा लेना)– माँ ने देखते ही बेटी को अंक भर लिया।
- **अंग टूटना** (थकान का दर्द)– इतना काम करना पड़ा कि आज अंग टूट रहे हैं।
- **अंगार बनना** (लाल होना, क्रुद्ध होना)– कमजोर लोग ही छोटी बात पर अंगार हो उठते हैं या बनते हैं, सयाने नहीं।
- **अंगारों पर पैर रखना** (जान–बूझकर हानिकारक कार्य करना)– अपने बाप के अकेले बेटे हो। इस तरह अंगारों पर पैर न रखो।
- **अंगारों पर लोटना** (डाह होना, दुःख सहना)– वह उसकी तरक्की देखते ही अंगारों पर लोटने लगा। मैं जीवन भर अंगारों पर लोटता रहा हूँ।
- **अँगूठा दिखाना** (समय पर धोखा देना)– अपना काम तो निकाल लिया, पर जब मुझे जरूरत पड़ी, तब अँगूठा दिखा दिया। भला, यह भी कोई मित्र का लक्षण है !
- **अँचरा पसारना** (माँगना, याचना करना)– हे देवी मैया, अपने बीमार बेटे के लिए आपके आगे अँचरा पसारती हूँ। उसे भला–चंगा कर दो, माँ !
- **अण्टी मारना** (चाल चलना)– ऐसी अण्टी मारो कि बच्चू चारों खाने चित गिरें।
- **अण्ड–बण्ड कहना** (भला–बुरा या अण्ट–सण्ट कहना)– क्या अण्ड–बण्ड कहे जा रहे हो। वह सुन लेगा, तो कचूमर निकाल छोड़ेगा।
- **अन्धाधुन्ध लुटाना** (बिना विचारे व्यय)– अपनी कमाई भी कोई अन्धाधुन्ध लुटाता है ?
- **अन्धा बनना** (आगे–पीछे कुछ न देखना)– धर्म से प्रेम करो, पर उसके पीछे अन्धा बनने से तो दुनिया नहीं चलती।
- **अन्धा बनाना** (धोखा देना)– मायामृग ने रामजी तक को अन्धा बनाया था। इस माया के पीछे मौजीलाला अन्धे बने तो क्या !
- **अन्धा होना** (विवेकभ्रष्ट होना)– अन्धे हो गये हो क्या ! जवान बेटे के सामने यह क्या जो–सो बके जा रहे हो ?
- **अन्धे की लकड़ी** (एक ही सहारा)– भाई, अब तो यही एक बेटा बचा, जो मुझ अन्धे की लकड़ी है। इसे परदेस न जाने दूँगा।
- **अन्धेरखाता** (अन्याय)– मुँहमाँगा दो, फिर भी चीज खराब। यह कैसा अन्धेरखाता है।
- **अन्धेरनगरी** (जहाँ धाँधली का बोलबाला हो)– इकन्नी का सिक्का था, तो चाय इकन्नी में मिलती थी, दस पैसे का निकला, तो दस पैसे में मिलने लगी। यह बाजार नहीं अन्धेरनगरी ही है।
- **अकेला दम** (अकेला)– मेरा क्या ! अकेला दम हूँ; जिधर सींग समायेगा, चल दूँगा।
- **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (बुद्धिभ्रष्ट होना)– विद्वान् और वीर होकर भी रावण की अक्ल पर पत्थर ही पड़ गया था कि उसने राम की पत्नी का अपहरण किया।
- **अक्ल की दुम** (अपने को बड़ा होशियार लगाने वाला)– दस तक का पहाड़ा भी तो आता नहीं, मगर अक्ल की दुम साइन्स का पण्डित बनता है।
- **अगले जमाने का आदमी** (सीधा–सादा, ईमानदार)– आज की दुनिया ऐसी हो गई कि अगले जमाने का आदमी बुद्धू समझा जाता है।
- **अड़ियल टट्टू** (अटक–अटककर या मुँह जोहकर काम करनेवाला)– ऐसा अड़ियल टट्टू है वह मुनीम कि कहो तभी कुछ करेगा, नहीं तो सारा काम ठप।
- **अढ़ाई दिन का हुकूमत** (कुछ दिनों की शानोशौकत)– जनाब, जरा होशियारी से काम लें। यह अढ़ाई दिन की हुकूमत जाती रहेगी।
- **अन्न–जल उठना** (रहने का संयोग न होना, मरना)– मालूम होता है कि तुम्हारा यहाँ से अन्न–जल उठ गया है, जो सबसे बिगाड़ किये रहते हो।
- **अन्न–जल करना** (जलपान, नाराजगी आदि के कारण निराहार के बाद आहार–ग्रहण)– भाई, बहुत दिनों पर आये हो। अन्न–जल को करते जाओ।
- **अन्न लगना** (स्वस्थ रहना)– उसे ससुराल का हसी अन्न लगता है। इसीलिए तो वह वहीं का हो गया।
- **अपना उल्लू सीधा करना** (अपना काम निकालना)– अपना उल्लू सीधा करना हो, तो गधे तक को बाप कहो।
- **अपना किया पाना** (कर्म का फल भोगना)– बेहूदों को जब मुँह लगाया है, तो अपना किया पाओ। झखते क्या हो ?
- **अपना–सा मुँह लेकर रह जाना** (शर्मिन्दा होना)– आज मैंने ऐसी चुभती बात कहीं कि वे अपना–सा मुँह लिए रह गये।
- **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** (स्वार्थी होना, अलग रहना)– यदि सभी अपनी खिचड़ी अलग पकाने लगें, तो देश और समाज की उन्नति होने से रही।
- **अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना** (संकट मोल लेना)– उससे तकरार कर तुमने अपने पाँव आप कल्हाड़ी मारी है।
- **अपने पैरों खड़ा होना** (स्वावलम्बी होना)– अपनी तरक्की के लिए अपने पैरों खड़े होना जरूरी है।
- **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना** (अपनी बड़ाई आप करना)– जो योग्य होते हैं, उनकी प्रशंसा दूसरे करते ही हैं। वे अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनते।
- **अब–तब करना** (बहाना करना)– कोई भी चीज माँगो, वह अब–तब करना शुरू कर देगा।
- **अब–तब होना** (परेशान करना या करने के करीब होना)– दवा देने से क्या ! वह तो अब–तब हो रहा है।
- **आँच न आने देना** (जरा भी कष्ट या दोष न आने देना)– तुम निश्चिन्त रहो। तुम पर आँच न आने दूँगा।
- **आठ–आठ आँसू रोना** (बुरी तरह पछताना)– इस उमर में न पढ़ा, तो आठ–आठ आँसू न रोओ तो कहना।
- **आसन डोलना** (लुब्ध या विचलित होना)– धन के आगे ईमान का भी आसन डोल जाया करता है।
- **आस्तीन का साँप** (कपटी मित्र)– उससे सावधान रहो। आस्तीन का साँप है वह।

- **आसमान टूट पड़ना** (गजब का संकट पड़ना)– पाँच लोगों को खिलाने–पिलाने में ऐसा क्या आसमान टूट पड़ा कि तुम सारा घर सिर पर उठाये हो ?
- **ईंट से ईंट बजाना** (युद्धात्मक विनाश लाना)– शुरू में तो हिटलर ने यूरोप में ईंट–से–ईंट बजा छोड़ी, मगर बाद में खुद उसकी ईंटें बजने लगीं।
- **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (किसी की दुष्टता का करारा जवाब देना)– ऐसे दुश्मनों की ईंट का जवाब हम पत्थर से देते हैं।
- **ईद का चाँद होना** (बहुत दिनों पर दीखना)– तुम्हें देखने को तरस गया, तुम तो ईद का चाँद हो गये।
- **उगल देना** (गुप्त बात प्रकट करना)– कोतवाल से डरकर चोर ने सारी बात उगल दी।
- **उठा न रखना** (कसर न छोड़ना)– मैं तुम्हारी नौकरी के लिए कुछन उठा रखूँगा।
- **उल्टी गंगा बहाना** (प्रतिकूल कार्य)– ईश्वर और जीव में प्रेमी और प्रेमिका–जैसे सम्बन्ध की सूफियोंवाली कल्पना उल्टी गंगा बहाना है। हमारा साहित्य भगवान् और भक्त में पिता और पुत्र–जैसा ही सम्बन्ध मानता रहा है।
- **उड़ती चिड़िया पहचानना** (मन की या रहस्य की बात ताड़ना)– कोई मुझे धोखा नहीं दे सकता। मैं उड़ती चिड़िया पहचान लेता हूँ।
- **उन्नीस–बीस होना** (एक का दूसरे से कुछ अच्छा होना)– दोनों गायें बस उन्नीस–बीस हैं।
- **एक आँख से देखना** (बराबर मानना)– प्रजातन्त्र वह शासन है जहाँ कानून, मजदूरी, अवसर इत्यादि सभी मामले में अपने सदस्यों को एक आँख देखा जाता है।
- **एक लाठी से सबको हाँकना** (उचित–अनुचित का बिना विचार किये व्यवहार)– समानता का अर्थ एक लाठी से सबको हाँकना नहीं है, बल्कि सबको समान अवसर और जीवन–मूल्य देना है।
- **कल पड़ना** (चैन मिलना)– कल रात वर्षा हुई, तो थोड़ी कल पड़ी।
- **किरकिरा होना** (विघ्न आना)– जलसे में उनके शरीक न होने से सारा मजा किरकिरा हो गया।
- **किस मर्ज की दवा** (किस काम के)– चाहते हो चपरासीगीरी और साइकिल चलाओगे नहीं। आखिर तुम किस मर्ज की दवा हो ?
- **कोसों दूर भागना** (बहुत अलग रहना)– भाँग की क्या बात, मैं तो बीड़ी के धुएँ तक से कोसों दूर भागता हूँ।
- **कलेजे पर साँप लोटना** (कुढ़ना, डाह करना)– जो सब तरह से भरा पूरा है, दूसरे की उन्नति पर उसके कलेजे पर साँप क्यों लोटे !
- **कलेजा ठण्डा होना** (सन्तोष होना)– बडत्री बहू जब मरी, तब सौत का कलेजा ठण्डा हुआ।
- **कागजी घोड़े दौड़ाना** (केवल लिखा–पढ़ी करना, पर कुछ काम की बात न होना)– आजकल सरकारी दफ्तर में सिर्फ कागजी घोड़े दौड़ते हैं, होता–जाता कुछ नहीं।
- **कुत्ते की मौत मरना** (बुरी तरह मरना)– कंस की किस्मत ही ऐसी थी। कुत्ते की मौत मरा तो क्या !
- **किताब का कीड़ा होना** (पढ़ने के सिवा कुछ न करना)– विद्यार्थी का अर्थ किताब का कीड़ा होना नहीं, बल्कि स्वस्थ शरीर और उन्नत मस्तिष्कवाला होनहार युवक होना है।
- **कलम तोड़ना** (बढ़िया लिखना)– वाह ! क्या अच्छा लिखा है ! तुमने तो कलम तोड़ दी।
- **काँटा निकलना** (बाधा दूर होना)– उस बेईमान से पल्ला छूटा। चलो, काँटा निकला।
- **कागज काला करना** (बिना मतलब कुछ लिखना)– वारिसशाह ने अपनी 'हीर' के शुरू में ही प्रार्थना की है– रहस्य की बात लिखनेवालों का साथ दो, कागज काला करने वालों का नहीं।
- **किस खेत की मूली** (अधिकारहीन, शक्तिहीन)– मेरे सामने तो बड़ों–बड़ों को झुकना पड़ा है। तुम किस खेत की मूली हो ?
- **कुआँ खोदना** (हानि पहुँचाने के यत्न करना)– जो दूसरों के लिए कुआँ खोदता है उसमें वह खुद गिरता है।
- **खरी–खोटी सुनाना** (भला–बुरा कहना)– कितनी खरी–खोटी सुना चुका हूँ, मगर वह बेकहा माने तब तो ?
- **खरी–खरी सुनाना** (कटु सत्य कहना)– मैंने उसे वह खरी–खरी सुनायी कि वह अपनी सारी हेकड़ी भूल गया।
- **खेत रहना या आना** (वीरगति पाना)– पानीपत की तीसरी लड़ाई में इतने मराठे खेत रहे (या आये) कि मराठा–भूमि जवानों से खाली हो गयी।
- **खून–पसीना एक करना** (कठिन परिश्रम)– बापने खून–पसीना एक कर पढ़ाया और साहबजादे कमाने लगे, तो उसी बाप को दूध की मक्खी कर बैठे।
- **खटाई में पड़ना** (झमेले में पड़ना, रुक जाना)– बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके मुकर जाने से सारा काम खटाई में पड़ गया।
- **खाक छानना** (भटकना)– नौकरी की खोज में वह खाक छानता रहा।
- **खेल खेलाना** (परेशान करना)– खेल खेलाना छोड़ो और साफ–साफ कहो कि तुम्हारा इरादा क्या है।
- **गाल बजाना** (डींग हाँकना)– जो करता है, वही जानता है। गाल बजानेवाले क्या जानें ?
- **गिन–गिनकर पैर रखना** (सुस्त चलना, हद से ज्यादा सावधानी बरतना)– माना कि थक गये हो, मगर गिन–गिनकर पैर क्या रख रहे हो ? शाम के पहले घर पहुँचना है या नहीं ?
- **गुस्सा पीना** (क्रोध दबाना)– गुस्स पीकर रह गया। चाचा का वह मुँहलगा न होता, तो उसकी गत बना छोड़ता।
- **गला छूटना** (पिण्ड छूटना)– उस कंजूस की दोस्ती टूट ही जाती, तो गला छूटता।
- **गिरगिट की तरह रंग बदलना** (एक रंग–ढंग पर न रहना)– उसका क्या भरोसा। वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता है।
- **गूलर का फूल होना** (लापता होना)– वह तो ऐसा गूलर का फूल हो गया है कि उसके बारे में कुछ कहना मुश्किल है।
- **गड़े मुर्दे उखाड़ना** (दबी हुई बात फिर से उभारना)– जो हुआ सो हुआ, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ ?
- **गाँठ का पूरा** (मालदार)– धूर्त नौकरों को अक्ल का अन्धा, गाँठ का पूरा मालिक बहुत पसन्द आता है।
- **गाँठ में बाँधना** (खूब याद रखना)– यह बात गाँठ में बाँध लो, तन्दुरुस्ती रही, तो सब रहेगा।
- **गुदड़ी का लाल** (गरीब के घर में गुणवान् का उत्पन्न होना)– अपने वंश में प्रेमचन्द सचमुच गुदड़ी के लाल थे।
- **घोड़े बेचकर सोना** (बेफिक्र होना)– बेटी तो ब्याह दी। अब क्या, घोड़े बेचकर सोओ।

The Institute

- **घड़ों पानी पड़ जाना** (अत्यन्त लज्जित होना)– वह हमेशा फर्स्ट क्लास लेता था, मगर इस बार परीक्षा में चोरी करते समय रँगे हाथ पकड़े जाने पर बच्चू पर घड़ों पानी पड़ गया।
- **घी के दीए जलाना** (अप्रत्याशित लाभ पर प्रसन्नता)– जिससे तुम्हारी बराबर ठनती रही, वह बेचारा कल शाम कूच कर गया। अब क्या है, घी के दीये जलाओ।
- **घर बसाना** (विवाह करना)– उसने घर क्या बसाया, बाहर निकलता ही नहीं।
- **घर का न घाट का** (कहीं का नहीं)– कोई काम आता नहीं और न लगन ही है कि कुछ सीखे–पढ़े। ऐसा घर का न घाट का जिये तो कैसे जियें !
- **घात लगाना** (मौका ताकना)– वह चोर दरवान इसी दिन के लिए तो घात लगाये था, वर्ना विश्वास का ऐसा रँगीला नाटक खेलकर सेठ की तिजोरी–चाबी तक कैसे समझे रहता ?
- **चल बसना** (मरना, खत्म होना)– बेचारे का बेटा भरी जवानी में चल बसा।
- **चार दिन की चाँदनी** (थोड़े दिन का सुख)– राजा बलि का सारा बल भी जब चार दिन की चाँदनी ही रहा, तो तुम किस खेत की मूली हो ?
- **चींटी के पर लगना या जमना** (विनाश के लक्षण प्रकट होना)– इसे चींटी के पर जमना ही कहेंगे कि अवतारी राम से रावण बुरी तरह पेश आया।
- **चूँ न करना** (सह जाना, जवाब न देना)– वह जीवनभर सारे दुःख सहता रहा, पर चूँ तक न की।
- **चण्डूखाने की गप** (बहकी या बेतुकी बातें करना)– तुम जो कह गये, वह चण्डूखाने की गप के सिवा और क्या है?
- **चादर से बाहर पैर पसारना** (आय से अधिक व्यय करना)– डेढ़ सौ ही कमाते हो और इतनी खर्चीली लतें पाल रखी हैं। चादर के बाहर पैर पसारना कौन–सी अक्लमन्दी है ?
- **चाँद पर थूकना** (व्यर्थ निन्दा या सम्माननीय का अनादर करना)– जिस भलेमानस ने कभी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, उसे ही तुम बुरा–भला कह रहे हो ? भला, चाँद पर भी थूका जाता है ?
- **चिराग तले अँधेरा** (पण्डित के घर में घोर मूर्खता का आचरण)– पण्डितजी स्वयं तो बड़े विद्वान् हैं, किन्तु उनके लड़के को चिराग तले अँधेरा ही जानो।
- **चूड़ियाँ पहनना** (स्त्री की–सी असमर्थता प्रकट करना)– इतने अपमानपर भी चुप बैठे हो। चूड़ियाँ तो नहीं पहन रखी हैं तुमने ?
- **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना** (डरना, घबराना)– साम्यवाद का नाम सुनते ही पूँजीपतियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगती हैं।
- **छप्पर फाड़कर देना** (अचानक या बिना परिश्रम के सम्पन्न करना)– भगवान् देता है, तो छप्पर फाड़कर देता है।
- **छक्के छूटना** (बुरी तरह पराजित होना)– महाराजकुमार विजयनगरम् की विकेट–कीपरी में अच्छे–अच्छे बॉलर के छक्के छूट चुके हैं।
- **जल–भुनकर खाक हो जाना** (क्रोध से पागल होना)– तुम तो जरा–सी बात पर जल–भुनकर खाक हुए जा रहे हो।
- **जहर उगलना** (अपमानजनक बात कहना)– आजकल की चुनाव सभाओं में पार्टियाँ अपना कार्यक्रम बताती नहीं, अधिकतर अपने विरोधी उम्मीदवार के खिलाफ जहर उगलने का ही काम किया करती हैं।
- **जीती मक्खी निगलना** (जानबूझकर कुछ अशोभन या अभद्र करना)– उस बेकसूर के खिलाफ गवाही ? मुझसे यह जीती मक्खी नहीं निगली जायेगी।
- **जूते चाटना** (चापलूसी करना)– अफसरों के जूते चाटते–चाटते वह थक गया, मगर कोई फल न निकला।
- **जमीन पर पैर न पड़ना** (अधिक घमण्ड करना)– अधिकार पाकर आज हमारे नेताओं के पैर जमीन पर नहीं पड़ते।
- **जान पर खेलना** (साहसिक कार्य)– हम जान पर खेलकर भी अपने देश की रक्षा करेंगे।
- **टका–सा मुँह लेकर रहना** (शर्मिन्दा होना)– जादूगर की पोल खुली कि वह टका–सा मुँह लेकर रह गया।
- **टट्टी की ओट शिकार खेलना** (छिपे तौर पर किसी के विरुद्ध कुछ करना)– भिड़ना ही हो, तो सामने आओ। टट्टी की ओट शिकार क्या खेलते हो ?
- **टाँग अड़ाना** (अड़चन डालना)– हर बात में टाँग ही अड़ाते हो या कुछ आता भी है तुम्हें ?
- **टाट उलटना** (दिवाला निकलना)– जब उसका टाट उलटा, तो रकम डूबी ही समझो।
- **तूती बोलना** (प्रभाव जमाना)– आजकल तो आपकी ही तूती बोल रही है।
- **तोते की तरह आँखें फेरना** (बेमुरव्वत होना)– कितना ही किसी का भला करो, वह तोते की तरह आँखें फेर ही लेगा। भैया, जमाना ही ऐसा है।
- **तीन तेरह होना** (तितर–बितर होना)– यों तो आपसी मतभेद था ही, श्रीकृष्ण के आँखें मूँदते ही रहा–सहा यदुकुल और भी तीन–तेरह हो रहा।
- **तिल का ताड़ करना** (बात को तूल देना)– मैंने उसे सिर्फ बेहूदा कहा, मगर मुहल्लेवालों ने यह तिल का ताड़ कर दिया कि मैंने उसे दुनियाभर की गालियाँ दीं।
- **दौड़ धूप करना** (बड़ी कोशिश करना)– कौन बाप अपनी बेटी के ब्याह के लिए दौड़–धूप नहीं करता ?
- **दो कौड़ी का आदमी** (तुच्छ या अविश्वसनीय व्यक्ति)– किस दो कौड़ी के आदमी की बात करते हो ?
- **दिन दूना रात चौगुना** (खूब उन्नति)– योजनाओं के चलते ही देश का विकास दिन दूना रात चौगुना हुआ।
- **दो टूक बात कहना** (स्पष्ट कह देना)– अंगद ने रावण से दो टूक बात कही। दूत हो तो ऐसा !
- **दो दिन का मेहमान** (जल्द मरने वाला)– किसी का क्या बिगाड़ेगा ? वह बेचारा खुद दो दिन का मेहमान है।
- **दूध के दाँत न टूटना** (ज्ञानहीन या अनुभवहीन)– वह सभा में क्या बोलेगा ?
- **धज्जियाँ उड़ाना** (किसी के दोषों को चुन–चुनकर गिनाना)– उसने उन लोगों की धज्जियाँ उड़ाना शुरू किया कि वे वहाँ से भाग खड़े हुए।
- **निन्नानबे का फेर** (धन जोड़ने का बुरा लालच)– जेठमल निनान्नबे के फेर में दोपहर को दतुअन करता है, तो तीसरे पहर नाश्ता।
- **नौ–दो ग्यारह होना** (चम्पत होना)– लोग दौड़े कि चोर नौ–दो ग्यारह हो गये।
- **न इधर का, न उधर का** (कहीं का नहीं)– कम्बख्त ने न पढ़ा, न बाप की दस्तकारी सीखी; न इधर का रहा, न उधर का।
- **नाच नचाना** (तंग करना)– यह नाच नचाना ठीक नहीं। आज तुम्हें दो टूक कह ही देना होगा।

- **पेट में चूहे कूदना** (जोर की भूख)– पेट में चूहे कूद रहे हैं। पहले कुछ खा लूँ, तब तुम्हारी सुनूँगा।
- **पट्टी पढ़ाना** (बुरी राय देना)– तुमने मेरे बेटे को कैसी पट्टी पढ़ाई कि वह घर जाता ही नहीं ?
- **पहाड़ टूट पड़ना** (भारी विपत्ति आना)– उस बेचारे पर तो दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।
- **पौ बारह होना** (खूब लाभ होना)– क्या पूछना है ! आजकल तुम व्यापारियों के ही तो पौ बारह है।
- **पाँचों उँगलियाँ घी में** (पूरे लाभ में)– पिछड़े देशों में उद्योगियों और मेहनतकशों की हालत पतली रहती है तथा दलालों, कमीशन एजेण्टों और नौकरशाहों की ही पाँचों उँगलियाँ घी में रहती हैं।
- **पगड़ी रखना** (इज्जत बचाना)– हल्दीघाटी में झाला सरदार ने राजपूतों की पगड़ी रख ली।
- **फूलना–फलना** (धनवान् या कुलवान् होना)– मेरा आशीर्वाद है; सदा फूलो–फलो।
- **बरस पड़ना** (क्रोध में आना)– गलती न जाने किसकी थी और वह बरस पड़ा मुझ पर।
- **बाँसों उठलना** (बहुत खुशी)– परीक्षा में सफलता का समाचार पाकर वह बाँसों उठल रहा है।
- **बाजी ले जाना या मारना** (जीतना, आगे निकल जाना)– देखें, दौड़ में कौन बाजी ले जाता या मारता है।
- **बट्टा लगाना** (कलंक लगाना)– शराब पीकर तुमने अपने धर्मात्मा पिता के नाम पर बट्टा लगा दिया।
- **बाजार गर्म होना** (बोलबाला, काम में तेजी)– आजकल जात–पाँत का बाजार इतना गर्म है कि जिस दल को देखो, इसी आधार पर अपने उम्मीदवार खड़ा करता है।
- **बाँछे खिलना** (अत्यन्त प्रसन्न होना)– इस बार उसके लड़का हुआ है। तभी तो उसकी बाछें खिली हुई हैं।
- **भाड़े का टट्टू** (पैसे का गुलाम)– ये भाड़े का टट्टू क्या बिगाड़ लेंगे ? एक–एक आयें। अगर छठी का दूध न याद दिलाया, तो मेरा नाम नहीं।
- **भींगी बिल्ली बनना** (डर से दबना, डर या आशंका से दुबकना)– क्या भींगी बिल्ली बने घर में घुसे हो ? अगहन का जाड़ा भी कोई जाड़ा है कि टहलते ही तुम्हें निमोनिया धर दबाये?
- **मक्खियाँ मारना** (बेकार बैठे रहना)– आजकर पढ़े–लिखे लोग जब मक्खियाँ मार रहे हैं, तब जिसे कुछ नहीं आता उसका क्या कहना।
- **मैदान मारना** (बाजी या लड़ाई जीतना)– पानीपत की लड़ाई में आखिर अब्दाली ने ही मैदान मारा।
- **मोटा असामी** (मालदार)– बेचू पाण्डे को बहुत दिनों बाद आज मोटा असामी हाथ लगा है।
- **मुट्ठी गरम करना** (घूस देना)– पुलिस की मुट्ठी गरम करो, तो काम होगा।
- **रंग जमना** (धाक जमना)– तुम्हारा तो कल खूब रंग जमा।
- **रंग लाना** (प्रभाव उत्पन्न करना)– यह मामला एक–न–एक दिन रंग लायेगा।
- **रंग बदलना** (परिवर्तन होना)– जमाने का रंग बदल गया है।
- **रास्ता देखना** (इन्तजार करना)– कल दुपहर मैं तुम्हारा रास्ता देखता रहा।
- **रोंगटे खड़े होना** (चकित, भयभीत होना)– वह इतनी ऊँचाई से कूदा कि हमारे रोंगटे खड़े हो गये।
- **लकीर का फकीर होना** (पुरानी प्रथा पर ही चलना)– ये अबतक लकीर के फकीर ही हैं। टेबुल पर नहीं, चौके में ही खायेंगे।
- **लोहा मानना** (श्रेष्ठ समझना)– आज दुनिया भारतीय जवानों का लोहा मानती है।
- **लेने के देने पड़ना** (लाभ के बदले हानि)– नया काम है। सोच–समझकर आगे बढ़ना। कहीं लेने के देने न पड़ जायें।
- **श्रीगणेश करना** (शुभारम्भ करना)– कोई शुभ दिन देखकर किसी शुभ कर्म का श्रीगणेश करना चाहिए।
- **सफेद झूठ** (सरासर झूठ)– यह सफेद झूठ है कि मैंने उसे गाली दी।
- **सर्द हो जाना** (डरना, मरना)– बड़ा साहसी बनता था, पर भूत का नाम सुनते ही सर्द हो गया।
- **साँप–छछूँदर की हालत** (दुविधा)– पिता अलग नाराज हैं, माँ अलग। किसे क्या कहकर मनाऊँ ? मेरी तो साँप–छछूँदर की हालत है इन दिनों।
- **समझ (अक्ल) पर पत्थर पड़ना** (बुद्धि भ्रष्ट होना)– रावण की समझ पर पत्थर पड़ा था कि भला कहनेवालों को उसने लात मारी।
- **सिक्का जमना** (प्रभाव जमना)– आज तुम्हारे भाषण का वह सिक्का जमा कि उसके बाद बाकी वक्ता जमे ही नहीं।
- **सवा सोलह आने सही** (पूरे तौर पर ठीक)– राम की सेना में हनुमान् इसलिए श्रेष्ठ माने जाते थे कि हर काम में वे ही सवा सोलह आने सही उतरते थे।
- **हाथ पैर मारना** (काफी प्रयत्न)– दारासिंह की कैंची में आने के बाद बदिये अय्यूब कितना ही हाथ–पैर मारता रहा, मगर तभी छूटा, जब पुट्ठा उखड़ने पर रेफरी ने आकर कैंची छुड़वाई।
- **हाथ के तोते उड़ना** (स्तब्ध होना)– सर्बिया पर हिटलर का आक्रमण क्या हुआ, मित्रराष्ट्रों के हाथ के तोते उड़ गये।
- **हथियार डाल देना** (हार मान लेना)– जब कुछ करते न बना तो उसने हथियार डाल दिये।
- **हाथ मलना** (पछताना)– मौका चूक जाने पर बेचारा हाथ मलता रह गया।

'आँख' पर मुहावरे

- **आँखे खुलना** (होश आना, सावधान होना)– जनजागरण से हमारे शासकों की आँखें अब खुलने लगी है।
- **आँखे चार होना** (आमने–सामने होना)– जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत हो ही जाती है।
- **आँखें मूँदना** (मर जाना)– आज सबेरे उसके पिता ने आँखें मूँद लीं।
- **आँखें चुराना** (नजर बचाना, अपने को छिपाना)– मुझे देखते ही वह आँखें चुराने लगा।
- **आँखों में खून उतरना** (अधिक क्रोध करना)– बेटे के दुष्कर्म की बात सुनकर पिता की आँखों में खून उतर आया।
- **आँखों में गड़ना** (किसी वस्तु को पाने की उत्कट लालसा)– उसकी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है।
- **आँखें फेर लेना** (उदासीन हो जाना)– मतलब निकल जाने के बाद उसने मेरी ओर से बिलकुल आँखें फेर ली हैं।
- **आँखें मारना** (इशारा करना)– उसने आँख मारकर मुझे बुलाया।
- **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)– वह बड़ों–बड़ों की आँखों में धूल झोंक सकता है।
- **आँखें बिछाना** (प्रेम से स्वागत करना)– मैंने उनके लिए अपनी आँखें बिछा दीं।
- **आँखों का काँटा होना** (शत्रु होना)– वह मेरी आँखों का काँटा हो रहा है।

The Institute

'कान' पर मुहावरे

- **कान खोलना** (सावधान करना)– मैंने उसके कान खोल दिये। अब वह किसी के चक्कर में नहीं आयेगा।
- **कान खड़े होना** (होशियार होना)– दुश्मनों के रंग–ढंग देखकर मेरे कान खड़े हो गये।
- **कान फूँकना** (दीक्षा देना, बहकाना)– मोहन के कान ऊधो ने फूँके थे, फिर उसने किसी की कुछ न सुनी।
- **कान लगाना** (ध्यान देना)– उसकी बातें कान लगाने योग्य हैं।
- **कान भरना** (पीठ–पीछे शिकायत करना)– तुम बराबर मेरे खिलाफ अफसर के कान भरते हो।
- **कान में तेल डालना** (कुछ न सुनना)– मैं कहते–कहते थक गया, पर ये कान में तेल डाले बैठे हैं।
- **कान पर जूँ न रेंगना** (ध्यान न देना, अनसुनी करना)– सरकार तो बड़ी–बड़ी बातें कहती हैं, मगर अफसरों के कान पर जूँ नहीं रेंगती।
- **कान देना** (ध्यान देना)– शिक्षकों की बातों पर कान दीजिए।

'नाक' पर मुहावरे

- **नाक कट जाना** (प्रतिष्ठा नष्ट होना)– पुत्र के कुकर्म से पिता की नाक कट गयी।
- **नाक काटना** (बदनाम करना)– भरी सभा में उसने मेरी नाक काट ली।
- **नाक–भौं चढ़ाना** (क्रोध अथवा घृणा करना)– तुम ज्यादा नाक–भौं चढ़ाओगे, तो ठीक न होगा।
- **नाक में दम करना** (परेशान करना)– शहर में कुछ गुण्डों ने लोगों की नाक में दम कर रखा है।
- **नाम का बाल होना** (अधिक प्यारा होना)– मैनेजर मुंशी की न सुनेगा तो किसी सुनेगा ? वह तो आजकल उसकी नाक का बाल बना हुआ है।
- **नाक रगड़ना** (दीनतापूर्वक प्रार्थना करना)– उसने मालिक के सामने बहुत नाक रगड़ी, पर सुनवाई न हुई।
- **नाकों चने चबवाना** (तंग करना)– भारतीयों ने अंग्रेजों को नाकों चने चबवा दिये।
- **नाक पर मक्खी न बैठने देना** (निर्दोष बचे रहना)– उसने कभी नाक पर मक्खी बैठने ही न दी।
- **नाक पर गुस्सा** (तुरत क्रोध)– गुस्सा तो उसकी नाक पर रहता है।

'मुँह' पर मुहावरे

- **मुँह छिपाना** (लज्जित होना)– वह मुझसे मुँह छिपाये बैठा है।
- **मुँह पकड़ना** (बोलने से रोकना)– लोकतन्त्र में कोई किसी का मुँह नहीं पकड़ सकता।
- **मुँह की खाना** (बुरी तरह हारना)– अन्त में उसे मुँह की खानी पड़ी।
- **मुँह दिखाना** (प्रत्यक्ष होना)– तुमने ऐसा कुकर्म किया है कि अब किसी के सामने मुँह दिखाने के लायक न रहे।
- **मुँह उतरना** (उदास होना)– परीक्षा में असफल होने पर श्याम का मुँह उतर आया।

'दाँत' पर मुहावरे

- **दाँत दिखाना** (खीस काढ़ना)– खुद ही देर की और अब दाँत दिखाते हो।
- **दाँत तले उँगली दबाना** (चकित होना)– ढाके की मलमल देखकर इंगलैण्ड के जुलाहे दाँतों तले उँगली दबाते थे।
- **दाँत काटी रोटी** (गहरी दोस्ती)– राम के पिता से श्याम के पिता की दाँत काटी रोटी है।
- **दाँत गिनना** (उम्र पता लगाना)– कुछ लोग ऐसे हैं कि उन पर वृद्धावस्था का असर ही नहीं होता। ऐसे लोगों के दाँत गिनना आसान नहीं।

'बात' पर मुहावरे

- **बात का धनी** (वायदे का पक्का)– मैं जानता हूँ, वह बात का धनी है।
- **बात की बात में** (अति शीघ्र)– बात की बात में वह चलता बना।
- **बात चलाना** (चर्चा चलाना)– कृपया मेरी बेटी के ब्याह की बात चलाइएगा।
- **बात तक न पूछना** (निरादर करना)– मैं विवाह के अवसर पर उसके यहाँ गया, पर उसने बात तक न पूछी।
- **बात बढ़ाना** (बहस छिड़ जाना)– देखो, बात बढ़ाओगे तो ठीक न होगा।
- **बात बनाना** (बहाना करना)– तुम्हें बात बनाने से फुर्सत कहाँ ?

'सिर' पर मुहावरे

- **सिर उठाना** (विरोध में खड़ा होना)– देखता हूँ, मेरे सामने कौन सिर उठाता है ?
- **सिर भारी होना** (सिर में दर्द होना, शामत सवार होना)– मेरा सिर भारी हो रहा है। किसका सिर भारी हुआ है जो इसकी चर्चा करे ?
- **सिर पर सवार होना** (पीछे पड़ना)– तुम कब तक मेरे सिर पर सवार रहोगे ?
- **सिर से पैर तक** (आदि से अन्त तक)– तुम्हारी जिन्दगी सिर से पैर तक बुराइयों से भरी है।
- **सिर पीटना** (शोक करना)– चोर उस बेचारे की पाई–पाई ले गये। सिर पीटकर रह गया वह।
- **सिर पर भूत सवार होना** (एक ही रट लगाना, धुन सवार होना)– मालूम होता है कि घनश्याम के सिर पर भूत सवार हो गया है, जो वह जी–जान से इस काम में लगा है।
- **सिर फिर जाना** (पागल हो जाना)– धन पाकर उसका सिर फिर गया है।
- **सिर चढ़ाना** (शोख करना)– बच्चों को सिर चढ़ाना ठीक नहीं।

'गर्दन' पर मुहावरे

- **गर्दन उठाना** (प्रतिवाद करना)– सत्तारूढ़ सरकार के विरोध में गर्दन उठाना टेढ़ी खीर है।
- **गर्दन पर सवार होना** (पीछा न छोड़ना)– जब देखो, तब मेरी गर्दन पर सवार रहते हो।
- **गर्दन काटना** (जान से मारना, हानि पहुँचाना)– वह तो उनकी गर्दन काट डालेगा। झूठी शिकायत कर क्यों गरीब की गर्दन काटने पर तुले हो ?

लोकोक्तियाँ (कहावतें)

लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है। उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब 'लोकोक्ति' हो जाती है। कुछ लोकोक्तियों का प्रयोग आगे दिया जा रहा है।

- **अन्धों में काना राजा** (मूर्खों में कुछ पढ़ा–लिखा व्यक्ति)– मेरे गाँव में कोई पढ़ा–लिखा व्यक्ति तो है नहीं; इसीलिए गाँववाले पण्डित अनोखेराम को ही सब कुछ समझते हैं। ठीक ही कहा गया है, अन्धों में काना राजा।
- **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (अकेला आदमी लाचार होता है)– माना कि तुम बलवान् ही नहीं, बहादुर भी हो, पर अकेले डकैतों का सामना नहीं कर सकते। तुमने सुना ही होगा कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।
- **अधजल गगरी छलकत जाय** (डींग हाँकना)– इसके दो–चार लेख क्या छप गये कि वह अपने को साहित्य–सिरमौर समझने लगा हैं ठीक ही कहा गया है, 'अधजल गगरी छलकत जाय।'
- **आँख का अन्धा नाम नयनसुख** (गुण के विरुद्ध नाम होना)– एक मियाँजी का नाम था शेरमार खाँ। वे अपने दोस्तों से गप मार रहे थे। इतने में घर के भीतर बिल्लियाँ म्याऊँ–म्याऊँ करती हुई लड़ पड़ीं। सुनते ही शेरमार खाँ थर–थर काँपने लगे। यह देख एक दोस्त ठठाकर हँस पड़ा और बोला कि वाह जी शेरमार खाँ, आपके लिए तो यह कहावत बहुत ठीक है कि आँख का अन्धा नाम नयनसुख।
- **आँख के अन्धे गाँठ के पूरे** (मूर्ख धनवान्)– वकीलों की आमदनी के क्या कहने ! उन्हें आँख के अन्धे गाँठ के पूरे रोज ही मिल जाते हैं।
- **आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकले सो लाभ** (नुकसान होते–होते जो कुछ बच जाय, वहीं बहुत है)– किसी के घर चोरी हुई। चोर नकद और जेवर कुल उठा ले गये। बरतनों पर जब हाथ साफ करने लगे, तब उनकी झनझनाहट सुनकर घर के लोग जाग उठे। देखा तो कीमती माल सब गायब। घर के मालिकों ने बरतनों पर आँखें डालकर अफसोस करते हुए कहा कि खैर हुई, जो ये बरतन बच गये। 'आग लगन्ते झोपड़ा, जो किले सो लाभ'। यदि ये भी चले गये होते, तो कल पत्तें पर ही खाना पड़ता।
- **आगे नाथ न पीछे पगहा** (किसी तरह की जिम्मेवारी का न होना)– अरे, तुम चक्कर न मारोगे तो और कौन मारेगा ? आगे नाथ न पीछे पगहा। बस, मौज किये जाओ।
- **आम के आम गुठलियों के दाम** (अधिक लाभ)– सब प्रकार की पुस्तकें 'साहित्य भवन' से खरीदें और पास होने पर आधे दामों पर बेचें। 'आम के आम गुठलियों के दाम' इसी को कहते हैं।
- **ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डर** (काम करने पर उतारू होना)– जब मैंने देशसेवा का व्रत ले लिया, तब जेल जाने से क्यों डरें ? जब ओखली में सिर दिया, तब मूसलों से क्या डर।
- **ऊँची दुकान फीके पकवान** (केवल बाह्य प्रदर्शन)– जग्गू तेली शुद्ध सरसों तेल का विज्ञापन करता है, लेकिन उसकी दूकान पर बिकता है रेपसीड–मिला सरसों तेल। ठीक है ऊँची दुकान फीके पकवान।
- **एक पन्थ दो काज** (एक काम से दूसरा काम हो जाना)– दिल्ली जाने से एक पन्थ दो काज होंगे। कवि–सम्मेलन में कविता–पाठ भी करेंगे और साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को भी देखेंगे।
- **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली** (उच्च और साधारण की तुलना कैसी)– तुम सेठ करोड़ीमल के बेटे हो। मैं एक मजदूर का बेटा। तुम्हारा हमारा और मेरा मेल कैसा ? कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली।
- **घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध** (निकट का गुणी व्यक्ति कम सम्मान पाता है, पर दूर का ज्यादा)– जग्गू को लोग जगुआ कहकर पुकारते थे। घर त्यागकर सिद्ध पुरुष की संगति में रहकर उसने सिद्धि प्राप्त कर ली ओर उसका नाम हो गया– स्वामी जगदानन्द। गाँव लौटा, तो किसी ने उसके गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया। ठीक ही कहा गया है : 'घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध।'
- **चिराग तले अन्धेरा** (अपनी बुराई नहीं दीखती)– मेरे समधी सुरेश प्रसादजी तो तिलक–दहेज न लेने का उपदेश देते फिरते हैं, पर अपने बेटे के ब्याह में दहेज के लिए ठाने हुए हैं। उनके लिए यही कहावत लागू है कि 'चिराग तले अँधेरा'।
- **जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ** (परिश्रम का फल अवश्य मिलता है)– एक लड़का, जो बड़ा आलसी था, बार–बार फेल करता था और दूसरा, जो परिश्रमी था, पहली बार परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। जब आलसी ने उससे पूछा कि भाई, तुम कैसे एक ही बार में पास कर गये, तब उसने जवाब दिया कि 'जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ'।
- **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** (काम न जानना और बहाना बनाना)– सुधा से गाने के लिए कहा, तो उसने कहा–साज ही ठीक नहीं, गाऊँ क्या ? कहा है : 'नाच न जाने आँगन टेढ़।'
- **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (न कारण होगा, न कार्य होगा)– सेठ माणिकचन्द के घर रोज लड़ाई–झगड़ा हुआ करता था। इस झगड़े की जड़ में था एक नौकर। वही इधर की बात उधर किया करता था। यह बात सेठ को मालूम हो गयी। उन्होंने उसे निकाल दिया। बहुतों ने उसकी ओर से सिफारिश की तो सेठ ने कहा– 'नहीं, वह झगड़ा लगाता है। 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।'
- **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** (होनहार के लक्षण पहले से ही दिखायी पड़ने लगते हैं)– वह लड़का जैसा सुन्दर है, वैसा ही सुशील, अशैर जैसा बुद्धिमान है, वैसा ही चंचल। अभी बारह वर्ष भी पूरे नहीं हुए, पर भाषा और गणित में उसकी अच्छी पैठ है। अभी देखने पर स्पष्ट मालूम होता है कि समय पर वह सुप्रसिद्ध विद्वान् होगा। कहावत भी है, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'।

****